शुक्ल पक्ष, 23 वर्ष, अंक 57 पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शनिवार 23 मार्च 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

सीबीएसई ने डमी छात्रों का नामांकन करने वाले 20 स्कूलों की मान्यता रद्द की

नई दिल्ली

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने डमी छात्रों का नामांकन करने वाले 20 स्कूलों की मान्यता रद्द कर दी है। इनमें दिल्ली के पांच स्कूल भी शामिल हैं। सीबीएसई के सचिव हिमांशु गुप्ता ने शुक्रवार को कहा कि देश भर के सीबीएसई स्कूलों में यह जांचने के लिए औचक निरीक्षण किया गया कि क्या स्कूल संबद्धता और परीक्षा उपनियमों में निहित प्रावधानों और मानदंडों के अनुसार चल रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस दौरान पाया गया कि कुछ स्कूल डमी छात्रों, अयोग्य उम्मीदवारों को पेश करने और रिकॉर्ड ठीक से नहीं रखने जैसे विभिन्न कदाचार कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पूरी जांच के बाद 20 स्कूलों की मान्यता रद्द करने और तीन स्कूलों की रेटिंग डाउनग्रेड करने का फैसला किया गया है। ऐसे स्कूलों में से पांच दिल्ली में, तीन उत्तर प्रदेश में, दो-दो केरल, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र में और एक-एक जम्मू-कश्मीर, देहरादून, असम और मध्य प्रदेश में हैं। डाउनग्रेड किए गए स्कूल दिल्ली, पंजाब और असम में हैं।

एयर इंडिया पर डीजीसीए ने 80 लाख रुपये का लगाया जुर्माना

नई दिल्ली

नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने टाटा समूह की अगुवाई वाली एयरलाइन एयर इंडिया पर 80 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया है। डीजीसीए ने उड़ान के वक्त नियमों का उल्लंघन करने पर यह कार्रवाई की है। विमान नियामक डीजीसीए ने शुक्रवार को जारी एक बयान में कहा कि एयर इंडिया पर 80 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया गया है। यह जुमार्ना उड़ान सेवा अवधि सीमित करने और चालक दल के लिए थकान प्रबंधन प्रणाली से संबंधित मानदंडों का उल्लंघन करने के लिए लगाया गया। एयरलाइन पर यह कार्रवाई जनवरी के ऑडिट में हुए कई खुलासों के बाद की गई है। विमानन नियामक डीजीसीए ने जनवरी में एयर इंडिया का स्पॉट ऑडिट किए थे जिसकी चालक दल के लिए अल्ट्रा-लंबी दूरी की उड़ानों से पहले और बाद में जरूरी आराम न देने, लेओवर के दौरान जरूरी आराम न देने का मामला सामने आया था। रिपोर्टों और सबूतों के विश्लेषण से पता चला कि एयर इंडिया ने कुछ मामलों में 60 साल से अधिक उम्र के दोनों चालक दल के सदस्यों के साथ उड़ान भरी थी।

केजरीवाल ही हैं शराब नीति केस में सरगना: ईडी

अरविंद केजरीवाल को 28 मार्च तक ईडी की हिरासत में भेजा गया

नई दिल्ली

दिल्ली के राऊज एवेन्यू कोर्ट ने दिल्ली आबकारी घोटाला मामले में गिरफ्तार दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को 28 मार्च तक की ईडी हिरासत में भेज दिया है। स्पेशल जज कावेरी बावेजा की कोर्ट ने ये आदेश दिया। ईडी ने केजरीवाल को दस दिनों की हिरासत की मांग की थी। ईडी की ओर से पेश एएसजी एसवी राजू ने कहा कि अरविंद केजरीवाल शराब नीति घोटाले के मुख्य साजिशकर्ता हैं। ईडी को केजरीवाल के घर पर छापेमारी में कई अहम दस्तावेज मिले हैं। इन दस्तावेज से पता चला है कि केजरीवाल ईडी अधिकारियों की जासूसी कर रहे थे। राजू ने कहा कि विजय नायर केजरीवाल के पास दिल्ली सरकार के मंत्री कैलाश गहलोत को दिए गए घर में रह रहे थे। नायर ने साउथ ग्रुप और आम आदमी पार्टी के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाई। अरविंद केजरीवाल ने साउथ ग्रुप से रिश्वत मांगी थी। इस बात की पुष्टि बयानों से होती है। केजरीवाल ने के. कविता से भी मुलाकात की थी। राजू ने कहा कि अरविंद केजरीवाल आम आदमी पार्टी की प्रमुख गतिविधियों को संचालित करते हैं। वे पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक हैं। उन्होंने कहा कि आबकारी नीति को आम आदमी पार्टी के गोवा चुनाव में फंडिंग के लिए बदला गया। राजू ने कहा कि पैसे के लेन-देन की पूरी पड़ताल के लिए अरविंद केजरीवाल को दूसरे आरोपितों के सामने बैठाकर पूछताछ करनी है। उन्होंने कहा कि आबकारी घोटाला मामले में इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्यों को मिटाया गया है। कई फोन नष्ट किए गए या फॉर्मेट किए गए ताकि जांच में परेशानी हो। राजू ने कहा कि अरविंद केजरीवाल समन के पहले गिरफ्तार नहीं किए गए हैं। उन्होंने कहा कि कब किसको गिरफ्तार करना है, ये जांच अधिकारी के दायरे में आता है। ऐसा कुछ भी नहीं है कि अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी मनी लांड्रिंग एक्ट की धारा 19 के प्रावधानों का उल्लंघन करके की गई है। केजरीवाल की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि हिरासत स्वतः नहीं होती।

केजरीवाल की गिरफ्तारी अपने कर्मों की वजह हुई है: अन्ना हजारे

कार्यकर्ता अन्ना हजारे का कहना है, "मैं इस बात से बहुत परेशान हूं कि अरविंद केजरीवाल, जो मेरे साथ काम करते थे, शराब के खिलाफ आवाज उठाते थे, अब शराब नीतियां बना रहे हैं। अपने ही कर्मों की वजह से उनकी गिरफ्तारी इसलिए हुई है।" उल्लेखनीय है कि अन्ना हजारे एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने, सरकारी पारदर्शिता बढ़ाने और सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार की जांच करने और दंडित करने के लिए आंदोलनों का नेतृत्व किया।

नई दिल्ली

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी पर सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे ने शुक्रवार की सुबह तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। अन्ना हजारे इन दिनों अहमद नगर (महाराष्ट्र) में हैं। उन्होंने मीडिया से बातचीत में कहा कि अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी अपने कर्मों की वजह हुई है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार करने पर सामाजिक

तीन बार चुने हुए मुख्यमंत्री को पीएम मोदी ने सत्ता के अहंकार में गिरफ्तार करवाया: सुनीता केजरीवाल

नई दिल्ली

दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल को ईडी ने मनी लॉन्ड्रिंग केस में दो घंटे की पूछताछ के बाद गुरुवार रात गिरफ्तार कर लिया। उन्हें राऊज एवेन्यू कोर्ट में पेश किया गया। इस गिरफ्तारी के विरोध में आम आदमी पार्टी ने देश भर में प्रदर्शन किया। वहीं आप के कई नेताओं ने केजरीवाल के परिजनों से न मिलने की बात कही। वहीं अब सीएम केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट किया- आपके तीन बार चुने हुए मुख्यमंत्री को मोदीजी ने सत्ता के अहंकार में गिरफ्तार करवाया। सबको खत्म करने में लगे हैं। यह दिल्ली के लोगों के साथ धोखा है। आपके मुख्यमंत्री हमेशा आपके साथ खड़े रहें हैं। अंदर रहें या बाहर, उनका जीवन देश को समर्पित है। जनता जनार्दन है सब जानती है।

कैलाश गहलोत ने की सीएम के परिवार से मुलाकात

वहीं आप नेता कैलाश गहलोत ने कहा- हम काफी देर बाद अरविंद केजरीवाल के परिवार से मिले। हम शुरू से ही कह रहे हैं कि यह मामला झूठा है और इसका एकमात्र मकसद अरविंद केजरीवाल को रोकना है। ईडी ने अब तक क्या बरामदगी की है? पार्टी का रुख है कि सीएम को इस्तीफा नहीं देना चाहिए।

इसरो का 'पुष्पक' सफल, स्पेस मिशन की लागत 10 गुना कम होगी

नई दिल्ली

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का शुक्रवार को सुबह लॉन्च व्हीकल पुष्पक का परीक्षण पूरी तरह कामयाब रहा। पुष्पक को भारतीय वायु सेना के चिनूक हेलीकॉप्टर ने 4.5 किमी. की ऊंचाई से हवा में छोड़ा। इसरो का यह शटल बार-बार अंतरिक्ष में जाकर सुरक्षित धरती पर लौट सकता है। कर्नाटक के चित्रदुर्ग स्थित एयरोनॉटिकल टेस्ट रेंज (एटीआर) में रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल ने खुद ही आधा घंटे बाद जमीन पर लैंड किया। इसरो ने एक बयान में बताया कि इस रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल ऑटोनॉमस लैंडिंग मिशन को आज सुबह 7 बजकर 10 मिनट पर कर्नाटक के चित्रदुर्ग के एटीआर से संचालित किया गया। आरएलवी लेक्स-2 को भारतीय वायुसेना के चिनूक हेलीकॉप्टर से 4.5 किलोमीटर की ऊंचाई पर ले जाकर 4.6 किलोमीटर की ऊंचाई पर छोड़ा गया। इसके बाद रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल ने धीमी गति से उड़ान भरी। इसके कुछ देर बाद उसने लैंडिंग गियर के साथ खुद ही एटीआर में 7.40 बजे लैंड किया। यह परीक्षण सफल होने के बाद रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल के सहारे रॉकेट को दोबारा लॉन्च किया जा सकता है।

पीएम मोदी भूटान को सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'ऑर्डर ऑफ द ड्रुक ग्यालपो' से किया सम्मानित

थिंपू

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शुक्रवार को भूटान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ऑर्डर ऑफ द ड्रुक ग्यालपो से सम्मानित हुए। उन्होंने सम्मान के प्रति आभार प्रगट करते हुए इसे 140 करोड़ भारतीयों को समर्पित किया। दो दिवसीय यात्रा पर शुक्रवार को भूटान पहुंचे प्रधानमंत्री ने सम्मान के बाद उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया। प्रधानमंत्री ने कहा, ये सम्मान मेरी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, ये भारत और 140 करोड़ भारतीयों का सम्मान है। भूटान की इस महान भूमि पर मैं सभी भारतवासियों की ओर से ये सम्मान नम्रता से स्वीकार करता हूं। इस सम्मान के लिए आप सभी का हृदय से कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूं। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत-भूटान की साझेदारी केवल जमीन और पानी तक ही सीमित नहीं रही है। भूटान अब अपने अंतरिक्ष अभियानों में भारत का भागीदार है। भूटान के वैज्ञानिकों ने इसरो के साथ मिलकर सैटेलाइट लॉन्च किया है। उन्होंने कहा कि भारत और भूटान के युवाओं की आकांक्षाएं एक जैसी हैं। भारत ने 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने का निर्णय लिया है। भूटान ने 2034 तक उच्च आय देश बनने का फैसला किया है। भूटान को उसके लक्ष्यों को पाने में सहयोग का आश्वासन देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत बीबी - ब्रांड भूटान और भूटान बिलीव के लिए आपके साथ खड़ा है। आने वाले 5 साल हमारे संबंधों को एक नई ऊर्जा देंगे।

चुनाव आयोग से मिला विपक्षी दलों का प्रतिनिधिमंडल, जांच एजेंसियों की कार्रवाई का उठाया मुद्दा

नई दिल्ली

विपक्षी दलों के एक प्रतिनिधिमंडल ने शुक्रवार को चुनाव आयोग से मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने देश में केंद्रीय जांच एजेंसियों के कामकाज के तौर तरीके को लेकर आयोग के समक्ष अपनी बात रखी। प्रतिनिधिमंडल में कांग्रेस, वामदल, तृणमूल, आप, द्रमुक और अन्य पार्टियों के प्रतिनिधि थे। प्रतिनिधिमंडल में शामिल कांग्रेस नेता अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि चुनाव के लिए लेवल प्लेयिंग फील्ड की जरूरत होती है। ऐसे समय में एजेंसियों का दुरुपयोग किया जाता है। इसका असर स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव और अंततः लोकतंत्र पर पड़ता है। प्रतिनिधिमंडल ने इस मामले में चुनाव आयोग से हस्तक्षेप की मांग की है। प्रतिनिधिमंडल ने मांग की है कि आगे की छापेमारी, जांच और गिरफ्तारी से पहले आयोग या उसके तहत गठित समिति जांच और अनुमोदन दे। उन सभी व्यक्तियों और अधिकारियों के खिलाफ जांच शुरू हो और तत्काल कार्रवाई हो, जिन्होंने विपक्ष के नेताओं को परेशान करने के लिए अपने पद का दुरुपयोग किया है। समान अवसर के संवैधानिक आदेश को सुनिश्चित करने और सत्ता में मौजूद राजनीतिक दलों को लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुनाव लड़ने वाले नेताओं और राजनीतिक दलों के खिलाफ राज्य मशीनरी का दुरुपयोग करने से रोकने के लिए जो भी आवश्यक कोई अन्य कदम हों, वो उठाएं जायें। सिंघवी ने कहा कि हमने चुनाव आयोग के साथ दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल की गिरफ्तारी पर विस्तृत चर्चा की है।

केजरीवाल का जेल से सरकार चलाना, दिल्ली के लोगों, कानून और लोकतंत्र का अपमान: अनुराग

नई दिल्ली

केन्द्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि प्रवर्तन निदेशालय(ईडी) द्वारा दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार करने के बाद उन्हें नैतिक आधार पर इस्तीफा दे देना चाहिए। लेकिन अरविंद केजरीवाल जेल से सरकार चलाने की बात कह रहे हैं, वह दिल्ली के लोगों, कानून और लोकतंत्र का अपमान है। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि एक राजनीतिक दल जो कांग्रेस के भ्रष्टाचार के बारे में बोलता था और सोनिया गांधी की गिरफ्तारी की मांग करता था, उसने 9 समन के बाद भी ईडी के सामने पेश होने से इनकार कर दिया । शुक्रवार को मीडिया से बातचीत में अनुराग ठाकुर ने कहा कि अरविंद केजरीवाल करोड़ों रुपये का घोटाला करते हैं और घर में बैठकर भ्रष्ट नेताओं को ईमानदारी का सर्टिफिकेट दे रहे हैं। सबसे बड़े भ्रष्टाचारी से अब जानना पड़ेगा कि कौन ईमानदार है और कौन बेईमान है?

केजरीवाल को मुख्यमंत्री पद से हटाने के लिए दिल्ली हाई कोर्ट में याचिका

नई दिल्ली

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटाने की मांग करते हुए दिल्ली हाई कोर्ट में एक याचिका दायर की गई है। याचिका सुरजीत सिंह यादव ने दायर की है।

याचिका में कहा गया है कि केजरीवाल आर्थिक भ्रष्टाचार के मामले में गिरफ्तार किए गए हैं। उन्हें सार्वजनिक पद पर नहीं रखा जाना चाहिए। केजरीवाल गोपनीयता की शपथ लेते हुए मुख्यमंत्री बने हैं। अगर वे जेल से शासन चलाते हैं और अगर कोई फाइल उनके पास जाती है तो वो कई जेल अधिकारियों से होकर गुजरेगी, जो उनकी गोपनीयता की शपथ का उल्लंघन होगा। याचिका में कहा गया है कि केजरीवाल ने संवैधानिक नैतिकता का उल्लंघन किया है और उन्हें खुद ही इस्तीफा देना चाहिए। केजरीवाल का पद पर बने रहना न केवल कानून के शासन में बाधा होगी।

केजरीवाल को ईडी ने अरेस्ट किया तो विपक्ष समर्थन में उतरा

नई दिल्ली

दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल को ईडी ने अरेस्ट किया तो उम्मीद के अनुरूप पूरा विपक्ष उनके समर्थन में आ गया। अब विपक्ष इस मुद्दे को आम चुनाव में जनता के बीच उठाएगा कि केंद्र सरकार विपक्ष को परेशान कर रही है। हाल के दिनों में केजरीवाल के अलावा झारखंड के पूर्व सीएम हेमंत सोरेन को भी अरेस्ट किया। इसके अलावा कई दूसरे नेताओं पर जांच एजेंसी की आंच है। विपक्ष आरोप लगा रहा है कि सरकार के निशाने पर जांच एजेंसियां उनके नेताओं और संसाधनों पर हमला कर रही हैं। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म एक्स पर लिखा है कि चुनाव के चलते दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को इस तरह टारगेट करना एकदम गलत और असंवैधानिक है। राजनीति का स्तर इस तरह से गिराना नहीं प्रधानमंत्री को शोभा देता है, न उनकी सरकार को। प्रियंका गांधी केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहती हैं कि अपने आलोचकों से चुनावी रणभूमि में उतर कर लड़िए, उनका डटकर मुकाबला करिए, उनकी नीतियों और कार्यशैली पर बेशक हमला करिए। यही लोकतंत्र होता है। मगर इस तरह देश की सारी संस्थाओं की ताकत का अपने राजनीतिक मकसद को पूरा करने के लिए इस्तेमाल करना, दबाव डालकर उन्हें कमजोर करना लोकतंत्र के हर उसूल के खिलाफ है। एआईएडीएमके के प्रवक्ता कोवई सथयान ने सरकार को घेरते हुए कहा कि ये गिरफ्तारी दिखाती है कि बीजेपी का तीन पॉइंट एजेंडा है। पहला, जो भी बीजेपी का विरोध करेगा, उसे जेल की सलाखों के पीछे से ऐसा करना होगा। दूसरा, जो भी बीजेपी का विरोध करेगा, उसके फंड खत्म कर दिए जाएंगे और वह अपनी पार्टी के फंड का इस्तेमाल नहीं कर पाएगा। तीसरा, जो भी बेल पर जेल से बाहर है, बीजेपी उसके साथ गठबंधन करने में हिचकेगी नहीं।

टीएमसी बोली, विपक्ष को तंग किया जा रहा है

टीएमसी की ओर से डेरेक ओ ब्रायन ने इस गिरफ्तारी की कड़ी आलोचना करते हुए कहा है कि चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो गई है और अब सारे राजनीतिक दलों के प्रमुख, मुख्यमंत्री, पॉलिटिकल नेता, इलेक्शन एजेंट्स, कार्यकर्ता और हर विपक्षी को तंग किया जा रहा है और गिरफ्तार किया जा रहा है। हमारे इस लोकतंत्र का क्या भविष्य होगा? अपने सुप्रीमो हेमंत सोरेन पर ऐसी ही कार्यवाही देख चुकी झारखंड मुक्ति मोर्चा की महुआ माझी ने भी कहा कि जहां-जहां गैर बीजेपी सरकार है, उन्हीं सब राज्यों के साथ ऐसा हो रहा है। दरअसल हाल के समय में आए आंकड़ों का हवाला देकर विपक्ष इन जांच एजेंसियों पर सवाल उठा रही है। पिछले दिनों आए आंकड़ों के अनुसार साल 2014 से 2022 के बीच 121 बड़े राजनेताओं से जुड़े मामलों की जांच ईडी कर रही है, इनमें से 115 नेता विपक्षी पार्टियों से हैं।

सेरेब्रल पाल्सी पीड़ित बच्चों ने खेली फूलों की होली

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कर्नलगंज इंटर कॉलेज के मैदान में आज शुक्रवार को सेरेब्रल पाल्सी से पीड़ित बच्चों ने फूलों की होली खेली। त्रिशला फाउंडेशन की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में दिव्यांग बच्चों के लिए मंच बनाया गया था और इन बच्चों को यहां बुलाया गया, फूलों की बौछार की गई। होली के गीतों पर यह बच्चे मस्ती करते दिखे। यहां नेपाल, बांग्लादेश व दक्षिण अफ्रिका के बच्चे व उनके मां-बाप मेहमान के रूप में मौजूद रहे।मुख्य अतिथि के रूप में यहां जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. वीके सिंह मौजूद रहे, उन्होंने हौसला बढ़ाया। त्रिशला फांडेशन के अध्यक्ष डॉ. जितेंद्र कुमार जैन व सचिव डॉ. वारिदमाला जैन ने सभी के प्रति आभार जताया।

किन्नरों ने भी खेली होली :

प्रयागराज के बैरहना में किन्नरों ने भी फूलों की होली खेली। किन्नर अखाड़े की महामंडलेश्वर कौशल्या नंद गिरि की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में फूलों की वर्षा की गई। यहां किन्नरों ने होली गीतों पर ठुमके भी लगाए। महामंडलेश्वर कौशल्या नंद ने कहा कि होली आपसी भाईचारे का पर्व है, इसे मिल जुलकर मनाएं। उन्होंने कहा, होली के दिन किसी तरह के नशे का सेवन ना करें क्योंकि इससे स्वास्थ्य के साथ-साथ होली भी फीकी पड़ सकती है।

आधुनिक कार्टून वाली पिचकारी एवं भगवा रंग गुलाल बाजार का रहा आकर्षण

सहसों। आपसी भाईचारा व प्रेम भरा रंगो का पवित्र त्यौहार होली पर बाजारों में तरह तरह की पिचकारी, भगवा गुलाल, रंग बिरंगी टोपियों के अतिरिक्त कई तरह के मुखोटे लोगों को काफी आकर्षित कर रहे हैं। जैसे-जैसे होली का त्यौहार नजदीक आ रहा है वैसे-वैसे परचून की दुकान सहित होली के सामानों की बिक्री व खरीददारों की बाजारों में भीड़ बढ़ गई है। सहसों बाजार में दुकानदार सेठ सोहनलाल केसरवानी ने बताया कि इस बार भगवा रंग के गुलाल की मांग ज्यादा हो रही है। दुकानदार राहुल गुप्ता, विनय केसरवानी ने बताया वैसे सामान्य रूप से पुरानी पाइप वाली पिचकारियां तो है ही परंतु इस बार तरह-तरह की आकारों वाली पिचकारियां लोगों को आकर्षित कर रही हैं। दुकानो पर बिक्री के लिए टैंक, मिसाइल, बंदूक, कार्टून, स्पाइडर मैन,मछली सहित कई आकृति वाली पिचकारी लोगों को लुभा रही हैं। इसके अलावा इस बार राजस्थानी पगड़ी, मराठी पगड़ी एवं पंख टोपी एवं विभिन्न आकार के मुखौटे लोगों को आकर्षित कर रहे हैं। दुकानदार हर्ष केसरवानी, राजकुमार आदि का कहना है कि इस त्यौहार पर अच्छा तो नहीं परंतु संतोष जनक व्यवसाय होने की उम्मीद है।

प्रमुख सचिव उच्च शिक्षा एमपी अग्रवाल बनाए गए सेवा चयन आयोग के कार्यवाहक अध्यक्ष

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रमुख सचिव उच्च शिक्षा एमपी अग्रवाल उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग के कार्यवाहक अध्यक्ष होंगे। शासन की ओर से इस बाबत आदेश जारी कर दिया गया है। ऐसे में शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया में तेजी आएगी।नवगठित शिक्षा सेवा चयन आयोग में 12 सदस्यों की नियुक्ति पहले ही की जा चुकी है। पिछले शुक्रवार को सभी ने लखनऊ में प्रमुख सचिव के समक्ष कार्यभार भी संभाला था। इनमें से नौ सदस्यों ने प्रयागराज स्थित आयोग कार्यालय पहुंचकर भी कार्यभार संभाल लिया है। रोहितांश सिंह एवं विमल कुमार विश्वकर्मा ने शुक्रवार को ही कार्यभार संभाला। इस तरह से अब सिर्फ कीर्ति गौतम, योगेंद्र नाथ सिंह कार्यालय नहीं पहुंचे हैं। हालांकि अध्यक्ष की नियुक्ति नहीं होने से सदस्यों के कार्यभार संभाल लेने के बावजूद भर्ती प्रक्रिया शुरू करने को लेकर गतिरोध बना हुआ था। अब शासन की ओर से कार्यवाहक अध्यक्ष की नियुक्ति कर दी गई है। नए अध्यक्ष की नियुक्ति तक प्रमुख सचिव उच्च शिक्षा इस पद की जिम्मेदारी संभालेंगे। ऐसे में शासन के इस आदेश के बाद आयोग में हर तरह का गतिरोध दूर हो गया है। बताया जा रहा है कि अध्यक्ष जल्द ही सभी सदस्यों संग बैठक करेंगे। बैठक में बेसिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा में शिक्षकों की भर्ती के लिए पूर्व में विज्ञापित पदों का ब्योरा एकत्रित करने के साथ नए सिरे से नियुक्ति प्रक्रिया शुरू करने पर चर्चा होगी। आयोग का आचार संहिता खत्म होने के तत्काल बाद इन पदों के लिए भर्ती शुरू करने की तैयारी है। ऐसे में बैठक में तब तक अन्य औपचारिकताएं पूरी किए जाने पर चर्चा होगी।

गिरधरपुर गोदाम पर 120 बोरी सरकारी चावल की हुई खरीद, जिम्मेदार अधिकारी मौन!

अखंड भारत संदेश

बेरी से चलकर देवकुंड नाथ मंदिर कोरांव मुख्य मार्ग से होकर गिरधरपुर गल्ला गोदाम पर पहुंचा

मांडा। सरकार गरीबों को जहां मुफ्त में राशन दे रही है वहीं क्षेत्र के बिचौलिया गल्ला के खरीददारी करने वाले मोटी रकम देकर सरकारी राशन की दुकान से खरीद ले रहे हैं। जिससे कार्ड धारकों को उचित राशन नहीं मिल पा रहा है। शुक्रवार को शाम लगभग पांच बजे मांडा क्षेत्र के बेरी गांव से प्लास्टिक की बोरी में सरकारी चावल 120 बोरी लादकर कोरांव मुख्य मार्ग देवकुंड नाथ मंदिर से होकर गिरधरपुर गल्ला गोदाम पर जा रहा था कि रास्ते में सरकारी राशन से सम्बंधित कर्मचारी ने पकड़ लिया और उस व्यापारी को अवैध धंधा करने की बात कही तो उसने कुछ रुपए का प्रलोभन देकर छोड़ने की सिफारिश किया। लेकिन कर्मचारी ने दस हजार रुपए की मांग की तो व्यापारी ने उसे पांच हजार रुपए देने की बात कही। पांच हजार रूपए से बात नही बनी तो व्यापारी ने तत्काल गल्ला गोदाम संचालक को फोन पर सूचना देकर बुलाया और वह सात हजार रुपए में मामला को सुलझाया। प्लास्टिक की बोरी में लदा 120 बोरी चावल गिरधरपुर गल्ला गोदाम संचालक द्वारा ही खरीद लिया गया। और वह व्यापारी वाहन पर लदा सरकारी चावल को छोड़ कर भाग गया। गिरधरपुर गोदाम पर चावल उतर जाने पर व्यापारी ने गोदाम संचालक को फोन कर जानकारी लेने के बाद राहत की सांस ली और घर के लिए वापस लौट गया। जब तक गोदाम पर चावल नहीं उतारा गया तब तक व्यापारी डरा सहमा हुआ दूर जाकर छिपा रहा। सरकारी राशन की दुकान से ही परिषदीय विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन व गरीबों को मुफ्त में राशन सरकार द्वारा दिया जा रहा है। वहीं बच्चों के मध्यान्ह भोजन व गरीबों को राशन न देकर व्यापारियों से मोटी रकम लेकर सरकारी गल्ला बेच दिया जाता है। सूत्रों द्वारा बताया जाता है कि यह तीन माह पहले से सरकारी चावल को इकट्ठा किया गया था और मौका पाकर बेचा गया। जिम्मेदार अधिकारी मौन धारण किए हुए हैं।

विश्व जल दिवस : 'शांति के लिए जल' पर आयोजित हुआ संगोष्ठी कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिला गंगा समिति प्रयागराज के अतंर्गत वन विभाग द्वारा आज विश्व जल दिवस - 'शांति के लिए जल' थीम पर संगोष्ठी कार्यक्रम का अयोजन किया गया ' कार्यक्रम में उप प्रभागीय अधिकारी संगीता , जिला परियोजना अधिकारी एशा सिंह , कंपाइलर आशुतोष शुक्ला, स्टेनो एच सी शुक्ला, आलोक पांडेय एवम समस्त वन विभाग के कर्मचारी उपस्थित रहे ' कार्यक्रम में उप प्रभागीय अधिकारी ने कहा पानी हर जीवित प्राणी के लिए मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है और पानी के बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते ' भविष्य के लिए जल बचना अत्यंत जरूरी है ताकि आने वाले पीढ़ी और भविष्य सुरक्षित रह सके' डीपीओ ने बताया वर्षा जल संचयन जल संरक्षण के लिए उपयोग की जाने वाली सर्वोत्तम विधियों में से एक है। वर्षा जल को बर्बाद ना करके वर्षा जल को तालाबों के माध्यम से सहेजने का प्रयास करना चहिए तथा नमामि गंगे अभियान के तहत लगातार नदिया एवं सहायक नदियों को बचाने के लिए आम जनमानस में चेतना लाने हेतु जन जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है' कंपाइलर आशुतोष शुक्ला ने कहा इस विश्व जल दिवस पर, हम सभी को पानी के लिए एकजुट होने और शांति के लिए पानी का उपयोग करने, एक अधिक स्थिर और समृद्ध कल की नींव रखने की जरूरत है। स्टेनो ने कहा की अपने जीवनशैली में पानी संरक्षण हेतु छोटे छोटे बदलाव कर हम जल को बचाने का प्रयास कर सकते है ' आलोक पांडेय ने कहा पानी की बचत और संरक्षण के लिए, पानी के पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग को अपनाया जाना चाहिए तथा कार्यक्रम का समापन जल शपथ दिला कर किया।

न्यूज झरोखा

महोरी रीवा में कामन सर्विस सेंटर सीएससी केंद्र का एसडीएम ने कराया सीमांकन

करछना। विकास खंड करछना के ग्राम पंचायत महोरी रीवा में प्रस्तावित सरकारी कामन सर्विस सेंटर सीएससी केंद्र के निर्माण कार्य में गांव के कुछ दबंग लोग भूमि जबरन कब्जा कर रखा था जिसका निर्माण कार्य बाधित हो गया था,जिसे दबंगों से उक्त भूमि पर से अतिक्रमण हटाने को लेकर ग्राम प्रधान राजकुमार पटेल ने एसडीएम जागृति अवस्थी से लिखित शिकायत दर्ज कराई थी जिस मामले को गंभीरता से लेते हुए एसडीएम ने शुक्रवार को राजस्व टीम गठित कर उक्त स्थल पर पैमाइश करा कर सीमांकन कर उक्त भूमि को चिन्हित कर सरकारी कार्य को सुचारू रूप से निर्माण के लिए पंचायत को सुपुर्द कर निर्माण कार्य चालू कराने की स्वीकृति प्रदान की, प्रधान राजकुमार पटेल ने बताया कि उक्त भूमि पर गांव के कुछ दबंग लोग अतिक्रमण कर रक्खा था जिससे सीएससी केंद्र का निर्माण कार्य बाधित हो गया था, और एसडीएम से शिकायत पर राजस्व टीम में लेखपाल और कानूनगो द्वारा सीमांकन कर दिया गया है जिस अब सीएससी कामन सर्विस सेंटर का निर्माण कार्य जल्द चालू हो सकेंगा,

डीसीपी व एसीपी ने इंस्पेक्टर के साथ किया पैदल मार्च

मांडा। माहे रमजान, सीएए की अधिसूचना और निकटस्थ होली जैसे त्योहार को लेकर मिश्रित आबादी वाले गांवों और भारतगंज कस्बे में पुलिस व पीएसी सक्रिय हो गई है। भारतगंज कस्बे के विभिन्न मोहल्लों में एडिशनल डीसीपी अभिजीत सिंह के नेतृत्व में एसीपी मेजा रवि शंकर गुप्ता के साथ इंस्पेक्टर मांडा शैलेन्द्र सिंह ने पुलिस बल के साथ पैदल गश्त किया। शुक्रवार को क्षेत्र के भारतगंज कस्बे में इंस्पेक्टर मांडा शैलेंद्र सिंह, चौकी इंचार्ज भारतगंज विनय कुमार सिंह ने एडिशनल डीसीपी अभिजीत सिंह व एसीपी मेजा रवि शंकर गुप्ता के साथ विभिन्न मोहल्लों में पैदल गश्त कर लोगों शांति पूर्ण तरीके से त्यौहार मनाने तथा अराजक तत्वों से भयभीत न होने की अपील की।

लालापुर में एसीपी ने अर्धसैनिक बलों के साथ किया रूट मार्च

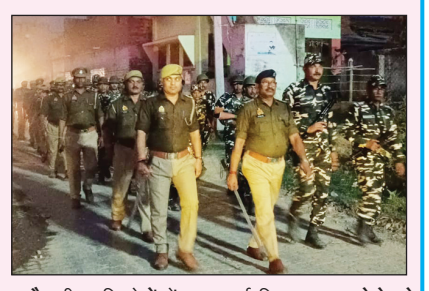

लालापुर। होली त्योहार और रमजान वा आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर एसीपी बारा संतलाल सरोज और एसओ लालापुर अजय कुमार मिश्र के साथ भारी संख्या में अर्धसैनिक बलों ने इलाके के लालापुर चौराहा, अमिलिया, चिल्ला गौहानी आदि क्षेत्रों में रूट मार्च निकाल कर लोगो को शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए निर्देशित किया।

घर से निकली महिला हुई लापता,अनहोनी की आशंका

उतरांव। उतरांव थाना क्षेत्र के सरायबख्श गांव में एक महिला घर से निकली और वापस घर नहीं लौटी महिला लापता हो गई।पति अपनी पत्नी की खोजबीन में जुटा हुआ है। सराय बक्स निवासी दारा सिंह कनौजिया जो मजदूरी करता है। 20 मार्च उसकी पत्नी शाम को घर से निकली और दोबारा घर नहीं लौटी वह लापता हो गई।दारा सिंह अपने रिश्तेदारी नातेदारी दूर दराज तक खोजबीन की लेकिन कहीं भी पता नहीं चला।वहीं पति ने उतराव थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई है।महिला के चार बच्चे हैं। लापता महिला की उम्र लगभग 45 वर्ष के करीब है। पुलिस हर पहलुओं से जांच पड़ताल कर रही है। पति ने अनहोनी की आशंका जताई है।

डुआ गाँव में विवादित होलिका को जेसीबी से करवाई गई सफाई

लालापुर। पूर्व वर्षों में पडुवा गांव की होली विवादित थी।होलिका स्थल के विवाद में हिंदू व मुस्लिम पक्ष के लोगों का होलिका स्थल की भूमि को लेकर विवाद था।इसी क्रम में उपजिलाधिकारी बारा दिग्विजय सिंह के आदेश पर तहसीलदार बारा गणेश सिंह ने होलिका स्थल का निरीक्षण किया व होलिका स्थल की सफाई करवाई और ग्रामीणों को एक साथ मिलकर त्यौहार मनाने को कहा।इस मौके पर राजस्व निरीक्षक अभय राज यादव,लेखपाल मिथिलेश मिश्र तथा थानाध्यक्ष अजय कुमार मिश्र मय टीम व ग्राम प्रधान दीपेश मिश्र सहित हिंदू मुस्लिम पक्ष के लोग इकट्ठा रहे।

बार एसोसिएशन सोरांव की नई कार्यकारणी का गठन, सदन की बैठक आहूत

सोरांव। बार एसोसिएशन सोरांव का शपथ ग्रहण समारोह समापन होने के बाद शुक्रवार को नई कार्यकारणी ने अपनी पहली सदन की बैठक आहूत की गई। जिसमें निवर्तमान अध्यक्ष भाई लाल पटेल संग नि वर्तमान महामंत्री अच्युतानंद मिश्र ने अपने कार्यकाल में बार का विकास करते सभी श्रोतों से आय व्यय का ब्यौरा सदन में रखा। जिसमे शेष एक लाख इक्कीस हजार रुपए की बचत कर वर्तमान कार्यकारणी को सौंपते हुए अपना कार्य भार समाप्त किया। तथा सदन में मौजूद वर्तमान कार्यकारणी तथा पूर्व कार्यकारिणी के द्वारा सर्वसम्मति से एक बजट को एक स्वर में स्वीकार कर पूर्व कार्यकारणी को बधाई दी गई। तथा मौजूद सभी लोगों ने पूर्व कार्यकारणी के इस बजट को सदन में सही तरीके से पेश करने के लिए लोगों ने इस सराहनीय कार्य करने के लिए बधाई दिए। इस मौके पर वर्तमान अध्यक्ष कमलाकांत मिश्रा, महामंत्री रमेश नारायण मिश्र, उपाध्यक्ष प्रेम बहादुर सिंह, कोषाध्यक्ष श्याम शुक्ला, संयुक्त मंत्री प्रशासन प्रदीप केसरवानी संग राजेश कुमार यादव, मनोज कुमार यादव, सचिन संग समस्त कार्यकारणी व वरिष्ठ अधिवक्ता प्रवीण कुमार मिश्रा, बच्चू लाल गौतम, वरिष्ठ अधिवक्ता ईश्वर चंद्र, बाबू शंकर लाल संग सैकड़ो लोग रहे।

एयरफोर्स के जवान का फंदे से लटका मिला शव, 11 दिन पहले हुई थी शादी, जालंधर में थी तैनाती

प्रयागराज। भारतीय वायु सैनिक के जवान का शव फंदे से लटकता मिला है। वायु सैनिक दीपक हंडिया थाना क्षेत्र के रसूलपुर तलिया के रहने वाले थे। वर्तमान में उनकी तैनाती पंजाब के जालंधर में है। घटना की सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंच गई। शव को नीचे उतारकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। मामले की छानबीन की जा रही है।हंडिया थाना क्षेत्र के रसूलपुर निवासी वायु सैनिक दीपक कुमार यादव (24) शुक्रवार सुबह कमरे के अंदर मृत पाए गए। उनका शव फंदे से लटका मिला। परिजनों ने देखा तो आनन फानन में अस्पताल ले गए। जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। दीपक की जालंधर में तैनाती थी। रसूलपुर तलिया तारा निवासी अनिल कुमार यादव के दो बेटों में दीपक बड़े थे। उनके अलावा एक छोटी बेटी है। दीपक दो मार्च को ड्यूटी से घर आए थे। कुछ दिन पहले 11 मार्च को ही उनकी शादी हुई थी।

मूल्यांकन केंद्रों पर मतदाता जागरूकता अभियान शपथ समारोह आयोजित

प्रयागराज। मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत आज दिनांक 22/3/2024 को प्रयागराज के पांच मूल्यांकन केंद्रों पर जिला विद्यालय निरीक्षक/ सहायक नोडल अधिकारी स्वीप श्री पी.एन.सिंह के द्वारा समस्त शिक्षकों को मतदाता जागरूकता की शपथ दिलवाई गई। उल्लेखनीय है कि शहर के 09 मूल्यांकन केंद्रों पर परिषदीय परीक्षाओं का मूल्यांकन हो रहा है। इस संदर्भ में जिला विद्यालय निरीक्षक ने जीआईसी में 300, कुल भास्कर आश्रम इंटर कॉलेज में 400, केपी इंटर कॉलेज में 450 , एंग्लो बंगाली इंटर कॉलेज में 350 और केसर विद्यापीठ में 250 शिक्षकों को मतदाता जागरूकता की शपथ दिलवाई। इसके पूर्व उन्होंने अपने उद्बोधन में शिक्षकों से कहा कि हम लोग मतदाता जागरूकता कार्यक्रम को लेकर अति सक्रिय हैं। शहर उत्तरी परिक्षेत्र सबसे प्रबुद्ध वर्ग है, लेकिन यहाँ मतदान प्रतिशत राष्ट्रीय स्तर से बेहद कम है। यह बिंदु बेहद चिन्तनीय है और हम लोगों के लिए एक चैलेंज हैं। हमारा सामूहिक प्रयास होगा कि हम इस लोकसभा चुनाव में मतदान का प्रतिशत बढ़ा सकेंगे।हम कॉलेजों में निबंध, नाटक वाद- विवाद प्रतियोगिता, रैली, नुक्कड़ नाटक के द्वारा लोगों को मतदान करने हेतु जागरूक कर रहे हैं और बाद में भी ऐसा करते रहेंगे। मतदाता जागरूकता अभियान में उनके साथ स्वीप के सदस्यों में सह जिला विद्यालय निरीक्षक एल.बी. मौर्य, अनुपम परिहार, डॉ राकेश पांडे , शेषनाथ सिंह, बृजेश चन्द्र श्रीवास्तव , अरविंद गौतम,मुकेश सिंह, पवन सिंह, उमेश खरे इत्यादि उपस्थित रहे। इसी क्रम में कल दिनाँक 23/03/24 को शेष 04 मूल्यांकन केंद्रों पर मतदाता जागरूकता पर शपथ दिलवाई जाएगी।

बीआरसी उरुवा में विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्षों एवं सचिवों की कार्यशाला संपन्न

बीईओ कैलाश सिंह ने सभी लोगों को संचारी रोगों के बारे में भी बताया

मेजा। बीआरसी उरुवा के सभागार में शुक्रवार को परिषदीय विद्यालयों के विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष और सचिवों की एक दिवसीय कार्यशाला का समापन हो गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य शैक्षिक सत्र 2023 और 2024 के समस्त परिषदीय विद्यालयों में विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों को उनके कर्तव्य एवं दायित्व, सामुदायिक एवं अभिभावकों की सहभागिता, पॉजिटिव, पैरटिंग तथा समग्र शिक्षा द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों में उनकी भूमिका को लेकर प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण सन्दर्भदाता संतोष दुबे ने बताया कि शिक्षा के अधिकार अधिनियम में विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों एवं स्थानीय प्राधिकारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों का दायित्व है कि वह समय-समय पर विद्यालय में पहुंचकर विद्यालय संचालन में सहयोग प्रदान करें। विद्यालय में सामुदायिक सहभागिता का मतलब है कि विद्यालयों की योजना और प्रबंधन में माता-पिता और समुदाय के सदस्यों की भागीदारी बढ़े, जिससे छात्रों की उपस्थिति नियमित हो और उनके सीखने की गति में बढ़ोतरी होगी। जिससे निपुण भारत मिशन का मकसद पूरा होगा तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा। प्रशिक्षण में खंड शिक्षा अधिकारी उरुवा कैलाश सिंह ने सभी लोगो को संचारी रोगों के बारे में बताते हुए कहा कि यह रोग एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति में फैल सकते हैं। इन बीमारियों का कारण बनने वाले रोगजनक विभिन्न तरीकों से फैल सकते हैं, जैसे हवा के माध्यम से, दूषित पदार्थों या सतहों के संपर्क से, या जानवरों और कीड़ों के काटने से। कई संचारी रोगों में हल्के लक्षण होते हैं, जो उपचार के बिना ही ठीक हो जाते हैं। संक्रामक रोगों की व्यक्तिगत और समग्र रिपोर्टों के आधार पर महामारी विज्ञान की निगरानी सामुदायिक स्तर पर या व्यक्तिगत रोगियों के लिए हस्तक्षेप की योजना बनाने के लिए महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करती है। साथ ही अन्य सूचना स्रोत, जैसे अस्पताल से छुट्टी डेटा और प्रहरी केंद्रों की निगरानी भी प्रदान करती है। ये विशिष्ट चिकित्सा या सामुदायिक साइटें हो सकती हैं,जो आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं और किसी क्षेत्र या आबादी समूह की निगरानी के लिए अच्छे स्तर की रिपोर्टिंग प्रदान करने में सक्षम हैं। बीआरसी उरुवा के कार्यालय प्रभारी रोहित त्रिपाठी ने बताया कि कार्यशाला मे ब्लॉक के तीन सन्दर्भदाता बृजेश शुक्ला, संतोष दुबे और गिरीश श्रीवास्तव द्वारा सभी को सही ढंग से प्रशिक्षण दिया जा रहा है। ब्लॉक के इस प्रशिक्षण में सभी परिषदीय विद्यालयों के प्रबंध समिति के अध्यक्ष मिलन, सरोजा देवी, मनीष कुमार, योगेंद्र यादव, शिवकरन, दीपिका, रामबाबू, संतोष कुमार, मालती देवी, सन्नो देवी व राजीव यादव प्रधानाध्यापक अजय ओझा, पुष्कर द्विवेदी, दिवाकर दत्त मिश्रा, ज्ञानेंद्र सिंह, प्रदीप कुमार, रीता मिश्रा, इरफान अहमद, अनिल शुक्ला, माया तिवारी, रेखा श्रीवास्तव, शिप्रा, माधुरी, शशिकांता सैनी, स्तुति श्रीवास्तव, अजीत मिश्रा व रामसेवक आदि

बच्चों में अच्छी शिक्षा एवं निखार लाने में शिक्षकों का बड़ा योगदान : डॉ. डी.सी. लाल

सहसों। कसेरूआ कला सहसों स्थित यूनिक पब्लिक स्कूल का वार्षिकोत्सव समारोह शुक्रवार को धूमधाम से संपन हुआ। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ डी सी लाल एवं विशिष्ट अतिथि प्रधानाचार्य फिरोज गांधी इंटर कॉलेज गारापुर विनोद कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि बच्चों को अच्छी शिक्षा एवं उनमें बेहतर निखार लाने में शिक्षकों का सबसे बड़ा योगदान होता है। वार्षिक समारोह कार्यक्रम में नन्हे मुन्ने बच्चों ने गणेश वंदना, स्वागत गीत, ग्रुप डांस, इंग्लिश स्पीच, होली गीत, टीचर्स ड्रामा आदि सांस्कृतिक एवं रंगारंग प्रस्तुतियों के द्वारा लोगों का मन मोह लिया।इस अवसर पर प्रबंधक जगन्नाथ पाल द्वारा आए हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए सभी के प्रति आभार प्रकट कर धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रधानाचार्य अरविन्द कुमार चतुर्वेदी ने करते हुए विद्यालय की एनुअल रिपोर्ट प्रस्तुत किया ' इस मौके पर अतिथियों द्वारा उत्कृष्ट कार्य करने वाले छात्रों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। प्रमुख ग्रुप से विनोद मिश्रा, शिवलाल यादव, विवेक त्रिपाठी, धर्मेंद्र कुशवाहा, वीणा मिश्रा, चंद्र प्रकाश शुक्ला, राजेंद्र प्रताप सिंह, साबिर सिद्दीकी, प्रतीक पांडे सहित आदि लोग मौजूद रहे।

रेलवे स्टेशन से महाकुंभ क्षेत्र तक भीड़ प्रबंधन की बनेगी नई योजना, अधिकारी फिर से करेंगे मंथन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। अगले वर्ष लगने वाले महाकुंभ मेले में 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के प्रयागराज आने का अनुमान है। इसी आंकड़े को ध्यान में रखकर जिला प्रशासन और रेलवे प्रशासन अपनी तैयारियां कर रहा है। अभी तक 2019 कुंभ जैसी ही भीड़ प्रबंधन की व्यवस्था प्रयागराज के रेलवे स्टेशनों पर किए जाने की तैयारी थी, लेकिन अब इसमें संशोधन होगा। इसके लिए रेलवे और जिला प्रशासन महाकुंभ के दौरान रेलवे स्टेशन से महाकुंभ क्षेत्र तक भीड़ प्रबंधन के लिए नई योजना तैयार करेगा। माहभर के भीतर नई योजना बनाए जाने की तैयारी है।मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में डीआरएम हिमांशु बडोनी और मंडलायुक्त विजय विश्वास पंत के नेतृत्व में बैठक में प्रयागराज के रेलवे स्टेशनों पर भीड़ प्रबंधन के तमाम पहलुओं पर चर्चा की गई। इस दौरान प्रयागराज जंक्शन, प्रयागराज रामबाग, प्रयाग जंक्शन, प्रयागराज संगम, प्रयागराज छिवकी, झूंसी, नैनी, फाफामऊ और सूबेदारगंज स्टेशन पर श्रद्धालुओं की भीड़ के आवागमन का पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण देखा गया। तय हुआ कि इसका संशोधित प्लान दिया जाए। अप्रैल में संशोधित योजना पर पुनः विमर्श होगा और अगर सबकुछ सही रहा तो उसे लागू करने के लिए अंतिम संस्तुति दी जाएगी। डीआरएम ने कहा कि स्टेशनों पर चल रहे विकास कार्यों को देखते हुए सभी स्टेशनों का संयुक्त टीम द्वारा एक निरीक्षण किया जाए, ताकि मूवमेंट प्लान में किसी भी बाधा को पहले से चिह्नित कर उसे दूर कर लिया जाए। यह भी कहा गया कि जंक्शन पर सिविल लाइंस साइड से यात्रियों का प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा। महाकुंभ क्षेत्र, स्टेशन क्षेत्र में पंपलेट, ऑडियो-वीडियो, बैनर, लोक उद्घोषणा प्रणाली के सघन प्रयोग होगा। महाकुंभ से संबंधित कार्य जिसमें रेल ओवर ब्रिज, रेल अंडर ब्रिज, सड़क चौड़ीकरण आदि को तय समय पर पूरा कर लिए जाने को कहा गया। बैठक में कुंभ मेला अधिकारी विजय किरन, एडीआरएम संजय सिंह, एडीआरएम शिवेंद्र शुक्ला, एसपी जीआरपी एपी सिंह, सीनियर डीएससी विजय प्रकाश पंडित, इंद्रा कुमार, विवेक शुक्ला, मदन कुमार, विवेक चतुर्वेदी, दयानंद प्रसाद रहे।

हत्या अभियुक्त को गिरफ्तार कर पूरामुफ्ती पुलिस ने भेजा जेल

अखंड भारत संदेश

दस दिन पहले ईंट से सिर कूचकर एक युवक की हत्या की गई थी

प्रयागराज। पूरामुफ्ती पुलिस ने हत्या का खुलासा करते हुए एक अभियुक्त को अलाकात्ल सहित गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। दस दिन पहले एक युवक का ईंट से सिर कूचकर हत्या करने के बाद हत्या अभियुक्त मौके से फरार हो गया था। हत्या अभियुक्त की तलाश में पूरामुफ्ती पुलिस ने कई जगह दबिश दी लेकिन सफलता हांथ नहीं लगी थी। शुक्रवार के दिन मुखबिर खास के द्वारा सूचना मिली कि हत्या अभियुक्त मंदर मोड़ के पास मौजूद है और भागने की फिराक में वाहन का इंतजार कर रहा है। इसी दौरान थानाध्यक्ष अजीत सिंह की अगुवाई में पूरामुफ्ती पुलिस ने चारो तरफ से घेरकर हत्याभियुक्त को पकड़ लिया और थाने ले जाकर लिखा - पढ़ी कर जेल भेज दिया। स्थानीय थाना में पंजीकृत मु0अ0सं0 43/24 धारा 302 भा0द0वि0 से संबंधित वांछित अभियुक्त श्रीचन्द्र उर्फ लल्ली पटेल उम्र लगभग 29 वर्ष पुत्र गंगाराम उर्फ गंगाप्रसाद निवासी बैरहना अहमदपुर पावन थाना पूरामुफ्ती को दिनांक 22.03.2024 मन्दर मोड़ पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया।अभियुक्त की निशादेही पर हत्या में प्रयुक्त आधी ईंट बरामद की गयी। हत्या अभियुक्त के खिलाफ नियमानुसार विधिक कार्यवाही की गयी। दिनांक 10.03.2024 को पूरामुफ्ती थाना पर सूचना प्राप्त हुई कि सल्लाहपुर चौकी अन्तर्गत ग्राम अहमदपुर पावन बैरहना में अशोक कुमार पुत्र स्व बनवारी लाल निवासी बैरहना अहमदपुर पावन की ईंट से सिर कूचकर हत्या कर दी गई है। उक्त सूचना पर थाना पूरामुफ्ती पुलिस द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए अभियोग पंजीकृत किया गया था।

सुनवाई नहीं हुई, शिक्षक ने थाने में खाया जहरीला पदार्थ

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज के एक शिक्षक की जब सुनवाई नहीं हुई तो उसने कर्नलगंज थाने में ही जहर खा लिया। हालत गंभीर होने पर उसे स्वरूपरानी नेहरू अस्पताल में भर्ती कराया गया है। छोटा बघाड़ा निवासी सुनील सिंह कर्नलगंज इंटर कॉलेज में अंग्रेजी विषय के शिक्षक हैं।उनका कहना है कि वह मकान में लगे गेट को चौड़ा करना चाहता है लेकिन पड़ोसी यह नहीं करने दे रहा है। वह छोटा बघाड़ा के चौकी इंचार्ज से मिलकर व लेखपाल व कानूनगो को भेजकर मेरा काम रोकवा देता है। जब वह कर्नलगंज थाने में इसकी शिकायत लेकर पहुंचे तो वहां भी कोई सुनवाई नहीं हुई इससे उसने यह कदम उठाया है।

बार-बार चौकी इंचार्ज फोन पर दे रहा धमकी : सुनील सिंह का आरोप है कि छोटा बघाड़ा के चौकी इंचार्ज विनीत यादव उसे बार-बार फोनकर टार्चर कर रहे हैं। वह चौकी पर बुला रहे हैं, न जाने पर जेल भेजने की धमकी दे रहे हैं। उधर, शिक्षक की सुनवाई न होने पर शिक्षक साथियों में आक्रोश भी है। इसकी शिकायत उच्चाधिकारियों से भी की गई है। हालांकि अभी वह एसआरएन अस्पताल में भर्ती है।

पत्नी ने सीएम योगी से लगाई गुहार : सुनील सिंह कुशवाहा की पत्नी शिवानी कुशवाहा ने इसकी शिकायत सीएम योगी आदित्यनाथ से की है। शिवानी ने लिखा है कि राजस्व निरीक्षक ने त्रिभुवन ने बिना किसी कारण मेरा गेट नहीं लगने दे रहे हैं। पति अस्पताल में जिंदगी और मौत से जूझ रहे हैं। वहीं सुनील ने कहा- कानूनगो व लेखपाल गेट लगाने के लिए रुपए मांग रहे थे।

महावतार बाबा जी वटवृक्ष के आध्यात्मिक आभा मंडल में मनाया गया क्रियायोग गुरु का जन्म दिवस

क्रियायोग गुरु के जन्म दिवस पर देश विदेश के साधक रहे मौजूद

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। महावतार बाबा जी वटवृक्ष के आध्यात्मिक आभा मंडल में शुक्रवार को अंतर्राष्ट्रीय क्रियायोग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम जी महाराज का जन्मोत्सव आध्यात्मिक तरीके से मनाया गया। जन्मदिवस के उपलक्ष में देश ही नहीं विदेश के भी साधक मौजूद रहे। बताते चलें कि क्रियायोग गुरु का आगमन जैसे ही महावतार बाबा जी वटवृक्ष के आध्यात्मिक आभा मंडल में हुआ, तो पहले से ही वहां मौजुद साधकों ने गुलाब की पंखुड़ियों से अपने गुरु का स्वागत किया। क्रियायोग गुरु ने सबसे पहले पहुंच कर दीप प्रज्ज्वलित किए इसके उपरांत मौजूद साधकों को क्रियायोग के बारे में विस्तार से समझाया। कार्यक्रम के दौरान ही क्रियायोग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम जी महाराज के जीवन के कुछ महत्वपूर्ण पलों को वीडियो प्रोजेक्टर के माध्यम से दिखाया गया। वीडियो में गुरुदेव के बाल्यावस्था, वैवाहिक जीवन तथा क्रियायोग आश्रम की स्थापना व अखंड भारत संदेश अखबार की शुरूआत जैसे विभिन्न वीडियो क्लिप को साधकों को दिखाया गया। इसके उपरांत क्रियायोग आश्रम में पहले से ही स्थापित क्रियायोग प्राचीन मंदिर को भी साधकों को हर बिंदुओं को समझाते हुए दिखाया गया। कार्यक्रम के अंत में स्वामी जी ने साधकों को निरंतर क्रियायोग का अभ्यास व सेवा कार्य करने की बात कही।

3 दिन से डॉक्टर लापता :19 मार्च को ड्यूटी पर निकले थे, वापस लौटकर घर नहीं आए

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज के अल्लापुर इलाके में रहने वाले होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ.नीलेश अग्रहरि तीन दिनों से लापता हैं। अपहरण की आशंका होने पर परिजन ने सिविल लाइंस में केस दर्ज कराया है। डॉ. नीलेश सुल्तानपुर में रामनाथपुर सीएचसी में तैनात हैं। वह सिविल लाइंस से ड्यूटी के लिए सुल्तानपुर गए तो वापस ही नहीं लौटे। प्रयागराज, प्रतापगढ़ और सुल्तानपुर के 52 सीसीटीवी कैमरों को खंगाला गया है। प्रतापगढ़ के भूमियामऊ बस अड्?डे के सीसीटीवी कैमरे की फुटेज में डॉ. दिखाई पड़े हैं। पुलिस उसकी जांच कर रही है।

आखिर बार प्रतापगढ़ में मिली थी लोकेशनः सिविल लाइंस बस अड्डे पर एक रोडवेज बस कंडक्टर ने डॉक्टर की फोटो देखकर बताया है कि रात की बस से वह सिविल लाइंस उतरे थे। अब यह मामला रहस्यमय हो गया है। प्रयागराज, प्रतापगढ़ और कौशांबी के बीच डॉक्टर के परिवार वाले दौड़ लगा रहे हैं। पुलिस ने उनके नंबर को सर्च किया तो दो दिन पहले प्रतापगढ़ तक लोकेशन आई है। पुलिस जांच में जुटी है। अनहोनी की आशंका की वजह से पुलिस ने पूछताछ तेज कर दी है।

सिविल लाइंस में रोडवेज बस चालक ने देखा : डॉक्टर नीलेश अग्रहरि (42) मूलरूप से लक्ष्मी टॉकीज के पास कटरा के रहने वाले हैं। वर्तमान में अल्लापुर में परिवार समेत शिफ्ट हो गए थे। सरकारी होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. नीलेश के लापता होने से पत्नी आशा अग्रहरि का रो रोकर बुरा हाल है। परिवार के करीबी आनंद अग्रवाल ने बताया कि वह प्रतिदिन बस से ड्यूटी आते-जाते हैं। 19 मार्च को ड्यूटी के बाद घर के लिए निकले लेकिन कुछ पता नहीं चला। बुधवार को घरवाले उनकी तलाश करते हुए प्रतापगढ़ पहुंचे। वहां कोतवाली पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज देखा। फुटेज में नीलेश शाम को रोडवेज बस में बैठते हुए दिखे। इस पर बस के चालक और परिचालक से पूछताछ की गई। चालक-परिचालक ने बताया कि डॉ.नीलेश गुलाबी टीशर्ट, चश्मा और भूरे रंग का बैग लिए हुए थे। सिविल लाइंस बस अडडे पर उतरने की बात भी सामने आई है। इसके बाद कहां गए, कुछ पता नहीं है।

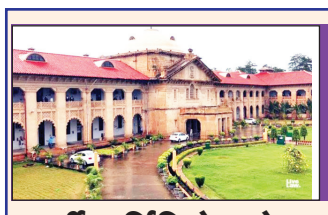

हाईकोर्ट समाचार

फर्जी सर्टिफिकेट के आधार पर नियुक्त होने के आरोपी टीचर की गिरफ्तारी पर रोक

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने फर्जी सर्टिफिकेट के आधार पर नियुक्त सहायक अध्यापक के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी में गिरफ्तारी पर रोक लगा दी है। याची अनिल कुमार सिंह बतौर सहायक अध्यापक प्राथमिकी विद्यालय कूड़ी बाजार जिला गोरखपुर में वर्ष 2010 में नियुक्त हुआ था। बेसिक शिक्षा अधिकारी गोरखपुर द्वारा याची समेत 37 सहायक अध्यापकों के विरुद्ध उक्त प्राथमिकी मार्च 2020 में थाना राजघाट गोरखपुर में अन्तर्गत धारा 417, 419, 420, 423, 467, 468, 471 भारतीय दण्ड संहिता दर्ज करायी गयी थी, जिसकी विवेचना आज तक प्रचलित है।यह आदेश न्यायमूर्ति सिद्धार्थ एवं न्यायमूर्ति विनोद दिवाकर की खण्डपीठ ने याची अध्यापक की याचिका पर पारित किया है। हाईकोर्ट ने गिरफ्तारी पर रोक लगाते हुए सम्बन्धित पुलिस अधिकारी को निर्देश दिया है कि विवेचना में इन तथ्यों को भी शामिल किया जाए कि याची की नियुक्ति के समय कौन कौन से जिम्मेदार अधिकारी तैनात थे और उन्होने शैक्षिक प्रमाणपत्रों के सत्यापन को लेकर क्या प्रयत्न किया था। कोर्ट ने सारे तथ्यों के साथ विभागीय अधिकारियों से जवाब तलब किया है। अदालत ने याचिका पर 24 सितंबर 2024 की तारीख नियत करते हुए रिपोर्ट प्रस्तुत करने का कहा है। कोर्ट का कहना है कि इस प्रकार की नियुक्ति विभागीय अधिकारियों की मिलीभगत के बिना संभव नहीं है। याची के अधिवक्ता अरविन्द कुमार त्रिपाठी का कहना है कि बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा विधिक प्रक्रिया का अनुपालन किए बगैर याची समेत 37 सहायक अध्यापकों को गोरखपुर में बर्खास्त कर दिया गया। याची ने अपनी बर्खास्तगी को चुनौती दी। जिसे हाईकोर्ट ने रद्द कर नये सिरे से आदेश पारित करने का निर्देश दिया था।

जमीनी विवाद में बुजुर्ग को चोट लगने से हुई मौत

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। हंडिया कोतवाली के बिलारी गांव में जमीनी विवाद में चोट लगने से एक बुजुर्ग की मौत हो गई ' परिजनों ने बुजुर्ग को उपचार के लिए नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए। जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया ' सूचना पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में ले कर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजते हुए मामले की छानबीन में जुटी हुई है 'मिली जानकारी के अनुसार बिलारी गांव निवासी गोलई भारतीय पुत्र गंगा दिन भारतीय उम्र लगभग 60 वर्ष जो की हंडिया कोतवाली में चौकीदार के पद पर तैनात था और उसका उनके पड़ोसियों से चकरोड़ को लेकर जमीनी विवाद काफी दिनों से चल रहा था ' शुक्रवार की सुबह विपक्षियों के द्वारा फावड़ा से चकरोड़ को काटकर खेत में मिलाया जा रहा था तभी मौके पर पहुंचे गोलई भारतीय के द्वारा चकरोड़ काटने का विरोध किया गया तो विपक्षियों से उनकी मारपीट हो गई और मारपीट के दौरान चोट लगने से बुजुर्ग गोलई भारतीय की मौत हो गई ' आनन फानन में परिजनों के द्वारा घायल गोलई भारतीय को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ऊपरदहा हंडिया ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

परिजनों को समझा बूझकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा : घटना की जानकारी मिलने पर मौके पर पहुंचे थाना प्रभारी हंडिया ब्रिज किशोर के द्वारा परिजनों को समझा बूझकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया चौकीदार की मौत से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है ' मृतक गोलई भारतीय के चार पुत्र थे जिनमें से एक पुत्र की पहले ही मौत हो चुकी है जबकि तीन लड़के सूरत शहर में रहकर नौकरी कर अपना और परिवार का भरण पोषण करते हैं।

परिजनों ने हंडिया थाने पर तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की : गोलई की मौत से पत्नी सहित परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है ' परिजनों के द्वारा हंडिया थाने पर तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है ' फिलहाल सभी आरोपी घर छोड़कर मौके से फरार है ' पुलिस मामले की छानबीन में जुटी हुई है।

गाजीपुर के अर्पित राय ने GATE 2024 ऑल इंडिया रैंक 121 प्राप्त किया

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के गाजीपुर में ग्राम हाटा पो मोहम्मदाबाद निवासी अर्पित राय ने बनारस से अपनी शिक्षा की शुरूआत की और मेहनत एवम लगन से इस मुकाम तक पहुंचने में सफल रहे इनके पिता गुप्तेश्वर राय रिटायर स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी बड़े भाई अंकित राय सहायक अध्यापक बेसिक शिक्षा भाभी कविता राय सहायक अध्यापिका बेसिक शिक्षा बड़ी बहन अर्चना राय सहायक अध्यापिका जूनियर हाई स्कूल में कार्यरत हैं अर्पित के रैंक 121 आने पर उनके परिवारजन और गाजीपुर जिला के क्षेत्र के सभी छात्रों में खुशी की लहर है।

भारती भवनः अतिक्रमण की गिरफ्त में महामना की ज्ञान संपदा, द्वार पर सब्जी-ठेले वालों का डेरा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिस शहर में पूरब का आक्सफोर्ड बसता हो,जहां सड़कों की पटरियां सौंदर्य प्रसाधन की वस्तुओं से नहीं पुस्तकों से सजती हों, वहां ज्ञान-संपदा की दुर्दशा जान कर आप सिर थाम लेंगे। प्रयागराज के सबसे समृद्ध भारती भवन पुस्तकालय में जहां 62 हजार से अधिक पुस्तकों और 12सौ से अधिक पांडुलिपियों का संग्रह है, वहां तक पहुंचना दुश्वार हो गया है।वजह है इस पुस्तकालय के द्वारों पर सब्जी-ठेले वालों का कब्जा जमा लेना। इस पर भी मजाल क्या कि कोई इन्हें रास्ता खाली करने के लिए टोक दे। विवाद और मारपीट की नौबत आने की वजह से लोग बोलने तक की हिम्मत नहीं जुटा पाते। भारती भवन पुस्तकालय ज्ञान संपदा की अनमोल थाती को संजोए हुए है। डिजिटलाइजेशन के दौर में जब दुनिया दूसरी मिट्टी पर शिफ्ट हो रही है, तब भी इस पुस्तकालय से 1017 लोग सीधे तौर पर जुड़े हैं।नियमित 70-80 प्रतियोगी छात्र और पुस्तक प्रेमियों की भीड़ रहती है, लेकिन सबसे बड़ा संकट है इस पुस्तकालय के रास्तों पर अतिक्रमण कर लिया जाना। बृहस्पतिवार को अमर उजाला की टीम जब इस पुस्तकालय पर पहुंची, तब मुख्य प्रवेश द्वार पर सब्जी की दुकानों के अलावा ठेले वालों का कब्जा रहा। पीछे के रास्ते से भी पुस्तकालय में प्रवेश करना मुश्किल था। इसलिए कि वहां भी दो पहिया वाहनों की पार्किंग कर ली गई थी।लाइब्रेरियन स्वतंत्र पांडेय बताते हैं कि पुस्तकालय के द्वार पर अतिक्रमण की समस्या वर्षों पुरानी है। कई बार नगर निगम और कोतवाली पुलिस से शिकायत की गई, लेकिन रास्ता खाली नहीं कराया जा सका। मना करने पर विवाद की स्थिति पैदा हो जाती है।अतीत के पन्नों को पलटा जाए तो यहां गौरवशाली इतिहास छिपा है। महामना मदन मोहन मालवीय, राजश्री पुरुषोत्तम दास टंडन, डॉ. कैलाश नाथ काटजू, केशव देव मालवीय जैसे देशभक्त भारती भवन पुस्तकालय के अध्यक्ष रहे। इस पुस्तकालय की स्थापना 1889 में लाला ब्रजमोहन लाल भल्ला ने की थी। 1902 में लाला बृजमोहन ने अपने बड़े पुत्र लाला भवानी प्रसाद और छोटे पुत्र लाला राजाराम के सहयोग से पुस्तकालय के लिए भवन और भूमि दान में दी। इसके साथ ही उन्होंने पुस्तकालय का प्रबंधन और संचालन करने के लिए एक ट्रस्ट भी गठित किया। पुस्तकालय की प्रथम कार्यकारिणी में महामना मदन मोहन मालवीय, पं. बालकृष्ण भट्ट, पं. श्रीधर पाठक, लाला लाल बिहारी, पं. रामनाथ मिश्र, डॉ. जय कृष्ण व्यास, पं. जय गोविंद मालवीय, लाला बृजमोहन लाल, लाला दुर्गा प्रसाद, पं. देविका नंदन तिवारी, लाला कालिका प्रसाद जैसे लोग थे। इस बगिया को सींचने में महीयशी महादेवी वर्मा, महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, डॉ. हरिवंश राय बच्चन, सतीश चंद्र देव, विश्वंभर नाथ पांडेय और पं. ब्रजमोहन व्यास का विशेष योगदान रहा है। पुस्तकालय की मंत्री मुक्ति व्यास बताती हैं कि शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में केंद्र सरकार की तरफ से पुस्तकालय के राष्ट्रीय महत्व को ध्यान में रखते हुए विशेष डाक टिकट भी जारी किया जा चुका है। स्वतंत्रता संग्राम का केंद्र बिंदु बनी पुस्तकें यहीं से प्रकाशित हुई थीं। इस पुस्तकालय में 62 हजार किताबें, 12 सौ पांडुलिपिया हैं जो चार सौ वर्ष पूर्व से शुरू होती हैं। इतना ही नहीं 1750 से अब तक के पंचांगों का भी संग्रह यहां मौजूद हैं।

दिव्यांग बच्चों के बिना हर त्यौहार अधूरा

दिव्यांग बच्चों संग होली का पर्व मना कर क्लब ने दिए विभिन्न उपहार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एलायंस क्लब इंटरनेशनल प्रतापगढ़ के पदाधिकारी व क्लब के इंटरनेशनल डायरेक्टर समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य के नेतृत्व में गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी होली की खुशियां मनाने राजकीय अक्षम विद्यालय बढ़नी मोहनगंज पहुंचकर होली के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया। दिव्यांग बच्चों ने होली के गीत एवं चुटकुले सुना कर वाह वाही लूटी। क्लब की तरफ से दिव्यांग बच्चों को होली का त्यौहार मनाने में कोई कमी ना हो इसके लिए दिव्यांग बच्चों को गुझिया, मिठाई, नमकीन, पिचकारी, रंग, फल आदि उपहार दिया गया। विभिन्न होली के उपहार पाकर बच्चों के चेहरे खिल उठे।

दिव्यांग बच्चों के साथ त्योहार मनाते क्लब के पदाधिकारी।

क्लब के इंटरनेशनल डायरेक्टर रोशनलाल उमरवैश्य ने बताया कि 1997 से दिव्यांग बच्चों के बीच हर त्यौहार पर उन्हें कोई दिक्कत ना हो उपहार दिए जाते हैं। उसी क्रम में होली का त्यौहार यह दिव्यांग बच्चे भी बढ़ चढ़कर मनाए इसके लिए सभी उपहार देकर उनके चेहरे पर खुशियां लाने की कोशिश की गई। इन दिव्यांग बच्चों के चेहरे पर खुशी लाना ही हमारा उद्देश्य है। मैं हर त्यौहार इन दिव्यांग बच्चों के बिना नहीं मान सकता हूं। भगवान से प्रार्थना भी करता हूं कि मुझे इतनी शक्ति दे ताकि गरीब असहायों के साथ इन दिव्यांग बच्चो की पूरी सेवा कर सभी के चेहरों पर खुशी ला सकूं। विद्यालय की तरफ से श्री नारायण जी ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर परमानंद मिश्रा, शिवेश शुक्ला, श्री नारायण यादव, अनिरुद्ध तिवारी, राजेश सिंह, विनय श्रीवास्तव, सहायक अध्यापिका अमिता कुशवाहा, पूनम गुप्ता, रेखा उमरवैश्य, अर्चना खंडेलवाल, आदर्श कुमार, विवेक कुमार आदि होली का त्योहार दिव्यांग बच्चों संग मनाया।

गंदगी को लेकर ग्रामीणों में गुस्सा, डीएम से हुई शिकायत

लालगंज, प्रतापगढ़। प्राथमिक विद्यालय के समीप गंदगी को लेकर ग्रामीणों में गुस्सा दिखा है। इस बाबत ग्रामीणों ने डीएम से शिकायत भी दर्ज करायी है। लक्ष्मणपुर विकासखण्ड के कैथा डांड़ी बरदैत सिंधौर निवासी तीर्थराज पटेल आदि ने डीएम को शिकायती पत्र देकर कहा है कि गांव में सफाई कर्मचारी के पिछले वर्ष जुलाई मे स्थानान्तरण होने के बाद नवीन तैनाती की गयी। इसके बावजूद गांव की नाली व खडण्जे पर गंदगी है। शिकायत के मुताबिक प्राथमिक विद्यालय के समीप गंदगी होने से नालियां बजबजा उठी हैं। समस्या के कारण स्कूली बच्चों के साथ ग्रामीणों में भी संक्रमण की बीमारी फैल रही है। ग्रामीणों ने डीएम को शिकायती पत्र देकर साफ सफाई के साथ जिम्मेदारों के खिलाफ कार्रवाई की आवाज उठायी है।

प्रभात एकेडमी के वार्षिकोत्सव में बच्चों ने प्रस्तुत किये सांस्कृतिक कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रभात एकेडमी में वार्षिकोत्सव शुक्रवार को आयोजित किया गया। वार्षिकोत्सव के मुख्य अतिथि परियोजना निदेशक एवं विशिष्ट अति के रूप में डा0 पियूषकान्त शर्मा व शिशिर खरे रहे।

वार्षिकोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते बच्चे।

वार्षिकोत्सव में लोवर केजी के बच्चों ने गुरलिया हे राधा पर मनमोहक हक प्रस्तुति देकर अभिभावक का मन मोह लिया। केजी द्वितीय के बच्चों ने वेलकम सांगम की प्रस्तुति देकर लोगों को आनंदित किया। कक्षा-1 के बच्चों ने हनुमान चालिसा की प्रस्तुति देकर लोगों को भाव विभोर किये। इस अवसर पर विनोद श्रीवास्तव, अरविन्द मिश्रा, पूनम तिवारी, अमरजीत सिंह, हरिकेश, अन्जू, एकता, आस्था, सारा, खुशबू, सुनीता, नेहा, मधु, नैन्सी आदि लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन आशी सिंह, अदिती, प्रतिभा वं फातिमा ने किया।

इलेक्ट्रोरल बांड पर कांग्रेस हमलावर, इसे बताया चुनावी चंदा घोटाला

कांग्रेस जिलाध्यक्ष डा0 लालजी त्रिपाठी ने इलेक्ट्रोरल बांड पर बीजेपी पर किया हमला

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। कांग्रेस इलेक्ट्रोरल बांड पर सरकार पर हमला बोल रही है। कांग्रेस के जिलाध्यक्ष डा0 लालजी त्रिपाठी ने आज कांग्रेस कार्यालय पर आयोजित प्रेसवार्ता में इलेक्ट्रोरल बांड को सबसे बड़ा चुनावी चंदा घोटाला बताया।

उन्होंने कहा कि इस योजना में सफेद तरीके से काला धन एकत्र करने का नायाब तरीका निकाला गया है, जिसका सर्वोच्च न्यायालय के पांच न्यायमूर्तियों ने पर्दाफाश कर दिया है। कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने आगे कहा कि ऐसी कई कम्पनियां हैं, जिन्होंने इलेक्ट्रोरल बांड दान दिया और सरकार से भारी लाभ प्राप्त किया। जिलाध्यक्ष ने आरोप लगाया कि चंदा दो धंधा लो की तर्ज पर कई बुनियादी प्रोजेक्ट के निर्माण में घटिया सामग्री के मामले प्रकाश में आए हैं। जिलाध्यक्ष ने गुजरात में मोरबी ब्रज दुर्घटना का उदाहरण भी दिया। उन्होंने सवाल किया कि क्या उद्योग पतियों व व्यापारियों में डर पैदा कर उनसे चुनावी चंदा लिया गया। जिलाध्यक्ष ने यह भी आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का नारा न खाऊंगा, न खाने दूंगा फिर जुमला साबित हुआ है। उन्होंने कहा कि इसके खुलासे से भाजपा का चेहरा बेनकाब हो गया है। पत्रकारवार्ता में कांग्रेस नेता नीरज तिवारी, जूबाए अध्यक्ष रोहित शुक्ला तथा कांग्रेस के मीडिया प्रभारी वेदान्त तिवारी भी मौजूद रहे।

पत्रकारवार्ता में बोलते डा0 लालजी त्रिपाठी।

आबादी की भूमि को जबरन कर रहे हैं कब्जा शिकायत

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। आबादी की भूमि पर बड़े ससुर के लड़के जबरन आबादी भूमि पर मिट्टी खोदकर कब्जा कर रहे थे जिसका विरोध करने पर उक्त लोग मार पीट कर घायल कर दिए वही मारपीट में दोनों पक्षों को चोटे आई है एक दूसरे पर गंभीर आरोप लगाते हुए प्रार्थना पत्र दिया है पुलिस जांच कर रही हैं। आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र के अतरौरा मीरपुर गांव निवासिनी सोनी हरिजन ने प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया है कि उसकी आबादी की भूमि पर शुक्रवार की सुबह 9:00 बजे के आसपास उसके ससुर के परिजन कब्जा कर रहे थे जिसका विरोध करने के लिए गई तो महिला को भद्दी भद्दी गालियां देते हुए मारने पीटने लगे जिससे वह घायल हो गई वहीं दूसरे पक्ष ने प्रार्थना पत्र देकर मारने पीटने का आरोप लगाया है। पुलिस प्रार्थना पत्र के आधार पर जांच पड़ताल में जुटी हुई है।

प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती: विधायक

दुर्गेश प्रताप सिंह को विधायक ने किया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती, अवसर मिलते ही निखर कर सामने आ जाती है। विश्वनाथगंज विधानसभा के पूरे सुखदेव निवासी दुर्गेश प्रताप सिंह भी इन्हीं में से हैं। विगत दिनों रूस के मास्को शहर में आयोजित मास्को स्टार्स इंटरनेशनल वूशू चैंपियनशिप 2024 में पारंपरिक चीनी मार्शल आर्ट शैली के खेल वूशु में कांस्य पदक जीतने वाले बीएसएफ के युवा कांस्टेबल दुर्गेश प्रताप सिंह को आज विश्वनाथगंज विधायक जीत लाल पटेल ने उनके घर पहुंचकर सम्मानित किया और उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दिया।

इसी महीने मास्को में आयोजित वूशु चैंपियनशिप में 18 देशों ने प्रतिभाग किया था। जिसमें दुर्गेश की भिड़ंत अजरबैजान के खिलाड़ी से हुई, दुर्गेश ने उसे चित कर दिया और कांस्य पदक जीतकर देश का नाम रोशन किया। कटरा गुलाब सिंह क्षेत्र के पूरे सुखदेव गांव के गरीब किसान अंजनी कुमार सिंह,मां उमा सिंह के इकलौते पुत्र दुर्गेश प्रताप स्नातक करने के लिए गांव से प्रयागराज गए थे जहां उनका मार्शल आर्ट की ओर रुझान बढ़ा और भोपाल में प्रशिक्षण प्राप्त किया। दिल्ली में रहकर वुशू के कई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया और जीत हासिल किया। दुर्गेश ने अपनी पहली अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीत कर अपनी प्रतिभा साबित कर दिया। प्रशिक्षक सुमित कुमार के निर्देशन में जल्दी ही जर्जिया में होने वाली प्रतियोगिता में पदक जीतने के लिए तैयारी चल रही है। बीएसएफ में कांस्टेबल के पद पर कार्य करते हुए दुर्गेश प्रताप सिंह ने वूशु जैसे खेल में महारत हासिल करके देश का नाम रोशन किया है। उनकी इस सफलता पर पूरा क्षेत्र उन्हें बधाई दे रहा है।

दुर्गेश प्रताप सिंह को सम्मानित करते विधायक जीतलाल सरोज।

जमीनी विवाद में दो पक्षों में जमकर चले लाठी डंडे पांच घायल

पट्टी, प्रतापगढ़। जमीनी रंजिश के चलते दो पक्षों में जमकर चले लाठी डंडे जिसमें पांच लोग घायल हो गए घायलों की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस अस्पताल ले आई इलाज के बाद दोनों पक्ष एक दूसरे पर आरोप लगाते हुए प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है। कोतवाली क्षेत्र के डेईडीह धौरहरा गांव की रहने वाली ममता देवी ने प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया है कि उसके पड़ोसियों से जमीन का विवाद चल रहा था इस विवाद के चलते बृहस्पतिवार की देर रात्रि पड़ोसी मारने पीटने लगे जिसमें बेटा आजादी वह बहू बीच बचाव करने के लिए आए तो उसे भी लाठी डंडों से मारपीट कर घायल कर दिए। वहीं दूसरे पक्ष से कामता देवी ने प्रार्थना पत्र देकर बताया है कि उसके बेटे दीपक को भी मारपीट कर घायल कर दिए मामले में पीड़ितों द्वारा प्रार्थना पत्र दिया गया है पुलिस प्रार्थना पत्र के आधार पर जांच-पड़ताल में जुटी हुई है।

संयुक्त अधिवक्ता संघ के चुनाव में पांच सौ छत्तीस की अंतरिम मतदाता सूची प्रकाशित, बढ़ी चुनावी सरगर्मी

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। संयुक्त अधिवक्ता संघ के चुनाव को लेकर चुनाव समिति द्वारा शुक्रवार को अंतरिम मतदाता सूची का प्रकाशन किया गया। इसके तहत अभी अंतरिम मतदाता सूची में पांच सौ छत्तीस अधिवक्ताओं को संघ के पदाधिकारियों के निर्वाचन में मतदाता बनने का मौका मिला है।

अंतरिम मतदाता सूची जारी होते ही तहसील मे चुनावी सरगर्मी ने जोर पकड़ लिया। मतदाता सूची में दीवानी एवं तहसील के विधि व्यवसाय करने वाले अधिवक्ताओं को सूचीबद्ध किया गया है। चुनाव समिति की हुई बैठक में अंतरिम मतदाता सूची पर आम सहमति बनी। बैठक की अध्यक्षता करते हुए समिति के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने बताया कि अंतरिम मतदाता सूची को लेकर होली बाद दो दिनों तक आपत्ति का अवसर दिया गया है। समिति के प्रवक्ता विकास मिश्र के मुताबिक आगामी सत्ताईस एवं अटठाईस मार्च को आपत्ति दाखिल की जा सकती है। समिति तीस मार्च को इसकी पुर्नसमीक्षा कर अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन करेगी। बैठक का संचालन महामंत्री देवी प्रसाद मिश्र ने किया। बैठक में एल्डर समिति के अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद मिश्र, राव वीरेन्द्र सिंह, राममोहन सिंह, रामलगन यादव, शिवाकांत उपाध्याय, अजय शुक्ल गुडडू, लाल राजेन्द्र सिंह, बेनीलाल शुक्ल, टीपी यादव, राधारमण शुक्ल, कालिका प्रसाद पाण्डेय, संतोष पाण्डेय, वीरेन्द्र सिंह अगई आदि रहे।

नमाज को लेकर अर्धसैनिक बाल के साथ पुलिस ने किया फ्लैग मार्च

पट्टी में हत्या का शीघ्र होगा खुलासा: एडिशनल एसपी

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ। पट्टी मे शांति व्यवस्था के मद्दे नजर शुक्रवार को एडिशनल एसपी पूर्वी दुर्गेश कुमार सिंह कोतवाल पट्टी आलोक कुमार अर्धसैनिक बल के साथ पट्टी कोतवाली से चमन चैक, ढखवा मोड, उड़ैयाडीह मोड़, रायपुर रोड, और पट्टी घटनास्थल तक फ्लैग मार्च किया। बता दे कि बृहस्पतिवार को पट्टी में दुकानदार नईम की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। जिससे दुकानदारों में भारी आक्रोश था।

शुक्रवार को होली के पर्व के मद्देनजर और नमाज को देखते हुए पुलिस प्रशासन और अर्ध सैनिक बल पट्टी में शांति व्यवस्था बनाए रखने हेतु एक्शन मोड में आ गई है। इस दौरान एडिशनल एसपी पूर्वी दुर्गेश कुमार सिंह ने कहा कि पट्टी में दुकानदार की गोली मारकर हत्या करने वाले हत्यारे बच नहीं पाएंगे उन्हें शीघ्र ही पड़कर जेल भेजा जाएगा। कोतवाल पट्टी आलोक कुमार ने कहा कि हत्यारे शीघ्र पुलिस की गिरफ्त में होंगे और उन्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जाएगी। और चुनाव आचार संहिता और धारा 144 लागू होने के बाद भी अगर किसी ने कानून को हाथ में लेने की कोशिश किया तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। कोतवाल पट्टी ने पट्टी की समस्त जनता से शांति व्यवस्था बनाए रखने और पुलिस का सहयोग करने की अपील किया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से एडिशनल एसपी पूर्वी दुर्गेश कुमार सिंह, कोतवाल पट्टी आलोक कुमार, अर्धसैनिक बल, पुलिस के जवान सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

पट्टी नगर में फ्लैग मार्च करते एडिशनल एसपी।

मानवीय कल्याण के लिए भगवान् का अवतार शाश्वत संदेश: सचिन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर के नेताजीपुरम् के जंगली वीर बाबा धाम में हो रही श्री शिवशक्ति नारायण महा यज्ञ में समापन के दिन शुक्रवार को श्रीमदभागवत कथा के श्रवण को लेकर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमडी दिखी। कथाव्यास सचिन कृष्ण जी महराज ने कहा कि श्रीमदभागवत कथा हमें सदैव भगवान श्रीकृष्ण के नीति पथ का बोध कराती है। उन्होनें कहा कि राम, शिव और कृष्ण भारतीय संस्कृति के शाश्वत संदेश हैं। उन्होने कहा कि देवाधिदेव महादेव ने जगत के उद्धार के लिए विषपान कर संसार को मायामोह को त्याग कर मानवीय कल्याण के लिए कुरीतियों से बचने का मार्ग दिखलाया है। उन्होने कहा कि शक्ति की पूजा वही होती है, जिस शक्ति में शिव के रूप में संसार के कल्याण का सुंदर भाव निहित हुआ करता है। कथा के संयोजक पं. शिवाकान्त द्विवेदी स्वामी जी ने श्रद्धालुओं की ओर से व्यासपीठ का पूजन अर्चन किया। वहीं श्रद्धालुओं ने कथा को लेकर धाम में श्री रूद्राभिषेक में भी लोक कल्याण की कामना की। नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, वरिष्ठ अधिवक्ता ज्ञानप्रकाश शुक्ल तथा संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश ने कथाव्यास का नगर के लोगों की ओर से सारस्वत सम्मान किया। कथा यज्ञ को लेकर आज शनिवार को धाम में भण्डारे का भी आयोजन किया गया है। आध्यात्मिक आयोजन को लेकर वेदीपूजन तथा श्री दुर्गा सप्तसती पाठ के साथ भजन संकीर्तन में भी श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध देखा गया। इस मौके पर सभासद पन्नेलाल पाल, आईपी मिश्र, देवी प्रसाद मिश्र बेलौरा, पंकज शुक्ल, ओमप्रकाश पाण्डेय, विन्देश्वरी प्रसाद शुक्ल, कान्हा शुक्ला आदि रहे।

जंगली वीर बाबा धाम के आध्यात्मिक आयोजन में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

अवैध कर वसूली पर कार्रवाई बनी पुलिस के लिए चुनौती

टैक्सी स्टैंड पर चालकों से करता है दबंगई, युवक का वीडियो हुआ वायरल

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। अवैध तरीके से टैक्सी चालकों से हो रही वसूली पर कार्रवाई करना पुलिस के लिए किसी चुनौती से कम नहीं है। अभद्रता से वसूली करते हुए युवक का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। अब क्या पुलिस उक्त युवक पर कार्रवाई करेगी या नही?

स्थानीय नगर स्थिति टैक्सी स्टैंड पर अवैध तरीके से एक युवक चालकों से अवैध तरीके से वसूली कर रहा है।इसी बात को लेकर आए दिन कोई न कोई विवाद होता रहता है। दबंग युवक चालक पर आरोप लगा रहा है कि पुलिस के सामने बात होने के बाद भी यह पैसा नही दे रहा है। जब कि चालक पैसा चुकता करने की बात कह रहा है।इसी बात पर अवैध वसूली करने वाला युवक चालक के साथ अभद्र व्यवहार पर उतारू हो गया।चालक को पीटने के साथ टैंपो कहां चलाओगे कि धमकी देने लगा।दबंग युवक के मुताबिक रोड पर चलने के लिए मैजिक का 600 व टैंपो का 300 रुपए देना पड़ता है। उक्त मामले का किसी ने वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर डाल दिया। वायरल वीडियो से युवक की दबंगई साफ नजर आ रही है।युवक की दबंगई से टैक्सी चालक परेशान हो गए है। चालकों की मानें तो यह रोज की दशा है।हम लोग मेहनत करके भी परिवार का पेट नही पाल पा रहे है। आखिर किसकी सहमति पर कोतवाली के बगल स्थित टैक्सी स्टैंड पर इस तरह से दबंगई से अवैध वसूली की जा रही है। इस संबंध में कोतवाल से व्हाट्सएप के जरिए बात की गई लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।

शिकायत पर हो जाती है कार्रवाई

लालगंज, प्रतापगढ़। युवक के विरुद्ध कहीं शिकायत करो तो उल्टा हम लोगो के ऊपर ही कार्रवाई का डंडा चल जाता है। पेट के लिए कमाना है तो दबंग युवक की मांगों को पूरी करना हम सबकी मजबूरी बन गई है। आए दिन उक्त युवक किसी न किसी बात को लेकर अभद्र व्यवहार करता रहता है।

पुलिस पर पथराव का आरोपी धराया

लालगंज, प्रतापगढ़। पुलिस पर पथराव को लेकर हत्या के प्रयास समेत गंभीर धाराओं में वांछित आरोपी को शुक्रवार की सुबह पुलिस ने धर दबोचा। संग्रामगढ़ प्रभारी निरीक्षक सत्येन्द्र सिंह भदौरिया तथा लालगंज के उप निरीक्षक कबीरदास मुकदमे मे वांछितो की तलाश मे फोर्स के साथ निकले थे। सूचना मिलने पर पुलिस टीम ने लालगंज थाने के कटरा दुग्धा निवासी मुकदमे मे वांछति माताबदल के पुत्र खेमचंद्र पटेल को धर दबोचा। पुलिस ने आरोपी को हिरासत मे लेकर दोपहर बाद जेल भेज दिया। आरोपी के खिलाफ हत्या के प्रयास समेत बलवा व सरकारी कामकाज मे बाधा एवं पथराव समेत कई गंभीर धाराओ मे पुलिस ने केस दर्ज किया है। बतादें जनवरी माह में लालगंज कोतवाली के कटरा दुग्धा के पास दुर्घटना में एक महिला की मौत हो गयी थी। नाराज परिजनो के साथ ग्रामीणों ने जाम लगा दिया था। मौके पर पहुंचे सीओ रामसूरत सोनकर ने समझाने बुझाने का प्रयास किया तो कुछ लोगों ने पुलिस पर पथराव कर

हत्या के आरोप में दो को आजीवन कारावास

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अपर सत्र न्यायाधीश नंद प्रताप ओझा ने अभियुक्तगण राजू उर्फ राजेश केसरवानी निवासी हरनामगंज, कुण्डा, प्रतापगढ़ व विनोद कुमार साहू पुत्र सुरेश कुमार साहू करेंटी रोड, कुण्डा, प्रतापगढ़ को हत्या के आरोप में आजीवन कारावास तथा 50 हजार का अर्थदण्ड की सजा सुनाई। अर्थदण्ड की राशि न अदा करने पर एक वर्ष का अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा। अभियोजन पक्ष के अनुसार वादिनी मुकदमा कमलेश देवी पत्नी कैलाश नाथ केसरवानी ने 18 जनवरी 2024 को थाना कुण्डा में तहरीर दिया कि उनका लड़का सुभाष केसरवानी रात आठ बजे घर से निकल गया था। उसके बाद सुभाष का कोई पता नहीं चल सका। रात बजे से सुभाष की पत्नी ने फोन किया कि खाना खाकर दस मिनट में आ रहा हूं लेकिन वह रात में नहीं आए। उनका फोन रात में बंद हो गया था। इसके बाद सुभाष का कोई पता नहीं चल सका। सुभाष के बारे में घर के लोग अनहोनी की आशंका से आशंकित हैं। इसकी पैरवी शासकीय अधिवक्ता राकेश प्रताप सिंह ने दी।

ग्लोरियस पब्लिक स्कूल के बच्चों ने क्वीज कम्पटीशन में किया प्रतिभाग

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर के ग्लोरियस पब्लिक स्कूल मुरस्सापुर नवाबगंज के स्कूल के बच्चो ने शुक्रवार को आयोजित क्वीज कम्पटीशन मे प्रतिभाग लिया जिसमे पंच रत्न टीम मे वसु शुक्ला, सुनैना, सारा, फातिमा, अर्सिता, स्नेहा विनर रही और मैग्नेंट ब्रेन टीम में सानिया, नूर फातिमा, अर्पिता मौर्या, मीरा शुक्ला व आयुषी रनर रही।

विजयी व रनर बच्चों के साथ स्कूली स्टाफ।

इस मौके पर प्रबंधक निजाम सर, प्रिंसपल इरफ़ान अंसारी, हिमांशु श्रीवास्तव, दीपाकर द्विवेदी, आशुतोष तिवारी, अक्षय सोनकर, मंजूला तिवारी, आकांक्षा पांडेय, अनुपम व लवली शुक्ला मौजूद रहे।

बाइक की टक्कर में होमगार्ड समेत दो घायल, रेफर

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। आमने सामने हुई बाइक की टक्कर मे होमगार्ड समेत दो गंभीर रूप से चुटहिल हो गये। घायलो को प्रारंभिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। लालगंज कोतवाली के अनेहरा निवासी शिवकुमार शुक्ल पुत्र हरिशंकर शुक्ल होमगार्ड है। उनकी डयूटी लालगंज एसडीएम के साथ लगी हुई है। शुक्रवार को शिवकुमार घर से लालगंज कोतवाली बाइक से आ रहे थे। लालगंज कालाकांकर हाइवे पर बेलहा के समीप कान का पुरवा के पास एक मैरेज हॉल के सामने पहुंचे थे कि सामने से रामपुर बावली के ही लखरईयां निवासी ओमप्रकाश पटेल का पुत्र बबलू पटेल बाइक से आ रहा था। दोनों बाइक आमने सामने टकरा गयी। इससे होमगार्ड शिवकुमार तथा बबलू पटेल चुटहिल हो गये। घायलावस्था में दोनो को लोगों ने लालगंज ट्रामा सेण्टर इलाज के लिए भेजवाया। यहां प्रारंभिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने दोनों घायलो को जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

खबर संक्षेप

होली त्यौहार पर आबकारी की थोक फुटकर बिक्री के समस्त दुकाने बंद रखने के आदेश

कौशाम्बी। जिला मजिस्ट्रेट राजेश कुमार राय ने उ0प्र0 आबकारी अधिनियम-1910 की धारा- 59 के अन्तर्गत प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करते हुए जनपद में होली त्यौहार पर शान्ति एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने के उद्देश्य से जनपद में आबकारी की थोक/फुटकर बिक्री के समस्त अनुज्ञापनां यथा-देशी शराब/विदेशी मदिरा/बीयर/भांग एवं एफ.एल-16/17 आदि की दिनांक 24.03.2024 (होलिका दहन) की रात्रि 10 बजे से दिनांक 25.03.2024 को रात्रि 10 बजे तक बंद रखने का आदेश दिया है। इस बंदी के लिए अनुज्ञापियों को किसी प्रकार का प्रतिफल अथवा छूट देय नहीं होगा। उन्होंने सम्बन्धित अधिकाकरियां को आदेश का अनुपालन कड़ाई से सुनिश्चित कराने के निर्देश दियें हैं।

सीडीओ ने विशेष संचारी रोग नियन्त्रण एवं दस्तक अभियान के सम्बन्ध में की बैठक

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। मुख्य विकास अधिकारी डॉ. रवि किशोर त्रिवेदी द्वारा मुख्य चिकित्साधिकारी सभागार में विशेष संचारी रोग नियन्त्रण व दस्तक अभियान तथा संचारी रोगों एवं दिमागी बुखार पर प्रभावी नियन्त्रण के सम्बन्ध में सम्बन्धित अधिकारियों के साथ बैठक की गई। बैठक में सीएमओ डॉ. सुष्पेन्द्र कुमार ने बताया कि संचारी रोग नियन्त्रण अभियान 01 अप्रैल से 30 अप्रैल 2024 तक व दस्तक अभियान दिनांक 10 अप्रैल से 30 अप्रैल 2024 तक संचालित किया जायेंगा।

जिला मलेरिया अधिकारी डॉ. अनुपमा मिश्रा ने बताया कि संचारी रोग नियन्त्रण अभियान के तहत विभिन्न विभागों द्वारा कार्य किया जाना है। चिकित्सा एंव स्वास्थ्य विभाग द्वारा संचारी रोगों तथा दिमागी बुखार केसेज की निगरानी (सर्विलान्स)। फ्रन्ट लाइन वर्कर्स द्वारा लक्षणयुक्त व्यक्तियों की सूची में रोगियों के लक्षण के अनुसार रोगों की जॉच की व्यवस्था। वाहक नियंत्रण गतिविधियाँ-ग्रामीण क्षेत्रों में वाहक के घनत्व का आंकलन, स्रोतों में कमी, लावारोधी गतिविधियाँ तथा आवश्यकता अनुसार फॉगिंग आदि कार्यवाही की जायेंगी। दिमागी बुखार एवं अन्य वेक्टरजनित रोगों तथा जल जनित रोगों के विषय में प्रचार-प्रसार एवं व्यवहार परिवर्तन गतिविधियाँ की जायेंगी। इसी प्रकार नगर विकास विभाग द्वारा-नगरीय क्षेत्रों में वातावरणीय तथा व्यक्तिगत स्वच्छता के उपायों, खुले में शौच न करने, शुद्ध पेयजल के प्रयोग तथा मच्छरों की रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान संचालित करना। खुली नालियों को ढकने की व्यवस्था, नालियों/कचरों की सफाई करवाना। शहरी क्षेत्रों में फॉगिंग करवाना एवं सड़कों के किनारे उगी वनस्पतियों को नियमित रूप से हटाया जाना आदि कार्यवाही की जायेंगी। पंचायतीराज विभाग/ग्राम विकास विभाग द्वारा-ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम निगरानी समितियों के माध्यम से दिमागी बुखार एवं अन्य वेक्टर जनित रोगों तथा जल जनित रोगों के विषय में निरन्तर जागरूकता स्थापित करना। ग्राम स्तर पर साफ-सफाई, हॉथ धोना, शौचालय की सफाई तथा घर से जल निकासी के लिए जन-जागरण के लिए प्रचार-प्रसार। वीएचएसएनसी के माध्यम से दिमागी बुखार एवं अन्य वेक्टर जनित रोगों तथा जल जनित रोगों के रोकथाम के लिए क्या करें, क्या न करेंह्न का सघन प्रचार-प्रसार किया जायेंगा। पेयजल स्रोतों/संसाधनों से शौचालयों की दूरी के उपाय, शौचालयों/सीवर से पेयजल प्रदूषित न होने देने के लिए आवश्यक उपाय, जलाशयों एवं नालियों की नियमित सफाई, ग्रामीण क्षेत्रों में मनरेगा फण्ड से एण्टीलार्वा छिड़काव की व्यवस्था, जल निकासी एवं साफ-सफाई, वाटर सील्ड शौचालयों की आवश्यकता, ग्राम स्तर पर कचरा निस्तारण एवं प्रबन्धन व्यवस्था का विकास एवं सभी संवेदनशील ग्रामों में स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत ग्रामों में प्रत्येक मकान में शौचालय का निर्माण कर ग्रामों को खुले में शौच से मुक्त बनाना आदि किया जायेगा। पशु पालन विभाग द्वारा-सूकर पालकों को अन्य व्यवसाय जैसे-पोल्ट्री उद्योग, को अपनाने के लिए जागरूक एवं प्रेरित करना, यथासंभव सूकरबाड़े को मानव आबादी से दूर स्थापित करवाना एवं सूकर पालकों को सूकर बाड़े की साफ-सफाई, कीटनाशक छिड़काव एवं मच्छररोधी जाली से ढकने के लिए प्रशिक्षित किया जाना आदि किया जायेगा। बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग-ऑगनबाड़ी कार्यत्रियों के द्वारा अपने क्षेत्र के समस्त कुपोषित तथा अति कुपोषित बच्चों की सूची बनाकर उनको उचित पोषाहार उपलब्ध कराना तथा आवश्यकता होने पर पोषण पुनर्वास केन्द्रों पर उपचार तथा पोषण पुनर्वास के लिए भेजना एवं आशा कार्यकर्त्री द्वारा संचारी रोग नियन्त्रण एवं दस्तक अभियान के लिए क्षेत्र में सम्पादित की जा रही समस्त गतिविधियों एवं गृह भ्रमण में ऑगनबाड़ी कार्यकत्री आशा कार्यकर्त्री के साथ रहते हुए पूर्ण सहयोग प्रदान करना आदि की जायेंगी। शिक्षा विभाग द्वारा-शिक्षकों द्वारा अभिभावकों का दिमागी बुखार एवं अन्य वेक्टर जनित रोगों तथा जल जनित रोगों से बचाव, रोकथाम एवं उपचार के लिए संवेदीकरण किया जायेंगा, विशेषकर सुरक्षित पीने का पानी, शौचालय का प्रयोग, खुले में शौच के नुकसान पर जोर दिया जाय, हर बुखार खतरनाक हो सकता है, दिमागी बुखार के कारण क्या है, बुखार होने पर क्या करें, क्या न करें के विषय में जागरूक किया जायेंगा एवं छात्रों की गतिविधियों में उनके अभिभावकों की भी सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए इस अभियान के लिए छात्रों को दिये गये असाइनमेंट्स, यथा-पोस्टर, निबंध इत्यादि पर अभिभावकों से भी दो पंक्तियों की टिप्पणी लिखने का आग्रह किया जाये आदि कार्यवाही की जायेगी। दिब्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा-जनपद स्तर पर स्थापित डिस्ट्रिक्ट डिसेबिलिटी रिहैबिलिटेशन सेन्टर का सुदृढ़ीकरण किया जायेंगा, जिससे इन विकलांग बच्चों को इस योग्य बनाया जा कें कि वे अन्य शिक्षा संस्थानों में सामान्य बच्चों के साथ ही शिक्षा ग्रहण कर सकें सहित आदि कार्यवाही की जायेंगी। कृषि एवं सिंचाई विभाग द्वारा-जमे हुए पानी में मच्छरों के प्रजनन को रोकने तथा सिंचाई के वैकल्पिक उपायों पर अपनी तकनीकी सलाह देना, मच्छर रोधी पौधों का उगाया जाना एवं खेतों में मच्छरों के प्रजनन को रोकने/कम करने के लिए नई तकनीकों के प्रयोग के लिए मदद उपलब्ध कराना आदि कार्यवाही की जायेंगी। मुख्य विकास अधिकारी ने सभी सम्बन्धित विभागीय अधिकारियों को कार्ययोजना बनाकर कार्यों को सम्पादित करने के निर्देश दियें। उन्होंने जिला पंचातयराज अधिकारी एवं सभी ई0ओ0 को अपने-अपने क्षेत्र में बेहतर साफ-सफाई की व्यवस्था, फागिंग एवं एन्टीलार्वा का छिड़काव नियमित रूप से कराने के निर्देश दियें। इसके साथ ही उन्होंने सभी ई0ओ0 एवं डी0पी0आर0ओ0 से कहा कि विशेष ध्यान दिया जाय कि जनपद में कहीं पर डेगूँ के केस आते हैं तो वहाँ पर तत्काल एन्टीलार्वा का छिड़काव, फागिंग एवं साफ-सफाई सुनिश्चित करायी जाय। उन्हांने सभी प्रभारी चिकित्साधिकारियों को डेगूँ/बीमारी फैलने के केस आने पर तत्काल मौके पर जाकर चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध कराने के निर्देश दियें।इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. सुष्पेन्द्र कुमार सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने जिला निर्वाचन अधिकारी को प्रशस्ति-पत्र देकर किया पुरस्कृत

जिला निर्वाचन अधिकारी को मतदाता सूची प्रबन्धन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए किया गया पुरस्कृत

कौशाम्बी। मुख्य निर्वाचन अधिकारी,उ.प्र. नवदीप रिणवा द्वारा जिला निर्वाचन अधिकारी, कौशाम्बी को कौशाम्बी जनपद में मतदाता सूची प्रबन्धन के क्षेत्र में उल्लेखनीय, उत्कृष्ट एवं अभिनव कार्य के लिए प्रशस्ति-पत्र देकर पुरस्कृत किया गया हैं उप जिला निर्वाचन अधिकारी अरूण कुमार गोंड एवं अपर जिलाधिकारी प्रबुद्ध सिंह ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी की तरफ से जिला निर्वाचन अधिकारी को मोमेन्टों एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया। बतादेंकि, जनपद का पूर्व में जेण्डर रेसियों 883 था, संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम की अवधि में छूटे हुए पात्र महिलाओं का नाम अधिक से अधिक जोड़ा गया, जिससे जेण्डर रेसियो बढ़कर 887 हो गया हैं। संक्षिप्त पुनरीक्षण अवधि में 36582 नये मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में दर्ज किया गया हैं। संक्षिप्त पुनरीक्षण अवधि में 5326 फार्म-8 प्राप्त करते हुए मतदाता सूची में संशोधन की कार्यवाही की गई।

मतदाता जागरूकता हेल्पलाइन कन्ट्रोल रूम स्थापित हेल्पलाइन नम्बर-9454457379

कौशाम्बी। जनपद कौशाम्बी में जनपद स्तर पर जिला हेल्पलाइन कंट्रोल रूम कार्यालय जिला विद्यालय निरीक्षक कौशाम्बी में स्थापित किया गया है। जनपद स्तरीय मतदाता जागरूकता कन्ट्रोल रूम का हेल्पलाइन नम्बर-9454457379 हैं। प्रभारी अधिकारी स्वीप/मुख्य विकास अधिकारी डॉ. रवि किशोर त्रिवेदी ने जनपद स्तरीय मतदाता जागरूकता हेल्पलाइन कन्ट्रोल रूम का जिला विद्यालय निरीक्षक कौशाम्बी को नोडल नामित करते हुए निर्देशित किया है कि अपने अधीनस्थ कार्मिकों की ड्यूटी लगाकर निरन्तर जनपद स्तरीय मतदाता जागरूकता कन्ट्रोल रूम संचालित कराना सुनिश्चित करेंगे।

प्रत्याशी ऑनलाइन भी कर सकतें हैं नामांकन, साथ ही रैली, वाहन, कार्यालय खोलने की प्राप्त कर सकतें हैं अनुमति

कौशाम्बी। भारत निर्वाचन आयोग की ओर से लोकसभा सामान्य निर्वाचन के प्रत्याशियों को अधिक से अधिक ऑनलाइन सुविधायें प्रदान की जा रहीं हैं। प्रत्याशी आयोग की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन नामांकन का आवेदन कर सकतें हैं। इसके साथ ही प्रत्याशी जमानत राशि की निर्धारित धनराशि भी ऑनलाइन जमा कर सकतें हैं। अगर प्रत्याशी ऑनलाइन नामांकन आवेदन करतें हैं तो ऑनलाइन प्रक्रिया पूरी करने के बाद ऑनलाइन नांमाकन-पत्र एवं सम्बन्धित समस्त अभिलेखों की हार्डकापी और जमानत राशि की रसीद के साथ रिटर्निंग अफसर के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। इसके साथ ही प्रत्याशी वेबसाइट पर ऑनलाइन ही रैली, वाहन, कार्यालय खोले जाने आदि की अनुमति भी प्राप्त कर सकतें हैं। खास बात यह भी हैं कि भारत निर्वाचन आयोग की ओर से नामांकन का आवेदन करने के सभी पुराने विकल्प भी खुले रखें गये हैं। यह प्रत्याशियों पर निर्भर करेंगा कि वह आयोग का कौन सा विकल्प चुनेंगे। भारत निर्वाचन आयोग के निदेर्शानुसार निर्वाचन लडने वाले प्रत्येक अभ्यर्थी को निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण के लिए नांमाकन-पत्र दाखिल करने के एक दिन पूर्व नया बैंक खाता खोलना अनिवार्य है। नांमाकन-पत्र प्रस्तुत करने के साथ इसकी लिखित सूचना रिटर्निंग आफिसर को देनी होगी। अभ्यर्थी बैंक खाता अपने नाम या अपने निर्वाचन अभिकर्ता के साथ सयुक्त नाम से खोल सकता है।

जालसाजों ने नशीला पदार्थ पिलाकर बुजुर्ग के खाते से उड़ा दिया चार लाख रुपए

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम बरियावां के एक बुजुर्ग को जालसाजों ने अपने जाल में फंसाकर उसे नशीला पदार्थ पिलाकर चेक में हस्ताक्षर करवा कर बैंक से चार लाख रुपए उड़ा दिया ठगी का शिकार बुजुर्ग ने अपना खाता चेक किया तो बुजुर्ग के होश उड़ गए जिसकी सूचना पीड़ित बुजुर्ग ने चरवा थाना में दी है। मिली जानकारी अनुसार ग्राम बरियावाँ के निवासी शिवसरन मौर्या पुत्र महादेव ने चरवा थाना प्रभारी को तहरीर देकर बताया कि घटना 20 मार्च की ही है जब वह मिट्टी का काम करने वाला ठेकेदार राजू पांडेय पुत्र राम प्रताप निवासी ग्राम जयंतीपुर थाना सरायअकील का व्यक्ति शिवसरन के पास आया और मिट्टी गिराने के लिए शिवसरन से बातचीत किया तथा राजू के साथ में एक और युवक था जिसका नाम ठाकुर था उस वक्त वह भी मौजूद था। जो की पूरा पिलर बीम सहित मिट्टी की भराई के लिए शिवशरण से दो लाख में ठेका तय हुआ। जिसमें राजू पांडे और साथी ठाकुर ने शिवशरण के प्लाट पर 12 ट्राली मिट्टी गिरा दिए और पिलर के लिए गड्ढा की खुदाई के लिए मोनू दिवाकर पुत्र अज्ञात निवासी ग्राम डहिया थाना सराय अकील के द्वारा पूरे प्लांट में गड्ढे की खुदाई कर दिया गया। जिसमें राजू पांडे के साथी ठाकुर द्वारा बताया गया की एक लाख रुपए दे दीजिए हम लोग फर्मा ले आकर आपका पूरा काम पिलर सहित कर देते हैं । उसके बाद दिनांक 21 मार्च को उक्त विपक्षी ठाकुर शिवसरण के घर आया कहा कि मुझे एक लाख रुपए दे दीजिए। तब शिवशरण को ठाकुर अपने मोटरसाइकिल से बैठाकर नदी की तरफ से ले गया तो रास्ते में शिवशरण को मुगैरा खिलाकर सिगरेट पिला दिया। उसके बाद शिवसरन से कहा कि आओ घर चलते हैं अपनी बैंक की पासबुक ले लो एक लाख निकालना है। उक्त विपक्षी ठाकुर ने शिवशरण को अपने साथ बैंक आफ बडौदा शाखा चौराहडीह ले गया। शिवशरण से शिवचरण के नाम की चेक बुक लिया और एक लाख की जगह चार लाख भरकर शिवशरण की हस्ताक्षर बनाकर, ठाकुर ने चार लाख रुपए निकाल कर लेकर चला गया। जालसाजों द्वारा शिवशरण को नशीला पदार्थ सिगरेट में मिलाकर पिला दिया जिससे शिवसरन का दिमागी संतुलन खराब हो गया। उसके बाद शिवसरन किसी तरह से अपने घर आकर अपने बेटे विजय से सारी बात बताई तो शिवसरन का लड़का अपने पिता के खाता संख्या को चेक कराया उसमे से चार लाख रूपए निकाला गया था। पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुट गई हैं और पीड़ित को न्याय दिलाने का आश्वासन दिया है।

पांच दिवसीय प्रवेश निपुण के प्रशिक्षण शिविर का समापन

कौशाम्बी। महामाया राजकीय महाविद्यालय कौशाम्बी में चल रहे पांच दिवसीय प्रवेश निपुण के प्रशिक्षण शिविर का समापन दिनांक 22/03/2024को हुआ। महाविद्यालय परिसर में चल रहे प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रशिक्षुओं को विभिन्न प्रकार का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के प्रथम दिन प्रशिक्षुओं को ध्वज शिष्टाचार, झंडागीत , प्रार्थना, टोली नियम, पेट्रोलिंग ड्यूटी इत्यादि प्रशिक्षण दिया गया, प्रशिक्षण के दूसरे दिन प्रशिक्षुओं को शिविर के नियम, आकस्मिक गांठ बनाना, विभिन्न प्रकार की तालियां स्वागत ताली, गुड ताली,धन्यवाद ताली , का प्रशिक्षण दिया गया, प्रशिक्षण के तीसरे दिन प्रशिक्षुओं को प्राथमिक चिकित्सा,हाइकिंग,आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया गया, प्रशिक्षण के चतुर्थ दिन प्रशिक्षुओं को टेंट बनाना, बिना थाली बिना बर्तन के भोजन बनाना आदि प्रशिक्षण दिया गया , प्रशिक्षण शिविर के पांचवे और अंतिम दिन प्रशिक्षुओं की सर्वप्रथम सर्वधर्म सभा कराई गई तत्पश्चात कैंप फायर किया गया जिसमें प्रशिक्षुओं टोलियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उसके बाद महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ अरविंद कुमार ने प्रशिक्षुओं के प्रशिक्षण शिविर का निरीक्षण किया और प्रशिक्षुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि रोवर/रेंजर्स का आदर्श वाक्य है सेवा करो। अतः प्रत्येक परिस्थिति में एक रोवर अथवा रेंजर्स को अपना सेवा धर्म नहीं भूलना चाहिए। और देश और समाज की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। तत्पश्चात प्रशिक्षुओं की दीक्षा संस्कार किया गया। और प्रशिक्षण शिविर का औपचारिक समापन की घोषणा प्राचार्य द्वारा की गईं। इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन महाविद्यालय के रेंजर प्रभारी रीता दयाल, एवम रोवर प्रभारी डॉ अमित शुक्ला द्वारा किया गया, प्रशिक्षण शिविर का संचालन श्यामबाबू जिला संगठन कमिश्नर स्काउट, ने किया। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ अनिल कुमार, डॉ अजय कुमार,डॉ नीलम बाजपेई, डॉ भावना केशरवानी, डॉ पवन कुमार, डॉ आनंद कुमार,डॉ रमेश चंद्रा, डॉ अमित कुमार, डॉ एवम महाविद्यालय के समस्त कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

महामाया राजकीय विद्यालय, ओसा में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का किया गया आयोजन

मतदाताओं से किया गया अपील, 20 मई को अवश्य करें मतदान

कौशाम्बी लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 में स्वीप के अन्तर्गत जिला विकास अधिकारी विजय कुमार की अध्यक्षता में महामाया राजकीय विद्यालय,ओसा के परिसर में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिला विकास अधिकारी ने उपस्थित लोगों को मतदाता शपथ ह्नहम भारत के नागरिक लोकतंत्र में अपनी पूर्ण आस्था रखते हुए यह शपथ लेते हैं कि हम अपने देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं की मयार्दा को बनाये रखेंगे तथा स्वतन्त्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, निर्भीक होकर, धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगेह्न दिलायी। उन्होंने उपस्थित लोगों से अपील की कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 में जनपद में मतदान दिवस 20 मई 2024 को अवश्य मतदान करें तथा अपने आस-पास के लोगों को भी मतदान करने के लिए प्रेरित करें। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से भी लोगों को मतदान के प्रति जागरूक किया गया इस अवसर पर खण्ड विकास अधिकारी देवेन्द्र कुमार ओझा सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें। बतादेंकि, हयातउल्ला चतुवेर्दी स्वीप के अन्तर्गत मतदाताओं को जागरूक करने के लिए विभिन्न नारा यथा-सारे काम छोड़ दो-सबसे पहले वोट दो, 18 वर्ष की उम्र कर ली पार-मिला वोट का अब अधिकार, भारत की शान-हमारा मतदान, जन जन की यही पुकार-वोट डालो अबकी बार, वोट देना गर्व है-जनता का यह पर्व है, लोकतंत्र की यही परिभाषा-मतदाता है हर मानस की आशा, स्वस्थ लोकतंत्र की यही पहचान-शत प्रतिशत हो मतदान, वोट डालने जाएंगे-सशक्त लोकतंत्र बनाएंगे, हम जागरूक मतदाता हैं-भारत तंत्र निमार्ता हैंह्न आदि नारे बनाकर मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक कर रहें हैं।

भट्ठा मजदूर को पीटकर दबंगो ने किया लहुलुहान

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के रायभान का पूरा गांव के रहने वाले एक भट्ठा मजदूर को पड़ोस के ही रहने वाले कुछ दबंगो ने घर पर चढ़कर बेरहमी से पीट दिया जिसकी सूचना पीड़ित द्वारा चरवा थाना पुलिस को दी गई मिली जानकारी के मुताबिक इन्द्रराज पासी पुत्र स्व जगपत पासी काजीपुर गांव के एक भट्ठा पर मजदूरी करता है बीते गुरुवार को जब वह मजदूरी करके अपने घर आकर बैठा था। उसी समय करीब 9 बजे रात में उसके गांव के ही रहने वाले भुल्लन पुत्र बिंदा व सुमित पुत्र लोचन पण्डित व घिग्गी पुत्र भुल्लन एकराय होकर सभी लाठी डंडा से लैस होकर, इन्द्रराज के दरवाजे के सामने आकर उसे भद्दी भद्दी गाली गलौज करने लगे। जब उसके इसका विरोध किया तो सभी ने उसे लात घूसा डंडा ईट से मारने पीटने लगे। शोर मचाने पर बीच बचाव करने आई इन्द्रराज की दादी को भी उक्त लोगो ने मारपीट दिया शोर सुनकर लोग इक्कठा होने गले तो लोगो को देखकर उक्त दबंग इन्द्रराज को जान से मार डालने की धमकी देते हुए चले गए। दबंगो से मारपीट में इन्द्रराज के मुंह व शरीर में अन्य जगह चोटे आई है। मामले की लिखित सूचना चरवा थाना प्रभारी को दी गई, पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुट गई और पीड़ित को न्याय दिलाने का भरोसा दिया।

न्यूज झरोखा

दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी पर प्रदर्शन को आए नेता पुलिस देखकर हुए फरार

कौशाम्बी। दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल को ईडी ने गिरफ्तार कर लिया और जेल भेज दिया है,जिसको लेकर पूरे देश में आम आदमी पार्टी के नेता और कार्यकर्ता प्रदर्शन कर रहे हैं ।आम आदमी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के आवाहन पर कौशाम्बी जिले में मुख्यालय पर कार्यकर्ताओ को प्रदर्शन करना था,जिसके लिए कार्यकर्ताओ ने पूरी तैयारी कर रखी थी,सुबह जब कार्यकर्ताओ के एकत्रित होकर प्रदर्शन करने का समय हुआ तो आम आदमी पार्टी के जिलाध्यक्ष मोहम्मद अरशद पुलिस को देखकर ही फरार हो गए ।वही आम आदमी पार्टी की किसान प्रकोष्ठ की जिला अध्यक्ष अर्चना गौतम धरना स्थल डायट मैदान परिसर मंझनपुर पहुंच गई लेकिन अन्य कोई पदाधिकारी मौके पर नहीं आया,जिसके चलते आम आदमी पार्टी का धरना प्रदर्शन हो ही नही पाया।

अपर पुलिस अधीक्षक क्षेत्र अधिकारी सहित 9 पुलिस कर्मियों ने किया रक्तदान

कौशाम्बी पुलिस लाइन्स में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया,इस रक्तदान शिविर में एएसपी अशोक कुमार वर्मा व सीओ पुलिस लाइन सहित अन्य पुलिस अधिकारियों कर्मचारियों ने रक्तदान किया ।इस शिविर में स्वेच्छा से रक्तदान करने वाले पुलिस अधिकारियों एवम कर्मचारियों को प्रमाणपत्र दिया गया।

छात्र छात्राओं को दी गयी जल संरक्षण की जानकारी

हर्रायपुर कौशाम्बी। एन डी कॉन्वेंट स्कूल एंड स्वर्गीय श्री समाधि महाराज बाबा सूरजपाल दास इंटर कॉलेज नसीरपुर , मूरतगंज में अंतरराष्ट्रीय जल संरक्षण दिवस के उपलक्ष्य में बच्चों को प्रोजेक्टर के माध्यम से जल संरक्षण की जानकारी दी गई। बच्चों ने मॉडल तथा लेख प्रतियोगिता में भाग लिया ।इस मौके पर विद्यालय के प्रबंधक मिथिलेश कुमार सिंह ने बच्चों को जल के महत्व के बारे में बताया जल ही जीवन है बिना जल के जीवन असंभव है। विद्यालय के प्रधानाचार्य महेश कुमार ने बताया कि पृथ्वी पर 74% जल है जिसमें से 3% जल ही पीने योग्य है हम सभी को जल का संरक्षण करना चाहिए। आज कई ऐसे राज्य हैं जो जल की संकटों से जूझ रहे हैं ।इस मौके पर उप प्रधानाचार्य अनीता कुमारी ,रामनरेश यादव रईस अहमद, अनिल कुमार सुनील सिंह,अभिषेक साहू शिवानी यादव, आकांक्षा पाल ,नंदिता पाल ,ममता मिश्रा ,ज्योति सैनी, मनीषा विश्वकर्मा जितेंद्र सर ,कल्लो देवी आदि लोग मौजूद रहे।

अवैध शराब बनाने वाले पर चौकी इंचार्ज ने मारा छापा

हर्रायपुर कौशाम्बी। होली के त्यौहार व आगामी लोकसभा चुनाव के दृष्टिगत संदीपन घाट थाना क्षेत्र के मूरत गंज चौकी इंचार्ज ने ग्राम उगहिया के पुरवा सैंता में शराब भट्ठी पर छापा मारा है जहां से भारी मात्रा में शराब और लहन बरामद हुई है चौकी प्रभारी मूरतगंज ने मय फोर्स छापा मारकर करीब 4.5 कुंतल लहन नष्ट किया व 20 लीटर अवैध शराब के साथ गिरफ्तार 01 अभियुक्त मैकूलाल पुत्र रामबहादुर निवासी उगहिया का पुरवा सैंता थाना संदीपनघाट के विरुद्ध आवश्यक विधिक कार्यवाही की है।

दुष्कर्म के आरोपी को कोर्ट ने सुनाई 10 साल कारावास की सजा, लगाया 10 हजार अर्थदंड

कौशाम्बी। जिले के सैनी कोतवाली क्षेत्र में 17 साल पहले युवती को बहला- फुसलाकर भगा ले जाने और दुष्कर्म किए जाने की घटना हुई थी ।जिसके सम्बन्ध में सैनी कोतवाली में मु0अ0सं0 337/2007 धारा 323/ 366/ 376/ 452/ 504/ 506 भादवि पंजीकृत किया गया था। जिससे सम्बन्धित अभियुक्त ललई उर्फ मिथलेश कुमार पुत्र राम सेवक निवासी गनपा थाना सैनी को 22.03.2024 को न्यायालय एडीजे/एफटीसी-02 ने 10 वर्ष कठोर कारावास तथा 10,000 रू0 के अर्थदण्ड लगाया है।

ट्रेन की चपेट में आने से वृद्ध की मौत नहीं हुई शिनाख्त

अझुवा कौशांबी। सैनी कोतवाली के दिल्ली हावड़ा रेलमार्ग पर सिराथू रेलवे स्टेशन से पूर्व की ओर रेलवे लाइन पर शुक्रवार सुबह एक अज्ञात वृद्ध उम्र तकरीबन 56 वर्ष का क्षत विक्षत शव मिला है सूचना पर पहुंची क्षेत्रीय पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया है और शिनाख्त कराने में जुट गई है खबर लिखे जाने तक वृद्ध की शिनाख्त नहीं हो सकी है।

पिपरी पुलिस ने किया पैदल गश्त

कौशाम्बी। आगामी त्योहार व लोकसभा चुनाव के दृष्टिगत जनपद में शांति

दबंग कोटेदार ने घटतौली की शिकायत पर घर में घुस की मारपीट, शिकायत

मामला कड़ाधाम थाना क्षेत्र के गिरधरपुर गढ़ी गांव का दो अलग समुदाय का होने के चलते गांव में तनाव

कौशाम्बी। कोटेदार से कम अनाज की शिकायत करना गांव के लोगों को भारी पड़ गया गुस्साए कोटेदार अपने परिवार के लोगों सहित एक दर्जन लोगों के साथ घर में चढ़कर परिजनों को पीट दिया। मामला चुकी दो अलग-अलग समुदाय का है जैसे ही एक खबर क्षेत्र में फैली क्षेत्र के लोगों में सनसनी दौड़ गई। तनाव को देखते हुए तत्काल क्षेत्र अधिकारी वा एसडीएम सिराथू ने मौके पर जाकर घटना स्थल का परीक्षण भी किया। अपने शिकायती पत्र में थाना क्षेत्र के गिरधरपुर गढ़ी के रहने वाले बिंदेश्वरी प्रसाद के पुत्र कामता ने बताया कि मेरा बेटा निखिल गांव की ही सस्ते गल्ले की दुकान के दुकान से राशन लेने गया था कोटेदार द्वारा घटतौली करने के कारण विवाद हुआ। इसी दौरान वहां पर कोटेदार के पुत्र जावेद पुत्र मोहर्रम अली ने मेरे बेटे को भला बुरा कहते हुए वहां से भगा दिया। जब उसने यह बात आकर अपनी माता राधा देवी यादव से बताया तो वह इस बात का उलाहना देने के लिए कोटेदार के यहां गई और राशन देने की बात कही जिस पर वहां मौजूद कोटेदार के पुत्र जावेद अली वा मोहर्रम ने मेरी पत्नी के साथ गाली गलौज करते हुए कहा कि जल्दी-जल्दी सब को बुला लो और इसे मारपीट कर घायल करो घर के अंदर घसीट ले जाओ और इसकी इज्जत लूट लो किसी को मुंह दिखाने के लायक ना रहने लायक रहे कर दो। वहां पर जब यह लोग गाली गलौज करने लगे तो महिला अपने घर के तरफ दौड़ते हुए भागी और घर का दरवाजा बंद कर लिया घर के पीछे से डाक के घर के अंदर 7 लोग घुस गये कोटेदार के साथ उसके पुत्र पत्नी और छह-सात अन्य लोग असलहों वा लाठी डंडों से लैस होकर महिला के घर के अंदर घुस आए इस दौरान उन्होंने महिला के बेटे और महिला के साथ मारपीट किया। इन लोगों ने महिला की इज्जत पर ही हाथ डाला और उसके कपड़े फाड़ दिए किसी तरह चिल्लाने और पुकारने पर आसपास के लोग पहुंच आए और उनके बीच बचाव करने पर परिवार की जान बच सकी, नहीं तो यह लोग उनकी हत्या कर देते। मामले में तहरीर मिलते ही पुलिस ने जांच पड़ताल शुरू कर दिया है। घटना की गंभीरता को देखते हुए गांव में उप जिला अधिकारी व क्षेत्राधिकारी ने भी घटनास्थल का निरीक्षण किया।

मजदूर को ग्लास फैक्ट्री के दबंग मालिक मैनेजर व गार्ड ने पीटा

कौशाम्बी जिले में होली के त्योहार के लिए अपने किए गए काम की मजदूरी का पैसा मांगने गए मजदूर की ग्लास फैक्ट्री के दबंग मालिक,मैनेजर व गार्ड ने पिटाई कर दी,पीड़ित मजदूर ने पुलिस से इसकी शिकायत की है,पुलिस आरोपियों को पकड़ कर मामला दर्ज कर रही है मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र स्थित साकेत ग्लास फैक्ट्री में भेलखा गांव का मजदूर काम करता था,पिछले कई दिनों से वह लगातार काम कर रहा था,तीन दिन से वह काम पर नहीं आया था,शुक्रवार को जब वह काम पर पहुंचा और होली त्योहार को लेकर पैसा मांगा तो ग्लास फैक्ट्री का मालिक दबंग भड़क गया और मजदूर के साथ गाली गलौज शुरू कर दिया,गाली गलौच का विरोध करने पर दबंगों ने मजदूर की जमकर पिटाई कर दी। दबंगो को पिटाई से मजदूर के चेहरे व शरीर में गंभीर चोट आई है,पीड़ित मजदूर ने अधिवक्ता के साथ मंझनपुर कोतवाली पहुंचकर ग्लास फैक्ट्री के मालिक मोनू महाजन, मैनेजर राजेश, व गार्ड राम नरेश पर मारपीट करने का आरोप लगाते हुए शिकायत की है ।पीड़ित मजदूर की शिकायत पर पुलिस ग्लास फैक्ट्री के मालिक सहित तीनों को पकड़ कर थाना लाई और मामला दर्ज कर कार्यवाई में जुट गई है।

मामूली विवाद में पड़ोसियों ने महिला को पीटा रिपोर्ट दर्ज

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र अंतर्गत बालीपुर टाटा गांव में नाली की सफाई को लेकर उलाहना दे रही महिला को पड़ोसियों ने बेरहमी से बाल पकड़कर घसीट कर पीट दिया। बीच बचाव करने पहुंचे परिजनों को बुरी तरह से मारपीट किया जिसकी शिकायत महिला ने चरवा थाना पुलिस से की है। पुलिस महिला की रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच पड़ताल कर रही है। चरवा थाना के बालीपुर टाटा निवासनी महिला मनीषा देवी पत्नी मान सिंह ने थाना प्रभारी बलराम सिंह को शिकायती प्रार्थना पत्र देकर बताया कि बीते गुरुवार को उसके पड़ोस का दिलीप कुमार उर्फ सोनू पुत्र अशोक कुमार उसके घर के पास खड़ा था। तब मनीषा ने कहा तुम्हारे घर वाले नाफदान साफ करके मेरे घर के सामने नाले में डाल दिए हैं । जिससे मेरे घर का पानी नहीं निकल रहा है। इतनी सी बात को लेकर दिलीप कुमार और सोनू पुत्र अशोक कुमार वा राजकुमार उर्फ मोनू पुत्र संतोष व खेदा उर्फ नीरज पुत्र मंतोष ने मनीषा को गाली गलौज देने लगे मनीषा के विरोध पर उसे लात घूसो से मारने पीटने लगे तथा दिलीप कुमार उर्फ सोनू ने उसे के बाल पकड़कर घसीट कर मारा पीटा। मनीषा देवी चिल्लाई तो शोर सुनकर उसका पति मौके पर आकर बीच बचाव करने लगा तो पति को भी मारने पीटने लगे मनीषा देवी के सर व शरीर में चोट आई है लोगों के आ जाने पर उक्त दबंग मनीषा देवी व उसके पति को जान से मार डालने की धमकी देते हुए चले गए

नर्सिंग होम चलाने वाले सरकारी डॉक्टरो से ढाई करोड रुपए साल होती है सीएमओ कार्यालय में वसूली!

पूरे जिले की सरकारी अस्पताल की स्वास्थ्य व्यवस्था चौपट संविदा कर्मी के जिम्मे होती है वसूली, कौशांबी जिले की चौपट हो चुकी सरकारी स्वास्थ्य व्यवस्था को सुधार करने का प्रयास कब स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक द्वारा किया जाएगा

कौशाम्बी। पूरे जिले के सरकारी अस्पताल की स्वास्थ्य व्यवस्था बीते दो वर्षों से पूरी तरह चौपट हो चुकी है सरकारी अस्पतालों के डॉक्टर निजी नर्सिंग होम चलाने में मस्त है और नर्सिंग होम चलाने वाले सरकारी डॉक्टर से 20000 महीना की वसूली सीएमओ के कार्यालय में उनका चहेता संविदा कर्मी द्वारा प्रत्येक महीने किया जा रहा है यदि आंकड़ों पर गौर करें तो ढाई करोड़ रुपए सालाना सरकारी डॉक्टर से वसूली हो रही है जिसके चलते सरकारी डॉक्टर के निजी नर्सिंग होम चलाने पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा रोक नहीं लगाई जाती है यह संविदा कर्मी पूरे दिन साहब की जी हुजूरी करता है इस बात का प्रमाण मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में लगा सीसीटीवी कैमरा कर रहा है आखिर कौशांबी जिले की चौपट हो चुकी सरकारी स्वास्थ्य व्यवस्था को सुधार करने का प्रयास कब स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक द्वारा किया जाएगा इस बात का जवाब जिले की जनता स्वास्थ्य मंत्री से चाहती है लेकिन स्वास्थ्य मंत्री भी जिले की जनता को इस बात का जवाब देने के लिए तैयार नहीं है पूरे जिले की सरकारी स्वास्थ्य व्यवस्था चौपट कर देने वाले मुख्य चिकित्सा अधिकारी तो इस कदर से मीटिंग का निर्देश जारी कर देते हैं जिससे सरकारी अस्पताल में चिकित्सक नहीं मौजूद मिलते और मरीज तड़पते रहते हैं इलाज के अभाव में मरीजो की मौत हो जाती है मजबूरन मरीज निजी नर्सिंग होम में इलाज के आने पहुंचते हैं जहां पर सरकारी चिकित्सक उपस्थित मिल जाते हैं लेकिन उसके बाद मुख्य चिकित्सा अधिकारी को सरकारी चिकित्सकों की यह करनी इसलिए नहीं दिखाई पड़ा है क्योंकि उनका संविदा कर्मी प्रत्येक वर्ष ढाई करोड़ सरकारी चिकित्सकों से वसूली कर रहा है।

संपादक की कलम से

भगत सिंह के विचारों का इतिहासपरक मूल्यांकन

- अरविंद जयतिलक
(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

युवाओं के क्रांतिनायक भगत सिंह के जीवन की अनेक ऐसी बातें हैं जो देश के युवाओं को राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा से भर देती है। 23 वर्ष की उम्र में ही भगत सिंह ने अपने लेखन और राष्ट्रभक्ति के बरक्स एक ऐसा आंदोलन खड़ा कर दिया जिससे दशकों तक भारत की युवा पीढ़ी प्रेरणा लेती रहेगी। भगत सिंह ने अपनी गरिमामय शहादत और आंदोलित विचारों से देश-दुनिया को संदेश दिया कि क्रांतिकारी आंदोलन के पीछे उनका मकसद अंध राष्ट्रवाद नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण की परिकल्पना थी। हालांकि यह त्रासदी है कि आजादी के चार दशक बाद तक भगत सिंह के विचार और उनसे जुड़े दस्तावेज देश के आमजन तक नहीं पहुंच पाए और देश की युवा पीढ़ी उनके आंदोलित व राष्ट्रवादी विचारों से अपरिचित रही। भगत सिंह के विचारों और क्रांतिकारिता को समझने के लिए जेल के दिनों में उनके लिखे खतों और लेखों को पढ़ना-समझना आवश्यक है। उन खतों और लेखों के माध्यम से समझा जा सकता है कि भगत सिंह रक्तपात के कतई पक्षधर नहीं थे। वे और उनके साथियों ने पुलिस सुपरिटेण्डेंट स्कॉट को निशाना तब बनाया जब 1928 में साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिए भयानक प्रदर्शन के दौरान प्रदर्शन में भाग लेने वाले प्रदर्शनकारियों पर ब्रिटिश हुकुमत ने लाठियां बरसायी जिसमें लाला लाजपत राय बुरी तरह घायल हुए और अंततः मृत्यु को प्राप्त हुए।

भगत सिंह समाजवाद और मानववाद के पोषक थे और इसी कारण उन्होंने ब्रिटिश हुकुमत की भारतीयों के प्रति शोषण की नीति का विरोध किया। भारतीयों के प्रति अत्याचार से उनका विरोध लाजिमी था ठीक उसी तरह जिस तरह एक महान देशभक्त का होता है। भगत सिंह कतई नहीं चाहते थे कि ब्रिटिश संसद से मजदूर विरोधी नीतियां पारित हो। उनकी सोच थी कि अंग्रेजों को पता चलना चाहिए कि हिंदुस्तानी जाग चुके हैं और वे अधिक दिनों तक गुलामी के चंगुल में नहीं रह सकते। उन्होंने अपने विचारों से अंग्रेजों को यह बात समझानी चाही लेकिन अंग्रेज समझने को तैयार नहीं थे। तब उन्होंने अपनी बात उन तक पहुंचाने के लिए 8 अप्रैल, 1929 को अपने साथी क्रांतिकारी बटुकेश्वर दत्त से मिलकर ब्रिटिश सरकार की केंद्रीय असेंबली में बम फेंका। उन्होंने यह बम खाली स्थान पर फेंका ताकि किसी को नुकसान न पहुंचे। बम फेंकने के बाद उन्होंने इंकलाब-जिंदाबाद के नारे लगाए और पर्चे फेंके। बम फेंकने का मकसद खून-खराबा करना नहीं था। उन्होंने कहा भी कि ह्ययदि बहरों को सुनना है तो आवाज को बहुत जोरदार होना होगा, जब हमने बम गिराया तो हमारा ध्येय किसी को मारना नहीं था, हमने अंग्रेजी हुकुमत पर बम गिराया था, अंग्रेजों को भारत छोड़ना चाहिए और उसे आजाद करना चाहिए।ह्ण उल्लेखनीय तथ्य यह कि बम गिराने के बाद वे चाहते तो भाग सकते थे लेकिन उन्होंने भागना स्वीकार नहीं किया। बल्कि बहादुरी से गिरफ्तारी दी। सच कहें तो भगत सिंह ने यह साहस दिखाकर अंग्रेजों को समझा दिया कि एक हिंदुस्तानी क्या-क्या कर सकता है। उनका यह साहस दशार्ता है कि वे शांति के पैरोकार थे और हिंसा में उनका विश्वास रंचमात्र भी नहीं था। उन्होंने अपनी क्रांतिकारिता को रेखांकित करते हुए कहा भी है कि ह्यजरुरी नहीं था कि क्रांति में अभिशप्त संघर्ष शामिल हो, यह बम और पिस्तौल का पंथ नहीं था।ह्ण भगत सिंह का अहिंसा में कितना अधिक विश्वास था वह इसी से समझा जा सकता है कि एक स्थान पर उन्होंने कहा कि ह्यअहिंसा को आत्मबल के सिद्धांत का समर्थन प्राप्त है जिसमें अंततः प्रतिद्वंदी पर जीत की आशा में कष्ट सहा जाता है, लेकिन तब क्या हो जब ये प्रयास अपना लक्ष्य प्राप्त करने में असफल हो जाए? तभी हमें आत्मबल को शारीरिक बल से जोड़ने की जरुरत पड़ती है ताकि हम अत्याचारी और क्रुर दुश्मन के रहमोंकरम पर ना निर्भर करें।ह्ण क्या ऐसे विचार वाले एक महान क्रांतिकारी को हिंसावादी कहना उचित होगा? कतई नहीं। ध्यान देना होगा कि 1919 में जब जलियांवाला बाग हत्याकांड हुआ तो भगत सिंह का खून खौल उठा था। लेकिन उन्होंने हिंसा का रास्ता अख्तियार करने के बजाए महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहयोग आंदालन का समर्थन किया। जेल में भगत सिंह ने बहुत यातनाएं सही। न तो उन्हें अच्छा खाना दिया जाता था और न ही पहनने को साफ-सुथरे कपड़े दिए जाते थे। उन्हें बुरी तरह पीटा जाता था और गालियां दी जाती थी। लेकिन वे तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने जेल में रहते हुए ही अंग्रेजों के खिलाफ क्रांति का बिगुल फूंक दिया।

भगत सिंह की जनमानस में व्याप्त लोकप्रियता से अंग्रेज इस कदर डरे हुए थे कि 24 मार्च, 1931 को उन्हें फांसी पर लटकाने के बाद उनके मृत शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर दिए। उन्हें भय था कि अगर उनके मृत शरीर को उनके परिजनों को सौंपा गया तो देश में क्रांति की ज्वाला भड़क उठेगी जिसे संभालना मुश्किल होगा। भगत सिंह ने क्रांति के बारे में स्पष्ट कहा है कि ह्यकिसी को क्रांति शब्द की व्याख्या शाब्दिक अर्थ में नहीं करनी चाहिए, जो लोग इस शब्द का उपयोग या दुरुपयोग करते हैं उनके फायदे के हिसाब से इसे अलग-अलग अर्थ और अभिप्राय दिए जाते हैं।ह्ण बिडंबना यह है कि भगत सिंह को कुछ इसी तरह के फ्रेम में फिट कर उनके क्रांतिकारी विचारों की व्याख्या की गयी है जो एक किस्म से उनकी अहिंसक विचारधारा के साथ छल है। बिडंबना यह भी कि इतिहास के पन्नों में भी उनके जीवन और बलिदान को सही रुप में दिखाने के बजाए विकृत करने की कोशिश की गयी। उदाहरण के तौर पर देश के जाने-माने इतिहासकार विपिन चंद्रा और मृदुला मुखर्जी की किताब में शहीद भगत सिंह को कथित रुप से क्रांतिकारी आतंकवादी के तौर पर उद्धृत किया गया है। यह न सिर्फ एक महान क्रांतिकारी का अपमान भर है बल्कि विकृत इतिहास लेखन की परंपरा का एक शर्मनाक बानगी भी है। विकृत इतिहास लेखन की ऐसी शरारतपूर्ण बानगियां इतिहास में और भी दर्ज हैं जिससे भारतीय इतिहास के नायकों की छवि धूमिल हुई है।

महान लेखक और राजनीतिज्ञ सिसरो ने इतिहास के बारे में कहा था कि इतिहास समय के व्यतीत होने का साक्षी होता है। वह वास्तविकताओं को रोशन करता है और स्मृतियों को जिंदा रखता है। देश जानना चाहता है कि औपनिवेशिक गुलामी और शोषण के विरुद्ध आवाज बुलंद करने वाले शहीद-ए-आजम भगत सिंह किस तरह क्रांतिकारी आतंकवादी थे और इतिहास का यह विकृतिकरण किस तरह विद्यार्थियों के लिए पठनीय है। कोई भी इतिहासकार या विचारक अपने युग की उपज होता है। उसकी जिम्मेदारी होती है कि वह अपनी लेखनी से कालखंड की सच्चाई का ईमानदारी से दुनिया के सामने रखे। राष्ट्र को सुपरिचित कराए। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण कि अंग्रेज और मार्क्सवादी इतिहासकार भारतीय इतिहास लेखन की मूल चेतना को समझ नहीं सके और भारतीय इतिहास के सच की हत्या कर दी। अगर भारतीय इतिहास को भारतीय चेतना व मानस के प्रकाश में लिखा गया होता तो आज भगत सिंह को क्रांतिकारी आतंकवादी या शिवाजी को पहाड़ी चूहिया अथवा चंद्रगुप्त मौर्य की सेना को डाकुओं का गिरोह नहीं कहा जाता। विलियम कैरे, अलेक्जेंडर डफ, जॉन मुअर, और चार्ल्स ग्रांट जैसे इतिहासकारों ने भारत के इतिहास को अंधकारग्रस्त और हिंदू धर्म को पाखंड और झूठ का पर्याय कहा।

भारत में अंग्रेजी शिक्षा के जनक और ईसाई धर्म को बढ़ावा देने वाले मैकाले ने तो यहां तक कहा कि भारत और अरब के संपूर्ण साहित्य का मुकाबला करने के लिए एक अच्छे यूरोपिय पुस्तकालय की एक आलमारी ही काफी है। 1834 में भारत के शिक्षा प्रमुख बने लार्ड मैकाले ने भारतीयों को शिक्षा देने के लिए बनायी अपनी नीति के संदर्भ में अपने पिता को एक पत्र लिखा जिसमें कहा कि मेरी बनायी शिक्षा पद्धति से भारत में यदि शिक्षा क्रम चलता रहा तो आगामी 30 वर्षों में एक भी आस्थावान हिंदू नहीं बचेगा। या तो वे ईसाई बन जाएंगे या नाम मात्र के हिंदू रह जाएंगे। समझा जा सकता है कि इतिहास लेखन की आड़ में अंग्रेजी इतिहासकारों और उनसे प्रभावित भारतीय इतिहासकारों के मन में क्या था।

मस्ती में सरोबार होकर मनाते हैं राजस्थान में होली

होली के अवसर पर राजस्थान के विभिन्न शहरों में कई तरह के आयोजन किए जाते हैं। राजस्थान में होली के विविध रंग देखने में आते हैं। होली के दिनों में जयपुर के इष्टदेव गोविंद देव मंदिर में नजारा देखने लायक होता है। राजस्थान के मंदिरों में होली पर रंग-गुलाल के साथ फाग उत्सव का आयोजन किया जाता है।

बीकानेरी होली का सबसे आकर्षण का केन्द्र होता है पुष्करणा समाज के हर्ष व व्यास जाति के बीच खेला जाने वाला डोलची। पानी का खेल डोलची चमड़े से बना एक ऐसा पात्र है जिसमे पानी भरा जाता है व जोरदार प्रहार के साथ सामने बाले की पीठ पर इस पानी को मारा जाता है। बाड़मेर में पत्थर मार होली खेली जाती है तो अजमेर में कोड़ा अथवा सांतमार होली लोग बहुत धूम-धाम से मनाते हैं। हाड़ोती क्षेत्र के सांगोद कस्बे में होली के अवसर पर नए हिजड़ों को हिजड़ों की जमात में शामिल किया जाता है। इस अवसर पर बाजार का न्हाण और खाड़े का न्हाण नामक लोकोत्सवों का आयोजन होता है। खाडे के न्हाण में जम कर अश्लील भाषा का प्रयोग किया जाता है।

भरतपुर के ब्रजांचल में फाल्गुन का आगमन कोई साधारण बात नहीं है। ब्रज के गांव की चौपालों पर ब्रजवासी ग्रामीण अपने लोकवाद्य बम के साथ अपने ढप, ढोल और झांझ बजाते हुए रसिया गाते हैं। डीग क्षेत्र की ग्रामीण महिलाएं अपने सिर पर भारी भरकम चरकुला रखकर उस पर जलते दीपकों के साथ नृत्य करती हैं। संपूर्ण ब्रज में इस तरह आनंद की अमृत वर्षा होती है। यह परम्परा ब्रज की धरोहर है। बरसाने, नंदगांव, कामां, डीग आदि स्थानों पर ब्रज की लठमार होली की परम्परा आज भी यहां की संस्कृति को पुष्ट करती है। चैत्र कृष्ण द्वितीया को दाऊजी का हुरंगा भी प्रसिद्ध है। ब्रह्मानगरी पुष्कर की कपड़ा फाड़ होली ने देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपनी धाक जमा ली है। यहां विदेशी सैलानियों के साथ स्थानीय और देशी पर्यटक बड़ी धूमधाम के साथ होली खेलते हैं और एक दूसरे के कपड़े भी फाड़ते हैं।

मेवाड अंचल के भीलवाड़ा जिले के बरून्दनी गांव में होली के सात दिन बाद शीतला सप्तमी पर खेली जाने वाली लठमार होली का अपना एक अलग ही मजा रहा है। माहेश्वरी समाज के स्त्री-पुरूष यह होली खेलते हैं। डोलचियों में पानी भरकर पुरूष महिलाओं पर डालते हैं और महिलाएं लाठियों से उन्हें पीटती हैं। यहां होली के बाद बादशाह की सवारी निकाली जाती हैं। वहीं शीतला सप्तमी पर चित्तौड़गढ़ वालों की हवेली से मुर्दे की सवारी निकाली जाती है। इसमें लकड़ी की सीढी बनाई जाती है और जिंदा व्यक्ति को उस पर लिटाकर अर्थी पूरे बाजार में निकालते हैं। इस दौरान युवा इस अर्थी को लेकर पूरे शहर में घूमते हैं। लोग इन्हें रंगों से नहला देते हैं।

शेखावाटी की होली पूरे देश में प्रसिद्ध है। फाल्गुन में सांझ ढलते ही धमाल सुनाई देने लगे हैं। चंग की थाप पर पांव थिरकने लगे हैं और बांसुरी की सुरीली आवाज कानों में मिश्री घोलने लगी है। होली नजदीक आने पर शेखावाटी में अंचल के गांव-गांव और ढाणी-ढाणी में ऐसा माहौल देखने को मिल रहा है। उमंग व मस्ती भरे पर्व होली की शुरूआत तब होती है, जबकि बसन्त अपने पूर्ण यौवन पर होता है और बांसुरी की मदहोश करती धुनें और चंग की थाप पर मानव का मन-मयूर नाचने लगता है। होली नजदीक आने पर शेखावाटी में अंचल के गांव-गांव और ढाणी-ढाणी में ऐसा माहौल देखने को मिल रहा है।

शेखावाटी अंचल के हर गांव कस्बे में रात्रि में लोग एकत्रित होकर चंग की मधुर धुन पर देर रात्रि तक धमाल गाते हुए मोहल्लों में घूमते रहते हैं। होली के अवसर पर बजाया जाने वाला चंग भी इसी क्षेत्र में ही विशेष रूप से बनाया जाता है। चंग की आवाज तो ढोलक की माफिक ही होती है, मगर बनावट ढोलक से सर्वथा भिन्न। चंग ढोलक से काफी बड़ा व गोल घेरे नुमा होता है। होली के प्रारम्भ होते ही गांवों में लोग अपने-अपने चंग (ढप) संभालने लगते हैं। होली चूंकि बसंत ऋतु का प्रमुख पर्व है तथा बसंत पंचमी बसंत ऋतु प्रारम्भ होने की द्योतक है। इसलिए इस अंचल में बसंत पंचमी के दिन से चंग (ढप) बजाकर होली के पर्व की विधिवत शुरूआत कर दी जाती है।

शेखावाटी अंचल में होली एक सुप्रसिद्ध लोक पर्व है तथा इस पर्व को क्षेत्र में पूरे देश से अलग ही ढंग से मनाया जाता है। उमंग व मस्ती भरे पर्व होली की शेखावाटी क्षेत्र में बसंत पंचमी के दिन से शुरूआत कर दी जाती है। क्षेत्र में होली के पर्व पर चंग की धुन पर गाई जाने वाली धमालों में यहां की लोक संस्कृति का ही वर्णन होता है। इन धमालों के माध्यम से जहां प्रेमी अपनी प्रेमिकाओं को अपने प्रेम का संदेशा पहुंचाते हैं वहाँ श्रद्धालु धमालों के माध्यम से लोक देवताओं को याद कर सुख समृद्धि की कामना करते हैं। धमाल के साथ ही रात्रि में नवयुवक विभिन्न प्रकार के स्वांग भी निकाल कर लोगों का भरपूर मनोरंजन करते हैं। गांवों में स्त्रियां रात्रि में चौक में एकत्रित होकर मंगल गीत, बधावे गाती हैं। होली के दिनों में आधी रात तक गांवों में उल्लास छाया रहता है।राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में हर मोहल्ले में अपनी चंग पार्टी होती है। चंग शेखावाटी क्षेत्र का प्रसिद्ध नृत्य है। इसमें प्रत्येक पुरुष चंग बजाते हुये नृत्य करते हैं। यह मुख्यतः होली के दिनों में किया जाता है। चंग को प्रत्येक पुरुष अपने एक हाथ से थाम कर और दूसरे हाथ से कटरवे का ठेका बजाते हुए वृत्ताकार घेरे में नृत्य करते हैं। घेरे के मध्य में एकत्रित होकर धमाल और होली के गीत गाते हैं। होली के एक पखवाडे पहले गींदड शुरू हो जाता है। जगह- जगह भांग घुटती है। हालांकि अब ये नजारे कम ही देखने को मिलते हैं। जबकि, शेखावाटी में ढूंढ का चलन अभी है। परिवार में बच्चे के जन्म होने पर उसका ननिहाल पक्ष और बुआ कपडे और खिलौने होली पर बच्चे को देते हैं।शेखावाटी अंचल में होली पर कस्वों में विशेष रूप से गींदड़ नृत्य किया जाता है। गुजराती नृत्य गरवा से मिलता-जुलता गींदड़ नृत्य में काफी लोग विभिन्न प्रकार की चिताकर्षक वेशभूषा में नंगाड़े की आवाज पर एक गोल घेरे में हाथ में डंडे लिए घूमते हुए नाचते हैं तथा आपस में डंडे टकराते हैं। प्रारम्भ में धीरे-धीरे शुरू हुआ यह नृत्य धीरे-धीरे रफ्तार पकड़ता जाता है। इसी रफ्तार में डंडों की आवाज भी टकरा कर काफी तेज गति से आती है तथा नृत्य व आवाज का एक अद्भुत दृश्य उत्पन्न हो जाता है जिसे देखने वाला हर दर्शक रोमांचित हुए बिना नहीं रह पाता है।

अजब-गजब

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

एक दिन पड़ोसी से मेरा झगड़ा हो गया। न जाने उसके सिर पर कौन सा भूत सवार रहता है जो चौबीसों घंटे हमारी निगरानी करता रहता है। समझ नहीं आता कि पड़ोसी है या रूस का राष्ट्रपति पुतिन। यह दुनिया भी बड़ी गजब है। अपना छोड़कर सब का हिसाब किताब चाहिए होता है। कब, कौन, कहाँ, क्यों, कैसे और किस काम के लिए पड़ोस के घर आया है यही पता लगाने में लोग घर-घर ब्योमकेश बक्शी बनते जा रहे हैं। इन्हीं के चलते घर से निकलना दुश्वार हो गया है।

हां तो मैं आपको बता रहा था कि पड़ोसी से मेरी कहा-सुनी हो गई। मामला हाथापाई से होते हुए थाने तक पहुंच गया। थाना तो थाना है साहब! बड़ी गजब की जगह है। कुछ के अनुभवों को रेखांकित किया जाए तो थाना जाने की जगह श्मशान जाना सबसे बेहतर होता है। श्मशान इसलिए कि थाने में भी वही कुछ होता है जो श्मशान में होता है। अंतर केवल समय की मात्रा का होता है। जो काम श्मशान में जल्दी से होता है वही काम थाने में बड़े इत्मीनान के साथ किया जाता है।

हम दो झगड़ालू अपने-अपने ढंग से हाथापाई की आपबीती भूतकाल के संजय की त्रह सुना रहे थे। पुलिस बाबू ने एक लंबी सी जम्हाई ली जिसमें बीस-तीस मक्खी आसानी से घूम-फिर सकते थे। किंतु थाने की मक्खियां आम लोगों से ज्यादा समझदार होती है। वे पुलिस के इर्द-गिर्द मंडराकर अपनी मौत को दावत देने से साफ-साफ बचती हैं। उन्हें पूरा यकीन है कि पुलिस आरोपी के न मिलने पर कहीं इन्हीं के नाम पर बिल न फाड़ दे।

पुलिस बाबू ने कहा - तुम दोनों की हाथापाई में कोई दम नहीं है। न हाथ टूटा है न पैर। ऐसे कैसे मुंह उठाए चले आए। यह पुलिस थाना है पुलिस थाना! कोई कॉमेडी सर्कस नहीं। यहां मिनिमम रिपोर्ट हाथ पैर टूटने से दर्ज की जाती है। अब आगे तुम्हारी मर्जी।

हम दोनों झगड़ालू अपनी जिद पर अड़े रहे। कुछ न कुछ करके एक-दूसरे को मजा चखाना चाहते थे। पुलिस बाबू हमारी मंशा भांप गए और बोले - जब तुम लोग इतनी जिद कर ही रहे हो तो तुम्हारी बात मान लेता हूं। लेकिन एक शर्त है कि दोनों अपना-अपना केस मजबूत करने के लिए बड़े-बड़े आरोप लगाएं। नहीं तो एक काम करो। हमारे यहां कुछ स्कीमें चल रही हैं। जैसे गाली-गलौज पर हाथापाई का आरोप फ्री या फिर हाथापाई के साथ बलात्कार का आरोप। इससे भी खुशी नहीं मिलती तो मेरी जेब का वजन बढ़ाकर ये सारे के सारे एक साथ थोप दो। ऐसी चार्ज शीट बनाऊंगा कि तुम तो क्या तुम्हारे स्वर्गवासी दादा के दादा भी अंदर हो जाएंगे और बाहर आने का नाम भी न लेंगे।

यह सब सुन हम दोनों एक-दूसरे का मुंह ताकते रह गए। हम समझ गए थे कि थाने में धंधा मंदा चल रहा है। इसलिए सारी वसूली हमी से करना चाहते हैं। हम दोनों ने निर्णय किया कि चाहे तो खुद को दो-चार लात और मार लेंगे पर थाने की सीढ़ियों पर कदम न रखेंगे। चूंकि थाने तक पहुंचने के लिए पैरों की जरूरत पड़ती है इसलिए चुपचाप यहां से खिसक जाने में भलाई है। वैसे भी थाना वह चक्रव्यूह है जहां भगवान भी फंस कर रह जाते हैं और उनकी सारी शक्तियां वन प्लस वन स्कीम चलाऊ पुलिस के सामने धरी की धरी रह जाती हैं। काश यह बात यूक्रेन और रूस समझ पाते।

अरविंद कि लिए तो ईडी सूर्पणखा साबित हुई

@राकेश अचल

सब कहते थे कि हमारी संवैधानिक संस्थाओं के पास न दांत हैं और न नाखून लेकिन ईडी यानि प्रवर्तन निदेशालय ने इस धारणा को गलत साबित कर दिया, 21 मार्च की रात दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद ये साबित हो गया है कि ईडी कोई स्वप्न सुंदरी नहीं बल्कि वो संस्था है जिसके पास छुपे हुए नाखून और न दिखने वाले पैने दांत भी हैं। यानि ईडी किसी सूर्पणखा से कम नहीं है। ईडी के इतिहास का ये सबसे बड़ा कारनामा है कि उसने एक कथित घोटाले में एक निर्वाचित मुख्यमंत्री को गिरफ्तार किया है।

देश में भ्ष्टाचार के खिलाफ मुहिम कहिये या अदावत की राजनीति कहिये, जो हो रहा है वो अविश्वसनीय है। हमारे वरिष्ठ कवि नरेश सक्सेना कहते हैं कि - चीजों के गिरने के नियम होते हैं! मनुष्यों के गिरने के कोई नियम नहीं होते। लेकिन चीजें कुछ भी तय नहीं कर सकतीं

अपने गिरने के बारे में। मनुष्य कर सकते हैं, बचपन से ऐसी नसीहतें मिलती रहीं कि गिरना हो तो घर में गिरो, बाहर मत गिरो, यानी चिट्ठी में गिरो, लिफाफे में बचे रहो, यानी आँखों में गिरो, चश्मे में बचे रहो, यानी, शब्दों में बचे रहो। इस कविता को मै हमेशा याद रखता हूँ और सोचता हूँ कि राजनीति में भी गिरने कि नियम होना चाहिए थे, जो दुर्भाग्य से नहीं हैं।

अरविंद केजरीवाल दरअसल केंद्रीय सत्ता की आँख कि बाल थे, नाक के बाल होते तो शायद बच भी जाते गिरफ्तारी से। केंद्रीय सत्ता एक ऐसा छाता है जिसके नीचे खड़े होकर हर आपदा से बचा जा सकता है। अजित पंवार हों या अशोक चौहान, सुरेश पचौरी हों या ज्योतिरादित्य सिंधिया सबके सब आखिर बच गए न ! अन्यथा आप जिसे चाहो भ्ष्टाचार कि आरोप में ईडी कि जरिये उठवा लीजिये, जेल में डाल दीजिये और वर्षों तक बिना मुकदमा चलाये अपनी कैद में रखिये। मनीष सिसोदिया, और संजय सिंह की तरह। उन्हें दोषी या निर्दोष साबित करने की जरूरत नही। वे दोषी होने कि बाद जितनी सजा के हकदार होंगे उतनी कैद उन्हें एक विचारधीन कैदी कि रूप में जेल में रखकर हिसाब बराबर किया जा सकता है।

अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के लिए मै निजी तौर पर ईडी को शाबासी देना चाहता हूँ। कम से कम ईडी ने ये तो साबित किया कि वो एक कुशल कठपुतली है और नचाने वाले कि हर इशारे को बाखूबी समझती है। अरविंद की गिरफ्तारी में ईडी का कोई दोष नहीं है। सारा दोष अरविंद केजरीवाल की किस्मत का है। उनकी और उनकी पार्टी की किस्मत खराब है इसलिए उन्हें ये दिन देखना पड़ रहे हैं। आगे इससे भी ज्यादा बुरे दिन देखना पड़ सकते हैं। मुमकिन है कि आने वाले दिनों में जेल में उनकी संगत कि लिए पंजाब कि मुख्यमंत्री श्रीमान भगवंत मान भी गिरफ्तार कर लिए जाएँ। इस देश में कुछ भी सम्भव है। ईडी ने 68 साल में पहली बार कोई पुरुषार्थ दिखाया है। शराब घोटाले में अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के लिए कोई अगर माननीय कामचलाऊ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को दोषी मानता है तो मै सोचता हूँ के ये उसका पूर्वाग्रह है। मोदी जी यदि इस गिरफ्तारी कि पीछे होते तो क्या अभी तक अरविंद केजरीवाल उनके सामने अपनी आँखें लाल कर खड़े हो सकते थे। मोदी जी ने तो अरविंद केजरीवाल को बाल-बाल बचाने की कोशिश की, लेकिन वे खुद ही नहीं बचना चाहते थे तो बेचारे मोदी जी क्या करते ? मोदी जी जैसा उदार प्रधानमंत्री अरविंद केजरीवाल को कम से कम इस जन्म में तो नहीं मिल सकता। केजरीवाल को मोदी जी का कृतज्ञ होना चाहिए।

हमारी केंद्रीय सत्ता की उदारता और दरियादिली का सबसे बड़ा सबूत ये है कि उसने या उसकी कठपुतली ईडी ने अभी तक कांग्रेस कि राहुल गांधी को गिरफ्तार नहीं किया। राहुल गांधी से सिर्फ लम्बी पूछताछ की गयी। वरना किसी की गिरफ्तारी में आखिर कितना वक्त लगता है ? मोदी जी की न सही लेकिन ईडी की दरियादिली है कि उसने कांग्रेस कि सिर्फ खाते फ्रीज किये, ईडी चाहती तो कुछ भी फ्रीज कर सकती थी। केंचुआ ने आखिर राहुल गांधी को एडवांस में एडवाइजरी दी ही थी न ? यानि अभी भी मोदी जी, उनकी ईडी, सीबीआई और केंचुआ राहुल गांधी पर मेहरबान है। कांग्रेस को भी मोदी जी की कदर करना चाहिए।

झारखण्ड में हेमंत सोरेन और दिल्ली में अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी से भाजपा का 'मिशन 400 पार' आसान हो सकता है। होना भी चाहिए, क्योंकि भाजपा कि पास जनता की सहानुभूति बटोरने कि लिए फिलहाल कोई दूसरा उपाय है भी नहीं। चुनाव या तो सहानुभूति से जीते जाते हैं या फिर जोड़तोड़ से। जब सहानुभूति न हो तो जोड़तोड़ ही इकलौता विकल्प बचता है। आपको आजादी है कि आप चाहें तो केजरीवाल की गिरफ्तारी को जोड़तोड़ से जोड़कर देख सकते हैं। राजनीति में जैसे गिरने का कोई नियम नहीं है वैसे ही जोड़तोड़ का भी कोई नियम नहीं है। मुमकिन है की भविष्य में इस जोड़तोड़ कि लिए भी कोई नियम, कोई धारा बना ली जाये।

देश में जब लोकसभा चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो गयी है ऐसे में कोई भी गिरफ्तारी भी आदर्श नहीं कही जा सकती। केंचुआ को चाहिए कि वो अपनी आदर्श आचार संहिता में इस बात को भी जोड़े कि संहिता लागू होने कि बाद किसी भी राजनितिक दल कि किसी भी छोटे-बड़े नेता को किसी पुराने मामले में गिरफ्तार नहीं किया जायेगा। चुनावों के चलते किसी भी नेता या कार्यकर्ता की गिरफ्तारी संविधान की धारा कहें या अनुच्छेद 21 के खिलाफ है। नागरिकों को चुनाव लड़ने, प्रचार करने की आजादी तो मिलना ही चाहिए। अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी में कुछ भी नया नहीं है सिवाय 'समय' कि ईडी ने गिरफ्तारी कि लिए वो समय चुना है। उससे ये बू आती है कि इस गिरफ्तारी कि पीछे साजिश है।

अब आम आदमी पार्टी कि लिए रास्ता खुला है की वो अपने संस्थापक की गिरफ्तारी कि खिलाफ जेलें भरे या चुनाव लड़े। विपक्षी इंडिया गठबंधन की जिम्मेदारी है कि वो केजरीवाल की गिरफ्तारी कि खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़े या सड़कों पर लड़े या फिर वोट की ताकत से इस कथित अवैध-वैध कार्रवाई का प्रतिकार करे। विपक्ष कि लिए अभी तमाम विकल्प खुले हैं, तय विपक्ष को ही करना है कि कांटे से काँटा निकाला जाये या कोई दूसरा रास्ता निकाला जाये ?

खुशहाल समाजों की रैंकिंग से भारत भ्रमित न हो

ललित गर्ग

143 देशों के विश्व खुशहाली रैंकिंग में भारत 126वें स्थान पर रहा है जिसमें फिनलैंड ने लगातार छठीं बार सर्वोच्च स्थान पाया है। यह बात भी गौर करने की है कि भारत में दस अंकों का सुधार हुआ है, फिर भी भारत के लिये आश्चर्यकारी एवं विचारणीय है। फिनलैंड को दुनिया का सबसे खुशहाल देश करार दिया गया है, पर गौर कीजिए, वहां आबादी सिर्फ 56 लाख है। मतलब, इस देश की चुनौतियां बहुत कम हैं। धार्मिक वातावरण ऐसा है कि विद्वेष की ज्यादा गुंजाइश नहीं है। छोटा राष्ट्र होने की वजह से सरकारों के सामने समस्याएं कम है। अतः फिनलैंड की स्थिति अच्छी है, पर उसकी तुलना भारत जैसे 140 करोड़ आबादी वाले देश से कैसे हो सकती है? यह बहस का विषय है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रायोजित इस वार्षिक रिपोर्ट में नॉर्डिक देशों ने 10 सबसे खुशहाल देशों में अपना स्थान बनाए रखा है। फिनलैंड के बाद डेनमार्क, आइसलैंड, स्वीडन ने शीर्ष स्थान हासिल किए हैं। इन सभी देशों में समाज समस्यामुक्त एवं काफी सुलझा हुआ है और विविधता वहां ज्यादा समस्याएं पैदा नहीं करती है। देखने की बात है कि खुशहाली की रिपोर्ट विगत एक दशक से भी ज्यादा समय से जारी हो रही है और पहली बार अमेरिका और जर्मनी जैसे विकसित देशों को शीर्ष 20 देशों में स्थान नहीं मिला है।

पाकिस्तान पिछली बार 108वें स्थान पर था, इस बार 122वें पर आ गया है, पर तब भी भारत से चार पायदान ऊपर है। जिस देश में खूब महंगाई है, जहां की जनता त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रही है, जहां धार्मिक उन्माद व्यापक है, जो आतंकवाद को प्रोत्साहन देता है, वह देश भी अगर हमसे खुशहाल है, तो ऐसी खुशहाली मापने के तरीकों पर विचार होना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि खुशहाली को तय करने के पैमानों में अवश्य ही कोई पूर्वाग्रह या आग्रह है। क्योंकि ऋण की गुहार लगाता एवं त्राहिमाम करता पाकिस्तान को 122वें स्थान की रैंकिंग देना विडंबनापूर्ण एवं विसंगतिमय हैं, जो इस सूचकांक के महत्व को घटा देती हैं। जो दुनिया के खुश देशों के आकलन में त्रुटि की पूरी संभावनाएं होने को दशार्ता है। अनेक सवाल खड़े करती है यह खुशहाल देशों की रैंकिंग। यह विडंबना ही है कि धार्मिक पाबंदियों वाला कुवैत दुनिया का 13वां सबसे खुशहाल देश है। ऐसी अतार्किक सूची देखकर अफसोस एवं आश्चर्य भी होता है और चिंता भी होती है। क्या खुशहाली को धार्मिक और सामाजिक स्वतंत्रता के आधार पर ज्यादा नहीं देखा जाना चाहिए? खुशहाली को केवल आर्थिक समृद्धि और संसाधनों की अधिकता में घटाकर देखना सही नहीं है। खुशहाली की रैंकिंग को देखकर भारत को कतई भ्रमित नहीं होना चाहिए।

एक और विडंबना देखिए, निर्मम युद्ध लड़ रहा इजरायल पांचवां सबसे खुशहाल देश है! पीड़ित फलस्तीन 103वें स्थान पर है, तो रूस 72वें स्थान पर और यूक्रेन 105वें स्थान पर। ये देश युद्ध के बावजूद भारत से ज्यादा खुशहाल हैं। पता नहीं, इस रैंकिंग पर कितना भरोसा किया जाए? जहां तक भारत का सवाल है, खुशहाली के सभी पैमानों पर हमें अपने प्रयास बढ़ाने की जरूरत है। एक बड़ा सवाल यह भी है कि हम प्रसन्न समाजों की सूची में क्यों नहीं अव्वल आ पा रहे हैं? यह सवाल सत्ता के शीर्ष नेतृत्व को आत्ममंथन करने का अवसर दे रहा है, वहीं नीति-निमार्ताओं को भी सोचना होगा कि कहां समाज निर्माण में त्रुटि हो रही है कि हम लगातार खुशहाल देशों की सूची में सम्मानजनक स्थान नहीं बना पा रहे हैं। भारत सरकार इस रिपोर्ट को कितनी गंभीरता से लेती है, यह देखने वाली बात है।भारत में खुशहाली को बढ़ावा देने में यहां की जनसंख्या सबसे बड़ी बाधा है। भारत के अल्पसंख्यक समुदायों की कट्टरता एवं संकीर्णता भी खुशहाल समाज निर्माण की बड़ी बाधा है। भारत जैसे विशाल और असमान विकास वाले देश के लिए 126वां स्थान कितना मायने रखता है? भारत में कई तरह का भारत है, एक अमीर व खुशहाल भारत है, तो उसमें एक गरीब भारत भी है। गरीब भारत भी विकास कर रहा है, लेकिन आबादी इतनी ज्यादा है कि अभी देश को समग्रता में खुशहाल देशों में अव्वल स्थान बनाने में वक्त लगेगा।

मतदाता जागरूकता को डीएम ने डोर-टू-डोर टीम की रवाना

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। लोकसभा चुनाव में जिले की दोनों विधानसभा में 70 फीसदी से अधिक मतदान लक्ष्य पाने को पिछले चुनावों में कम मतदान प्रतिशत वाले बूथों में डोर-टू-डोर मतदाता जागरूकता का शुभारंभ जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी अभिषेक आनंद व सीडीओ अमृत पाल कौर ने शहर के पुरानी बाजार रामलीला मैदान से प्रत्येक घरों के बाहर मतदाता जागरूकता बाबत स्टीकर लगाकर किया।

शुक्रवार को डीएम-सीडीओ ने शकुंतला देवी, रोहिणी गर्ग, जयदेवी आदि बुजुर्ग मतदाताओं को माला पहनाकर मतदान करने को प्रेरित कर हरीझंडी दिखाकर डोर-टू- डोर मतदाता जागरूकता टीम रवाना किया। टीम घर-घर जाकर लोगों से सम्पर्क कर मतदान को प्रेरित करेगी। प्रत्येक घर के बाहर जागरूकता बाबत स्टीकर लगायेगी। कम मतदान प्रतिशत वाले बूथों को 11 टीमें बनाई हैं। अगुवाई को नोडल अधिकारी नामित किये हैं, जो प्रत्येक दिन एक-एक बूथ से सम्बन्धित घरों में जाकर जागरूकता चलायेंगे। जिलाधिकारी ने मतदाताओं से अपील किया कि लोकसभा चुनाव पर्व में बढ़-चढ़कर मतदान करें। पड़ोसियों, मित्रों, रिश्तेदारों को भी बतायें।

मतदाताओं को जागरूक करते डीएम-सीडीओ।

इस मौके पर एसडीएम सदर सौरभ यादव, सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी, एसडीएम आलोक सिंह, डीआईओएस संतोष कुमार मिश्रा, बीएसए लवप्रकाश यादव, डीपीआरओ इंद्रराज सिंह, डीपीओ पीड़ी विश्वकर्मा, ईओ लालजी यादव, स्वीप सुरेश प्रसाद, बूथ लेवल ऑफिसर, आंगनबाड़ी कार्यकत्री, आशा, एएनएम मौजूद रहे।

पत्रकार सुखेन्द्र अग्रहरि।

सुखेन्द्र बने बुन्देलखण्ड प्रभारी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। आल मीडिया एंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन (आमजा भारत) में बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्रभारी सुखेन्द्र अग्रहरि बनाये गये हैं।

शुक्रवार को आमजा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक द्विवेदी ने ये मनोनयन करते हुए आशा जताई है कि संगठन के उद्देश्यों व सिद्धांतों के प्रति संकल्पित होकर नियमों व शर्तों का पालन करेंगे। संगठन को मजबूत बनाने में सहयोग करेंगे।

एसपी ने सलामी लेकर साप्ताहिक परेड का किया निरीक्षण

आर्मोरर ने इंसास राइफल व पिस्टल के बारे में बताया

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने पुलिस लाइन में साप्ताहिक परेड की सलामी लेकर परेड का निरीक्षण किया।

शुक्रवार को पुलिस अधीक्षक ने परेड निरीक्षण दौरान कर्मचारियों का टर्न आउट देखा। परेड मैदान में मौजूद सभी टोलियों की ड्रिल देखी। आवश्यक सुधार के प्रतिसार निरीक्षक को निर्देश दिये। परेड मैदान में आर्मोरर शैलेन्द्र यादव ने इंसास राइफल व पिस्टल बाबत विस्तार से बताया। पुलिस अधीक्षक ने परिवहन शाखा देखकर वाहनों के रख-रखाव को प्रभारी परिवहन शाखा को निर्देश दिये। पुलिस लाइन स्थित मैस, आरक्षी बैरक, क्वार्टर गार्द, आवासीय बैरक, कैंटीन आदि का निरीक्षण कर प्रतिसार निरीक्षक शिवनारायण को साफ-सफाई को दिशा-निर्देश दिये। पुलिस अधीक्षक ने आदेश कक्ष में कर्मचारियों का अर्दली रूम किया। इस मौके पर प्रतिसार निरीक्षक शिवनारायण, प्रभारी यातायात शिवमूरत यादव, पीआरओ प्रदीप पाल आदि मौजूद रहे।

पुलिस लाइन का निरीक्षण करते एसपी।

सकुशल चुनाव को दें वाहनः डीएम

बैठक में अधिकारियों को चेताया

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने लोकसभा चुनाव को सकुशल सम्पन्न कराने को वाहनों की उपलब्धता बाबत बैठक में कहा कि सभी जिला स्तरीय अधिकारी जिन विभागों में शासकीय वाहन व अनुबंधित वाहन लगे हैं, तत्काल चुनाव कार्यालय को सूचना दें, ताकि चुनाव कार्य प्रभावित न हो सके।

शुक्रवार को कलेक्टेट्रट सभागार में बैठक की अध्यक्षता करते हुए डीएम ने कहा कि अगर कोई विभाग विभागीय वाहनों की सूचना नहीं देगा, उनके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी। संबंधित कार्यालयाध्यक्ष जिम्मेदार होंगे। एसीएमओ को निर्देश दिये कि आरबीएस टीम की जो गाड़ियां हैं, तत्काल चुनाव कार्यालय को दें। यात्री कर अधिकारी से कहा कि प्राइवेट हल्के वाहनों को अधिग्रहीत करें। यात्री कर अधिकारी ने विभागाध्यक्षों से कहा कि लोगों के विभाग में जो वाहन हैं, ड्यूटी चुनाव में लगी है, वे वाहन देने की सूचना परिवहन विभाग को दें। जिलाधिकारी ने एडीएम से कहा कि एफएसटी में लगे सभी अधिकारियों के वाहन चुनाव को दिये जायें। बैठक में एएसडीएम मो जसीम अहमद, अधीक्षण अभियंता विद्युत बृजेश कुमार, डीडीओ आरके त्रिपाठी, उपनिदेशक कृषि राजकुमार, सीबीओ डॉ सुभाष चन्द्र, डीआईओएस संतोष कुमार मिश्रा, बीएसए लवप्रकाश यादव, एक्सईएन लोनिवि प्रांतीय खंड सत्येंद्रनाथ, जल संस्थान डीके सत्संगी, सहायक आयुक्त वाणिज्य अवनीश कुमार चैधरी, यात्री कर अधिकारी संतोष कुमार तिवारी समेत जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

बैठक में निर्देश देते डीएम।

एसपी के निर्देश पर पांच पर मिनी गुण्डा एक्ट

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर लोकसभा चुनाव के मद्देनजर अपराधियों के खिलाफ जारी कार्यवाही में पांच लोगों के खिलाफ मिनी गुण्डा एक्ट की कार्यवाही हुई।

शुक्रवार को प्रभारी निरीक्षक पहाड़ी श्याम प्रताप पटेल ने भोली-भाली जनता में भय-आंतक फैलाकर गुण्डागर्दी करने वाले उपेन्द्र पुत्र लक्ष्मण प्रसाद चैरा, राममिलन पुत्र रामप्यारे पहाड़ी पर 110जी सीआरपीसी के तहत कार्यवाही की है। इसी क्रम में थानाध्यक्ष बहिलपुरवा राम सिंह ने भोली-भाली जनता में भय-आतंक फैलाकर गुण्डागर्दी करने वाले प्रदीप कुमार पुत्र बृजभूषण, मान सिंह पुत्र बृजभूषण नया पुरवा मजरा रूकमा बुजुर्ग व श्रीकिशन पुत्र कुबेर टेडी पुरवा मजरा मडैयन के खिलाफ 110जी सीआरपीसी के तहत कार्यवाही की है।

लोगों से विश्वासघात का आरोपी दबोचा, पांच ट्रैक्टर- ट्राली-कम्प्रेशर बरामद

एक आरोपी पुलिस पर फायर कर फरार

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। बरगढ थाना पुलिस ने लोगों से विश्वासघात कर पांच टैट्रक्टर, एक ट्राली व कम्प्रेशर मशीन समेत एक आरोपी को दबोचा है। पुलिस पर फायर कर एक फरार हो गया है।

शुक्रवार को पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह राघव प्रेक्षागार में पत्रकारों से रूबरू हुए। उन्होंने बताया कि एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी व सीओ मऊ जयकरन सिंह की देखरेख में प्रभारी निरीक्षक बरगढ राकेश मौर्य की टीम ने लोगों से विश्वासघात कर कमल सिंह पुत्र चन्द्रपाल सिंह निवासी गाढा कटरा थाना शंकरगढ जिला प्रयागराज टैट्रक्टर किराये पर लेकर बेंच देता था। पुलिस ने उसे दबोचा है। उस पर विभिन्न थानों में आपराधिक मामले दर्ज हैं। उसके कब्जे से छह टैट्रक्टर व एक ट्राली तथा कम्प्रेशर मशीन बरामद की है। बरगढ थाने के सेमरा गांव के हिमांशु सिंह पुत्र राजकुमार ने थाने में सूचना दी थी कि कमल सिंह पुत्र चन्द्रपाल सिंह व बाला उर्फ दीवेशपति द्विवेदी पुत्र अवधेशचन्द्र द्विवेदी निवासी डेरावारी शंकरगढ प्रयागराज उसका टैट्रक्टर ट्राली समेत 11 माह एग्रीमेन्ट पर किराये पर ले गये थे। माह पूरा होने पर किराया नहीं दिया। पुलिस ने मामला दर्जकर मुखबिर की सूचना पर कमल सिंह को दबोचा। पूंछताछ में उसने बताया कि टैट्रक्टर उसके साथी बाला द्विवेदी बेंचने जा रहे थे। वे लोग इसी तरह से लोगों से धोखाधडी कर टैट्रक्टर बेंचते थे। पैसे आपस में बांट लेते थे। पुलिस ने मडहा जंगल से सभी टैट्रक्टरों को बरामद किया। इस दौरान बाला द्विवेदी पुलिस पर जानलेवा फायरिंग कर भागने में सफल रहा। मौके से पुलिस ने पांच टैट्रक्टर बरामद किये। पुलिस ने मामला दर्जकर आरोपी को जेल भेजा है। टीम में प्रभारी निरीक्षक बरगढ राकेश मौर्य, दरोगा राधेश्याम सिंह, दीवान रमेशचन्द्र, सिपाही योगेश, शुभम पटेल व अखिलेश शामिल रहे।

पुलिस गिरफ्त में विश्वासघाती के बारे में बताते एसपी।

केजरीवाल की गिरफ्तारी पर आप में उबाल, लोकतंत्र की हत्या पर उतारू हैं नरेन्द्र मोदी

केजरीवाल को कैद कर सकते हैं, सोच को नहीं

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। आम आदमी पार्टी जिलाध्यक्ष संतोषीलाल शुक्ला की अगुवाई में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के विरोध में कर्वी कचहरी परिसर से धनुष चैराहे होते हुए पटेल तिराहे तक जोरदार नारेबाजी के साथ प्रदर्शन हुआ। प्रदर्शनकारियों ने धरना देकर मोदी हाय-हाय के नारे लगाये।

शुक्रवार को आम आदमी पार्टी जिलाध्यक्ष संतोषीलाल शुक्ला की अगुवाई में दिल्ली के मुख्यमंत्री/आम आदमी पार्टी मुखिया अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के विरोध में जिला मुख्यालय में जोरदार प्रदर्शन हुआ। नरेंद्र मोदी हाय-हाय, मोदी तेरी तानाशाही नहीं चलेगी-नहीं चलेगी। जब-जब मोदी डरता है, ईडी को आगे करता है- आदि नारे लगाये। जिलाध्यक्ष सन्तोषीलाल शुक्ला ने कहा कि अरविंद केजरीवाल से नरेंद्र मोदी डरे हैं। नरेंद्र मोदी को सबसे ज्यादा डर आम आदमी पार्टी से लगता है। लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी हार रहे हैं। इसीलिए नरेंद्र मोदी ने लोस चुनाव घोषित होते ही अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार करवा दिया, ताकि अरविंद केजरीवाल चुनाव प्रचार न कर सके। अरविंद केजरीवाल भारत के लोगों के दिलों में बसते हैं। हर गरीब के बेटे हैं, अरविंद केजरीवाल को कैद किया जा सकता है, उनकी सोच को कैद नहीं किया जा सकता है। जिलाध्यक्ष ने कहा कि केजरीवाल ने दिल्ली में गरीबों के बच्चों को विश्व स्तरीय सरकारी स्कूल बनवाये हैं। हर गरीब के बच्चे को मुफ्त शिक्षा दी जाती है। केजरीवाल ने दिल्ली में विश्व स्तरीय अस्पताल बनवाये हैं। मोहल्ला क्लीनिक खोले हैं। हर गरीब को मुफ्त इलाज मिलता है। हर टेस्ट मुफ्त होते हैं। केजरीवाल ने हर बुजुर्ग को मुफ्त तीर्थ यात्रा कराई है। महिलाओं को मुफ्त बस यात्रा कराते हैं। एक हजार प्रति माह देने का ऐलान किया है। केजरीवाल अपने कामों से दिल्ली के हर गरीब के बेटे बन चुके हैं। नरेंद्र मोदी लोकतंत्र की हत्या पर उतारू हैं। शराब घोटाला जैसा कुछ नहीं हुआ। झूंठी गवाही पर साजिश की गई है। लोस चुनाव में देश की जनता नरेंद्र मोदी को सबक सिखाएगी।

इस मौके पर प्रांत महासचिव अंकित सिंह, अविनाश चंद्र त्रिपाठी, शिवशंकर, लवलेश केसरवानी, राजबहादुर साहू, नर्बदा प्रसाद यादव, गया प्रसाद पाल, शिवप्रकाश सिंह, योगेन्द्र रैकवार, छेदीलाल सिंह खंगार, अनुरोध सिंह यादव, प्रेमचंद्र सिंह, दीपक कुमार, बीरेंद्र कुमार यादव, श्यामबाबू त्रिपाठी, जुगुल किशोर जाटव, दिनेश सिंह, सुरेश सिंह, अमित कुमार, अश्विनी कुमार, विकास कुमार आदि मौजूद रहे।

पटेल तिराहे पर नारेबाजी करते आप कार्यकर्ता।

होली पर्व पर जारी है छापेमारी, लिये चार नमूने

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन आयुक्त के आदेश व जिलाधिकारी के निर्देश पर होली पर्व पर आम जनता को शुद्ध व सुरक्षित खाद्य/पेय पदार्थ सुलभ कराने व मिलावटी खाद्य पदार्थों के खिलाफ कार्यवाही को खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन ने जगह-जगह छापेमारी की।

शुक्रवार को तहसीलदार व नायब तहसीलदार कर्वी की अगुवाई में कर्वी शहर में विभिन्न खाद्य पदार्थों के चार नमूने लिये। तहसील मानिकपुर में भी नमूने लिये गये। सहायक आयुक्त खाद्य डॉ सीआर प्रजापति ने बताया कि शुक्रवार तक विभिन्न खाद्य पदार्थों के 20 नमूने लेकर जांच व विश्लेषण को प्रयोगशाला भेजे गये हैं। खाद्य कारोबारियों को हिदायत दी है कि किसी तरह के मिलावटी खाद्य/पेय पदार्थ का क्रय-विक्रय न करें। अन्यथा वैधानिक कार्यवाही की जायेगी। उपभोक्तओं से अपील किया कि अत्यधिक रंगीन खाद्य पदार्थों के सेवन से बचें। ताजा व सुरक्षित खाद्य पदार्थ ही प्रयोग में लायें। ये कार्यवाही जारी रहेगी।

छापेमारी करती टीम।

25 को जिला-26 को मऊ की बन्द रहेंगी शराब दुकानेंः डीएम

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी/जिला मजिस्ट्रेट अभिषेक आनन्द ने बताया कि जिले में होली पर्व के मद्देनजर कानून व्यवस्था व शान्ति बनाये रखने को जिला मजिस्टेट्रट के बतौर संयुक्त प्रान्त आबकारी अधिनियम 1910 की धारा 59 में प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए होली पर रंग खेलने 25 मार्च को जिले की सभी देशी-विदेशी शराब, बीयर, भांग फुटकर बिक्री दुकानों व थोक बिक्री पर पूर्ण प्रतिबन्ध के आदेश जारी किये हैं। मऊ थाने के नौ गांवों में बैजला परम्परा अनुसार होली पर्व अगले दिन होता है। बैजला परम्परा अनुसार थाना मऊ के नौ गांव अहिरी, सुरौधा मऊ, शिवपुर, मंडौर, मवईकला, बरवार, परदवां व ताड़ी में 26 मार्च को मनाई जायेगी। नौ गांवों में पांच किमी के दायरे में मऊ कस्बे की पांच आबकारी दुकाने सांस्कृतिक परम्परा को ध्यान में रखते हुए 25 मार्च को खोलने व 26 मार्च को सिर्फ थाना मऊ की पांच दुकाने देशी-विदेशी शराब की पूर्णतः बन्द करने के आदेश जारी किये हैं। इस बन्दी का कोई प्रतिफल लाइसेंस धारकों को देय नहीं होगा। कोई भी व्यक्ति मादक पदार्थों का न संचय करेगा, न वितरण करेगा, न लेकर चलेगा। उल्लंघन की दशा में अनुज्ञापियों/दोषी लोगों पर कार्यवाही की जायेगी। इस आदेश का सख्ती से पालन किया जाये।

31 मई के पहले होगा मूल्यांकन कार्य पूराः डॉ चौहान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। उप्र माध्यमिक शिक्षा परिषद से संचालित इंटरमीडिएट बोर्ड परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन अंतिम दौर में है। निर्धारित 31 मई के पहले सभी उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन पूरा होने की उम्मीद है। अब तक 111047 कापियों में 96472 उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन कार्य हो चुका है, जबकि 14575 कापियां शेष हैं। शुक्रवार को सीआईसी के उपनियंत्रक डॉ रणवीर सिंह चैहान ने बताया कि मूल्यांकन केंद्र में अब तक हाईस्कूल की 54373 व इंटर की 31686 कापियों का मूल्यांकन हो चुका है। अब हाईस्कूल में 2815 व इंटर में 11760 कॉपियां जांचने को शेष हैं। हाईस्कूल में 25 व इंटर में 40 टोली लगाई है। जांची उत्तर पुस्तिकाओं का उप प्रधान परीक्षक निरंतर परीक्षण कर रहे हैं। जांची उत्तर पुस्तिकाओं का अंकेक्षण भी हो रहा है। कापियों के मूल्यांकन में किसी तरह की त्रुटियां न रहें, विशेष ध्यान दिया जा रहा है। मूल्यांकन कार्य को व्यवस्थित ढंग से कराने में परीक्षा प्रभारी श्रीनिवास त्रिपाठी, ऋषि कुमार शुक्ला, लालमन, फूलचन्द्र चंद्रवंशी, सतीश रैकवार, डॉ रमेश सिंह चंदेल, डॉ आलोक शुक्ला, रामगोपाल दुबे, ज्ञानेंद्र चैधरी, मनोज पांडेय, रामबचन सिंह, जयप्रकाश, विनय त्रिपाठी, रमेश कुमार, पुष्पेंद्र सिंह, ललक यादव, प्रदीप शुक्ला, वीरेंद्र गर्ग आदि का योगदान है।

लोहिया वाहिनी के एजाज बने राष्ट्रीय सचिव

चित्रकूट। सपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की मंजूरी से एजाज सिद्दीकी को सपा लोहिया वाहिनी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में राष्ट्रीय सचिव नामित किया है। इस मनोनयन पर सपा राज्य कार्यकारिणी सदस्य अनुज सिंह यादव, मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड जिलाध्यक्ष निजामुद्दीन सिद्दीकी आदि ने खुशी जताई है।

एजाज सिद्दीकी।

लोस प्रत्याशियों से मंदाकिनी नदी को लेकर बुन्देली सेना भरवायेगी संकल्प पत्र

चुनाव जीतने बाद सांसद का होगा घेराव

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। लोकसभा चुनाव में बुंदेली सेना ने प्रत्याशियों से मंदाकिनी नदी को लेकर संकल्प पत्र भरवाने की योजना बनाई है। संकल्प पत्र के बिन्दुओ पर चुनाव जीतने वाले सांसद का घेराव किया जाएगा। उन्हें बाध्य किया जाएगा कि चुनाव दौरान भरे संकल्प पत्र को वह पूरा करायें।

शुक्रवार को बुंदेली सेना जिलाध्यक्ष अजीत सिंह ने बताया कि होली पर्व के मद्देनजर चित्रकूट में पन्नालाल घाट के आसपास सफाई अभियान जारी है। मंदाकिनी नदी धर्मनगरी की लाइफलाइन है। करोड़ों श्रद्धालु नदी में हर साल डुबकी लगाते हैं। लाखों लोग साल भर में गंगा आरती व अन्य धार्मिक कार्यक्रम करते हैं। नदी को लेकर किये जाने वाले प्रयास नाकाफी हैं। लोकसभा चुनाव में मंदाकिनी नदी को भी मुद्दा बनाने का प्रयास किया जाएगा। चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों से मंदाकिनी नदी को लेकर संकल्प पत्र भरवाये जाएंगे। इसी संकल्प पत्र पर चुनाव जीतने के बाद सांसद का घेराव होगा। मांग की जायेगी कि नदी का सीमांकन करायें। विद्युत शवदाह गृह बनाया जाये। मछली मारने वालों पर कार्यवाही, नियमित नदी सफाई व्यवस्था, वर्षा जल संचित करने को पहाडी क्षेत्र के आसपास किसी बांध का निर्माण, प्रतिवर्ष नदी में मछली बच्चे डलवाने का नियम, कर्वी से चित्रकूट तक जल यातायात की व्यवस्था, रिवर फ्रंट विकसित करने, नदी किनारे वृक्षारोपण, कर्वी के घाटों का पुनर्निर्माण, नदी में सीधे गिर रहे नालों की रोकथाम, नदी में पालीथिन गंदगी फेंकने वालों पर जुर्माना, नदी घाटों में सीसीटीवी व्यवस्था, जलमित्र बनाने समेत अन्य मांगे संकल्प पत्र में शामिल की जायेंगी। नदी को लेकर बुंदेली सेना निरंतर प्रयासरत है। फिलहाल होली तक घाटों की सफाई जारी है।

नदी की सफाई करती बुन्देली सेना।

पहली बार 22 अप्रैल से दो मई तक लगेगा एनसीसी शिविर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। 17 यूपी बटालियन एनसीसी हेडक्वार्टर प्रयागराज ने पहली बार चित्रकूट जिले में एनसीसी का वार्षिक प्रशिक्षण शिविर 22 अप्रैल से दो मई तक चित्रकूट इंटर कॉलेज कर्वी में लगाने का निर्णय लिया है। एनसीसी मुख्यालय से आये लेफ्टिनेंट कर्नल कमांडिंग ऑफिसर शरद कुमार सिंह ने स्थलीय निरीक्षण कर व्यवस्थाओं के लिए प्रधानाचार्य डॉ रणवीर सिंह चैहान से चर्चा की। एनसीसी अधिकारियों को आवश्यक निर्देश देकर शिविर आयोजन की तैयारियों में जुटने के निर्देश दिये। शुक्रवार को कमांडेंट ऑफिसर ने बताया कि कैंप में प्रयागराज, कौशांबी, चित्रकूट, प्रतापगढ़ जिलों से तकरीबन पांच सौ छात्र-छात्रायें प्रशिक्षण शिविर में हिस्सा लेंगे। प्रशिक्षण दौरान आर्मी की गतिविधियों बाबत एनसीसी के छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षित किया जाता है। उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा दी जाती है। इस मौके पर एडम अफसर एस वेंकटेश, सूबेदार मेजर दलबीर सिंह, सुबेदार देवेंद्र कुमार यादव, एनसीसी अधिकारी ऋषि कुमार शुक्ला, सुनील कुमार शुक्ला आदि मौजूद रहे।

शराब ठेके से लोग परेशान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राजापुर थाने के नांदिन कुर्मियान गांव के ननकू शुक्ला पुत्र स्व हरी प्रसाद शुक्ला ने जिला आबकारी अधिकारी को लिखे पत्र में कहा कि देशी शराब ठेका अन्यत्र खोला जाये।

शुक्रवार को नांदिन कुर्मियान के ननकू शुक्ला ने आबकारी अधिकारी को लिखे पत्र में कहा कि उसके घर के पास देशी शराब ठेका होने से शराबियों व अराजक तत्वों का जमावडा लगता है। शराबी-नशेड़ी ठेके से शराब लेकर घर के सामने खाली जगह होने से जमीन में बैठकर शराब पीते हैं। नशे में धुत होकर एक-दूसरे को मां-बहन की गलियां देते हैं। आये दिन अश्लील हरकत, लड़ाई-झगड़ा, मारपीट करते हैं। बहू-बेटियों का घर से बाहर निकलना दुश्वार है। शराबियों ने गांव में चार बार चोरी भी की है। मना करने पर गाली-गलौज व मारपीट की धमकी देते हैं। शराबियों-नशेड़ियों से 20 परिवार के लोग काफी आहत हैं। शराब ठेका वहां से हटाकर दूसरी जगह खोला जाये। गांव के कई लोगों ने आबकारी अधिकारी को लिखे पत्र में हस्ताक्षर किये हैं।

नेपाल में मीडिया पर अंकुश लगाने के अपने निर्देश पर दो घंटे भी नहीं टिक पाई प्रचण्ड सरकार

काठमांडू । प्रचण्ड सरकार नेपाल में मीडिया पर अंकुश लगाने के अपने निर्देश पर दो घंटे भी नहीं टिक पाई। गृह मंत्रालय ने गुरुवार दोपहर देश के सभी 77 जिलों के जिलाधिकारी को मीडिया, पत्रकारों और सोशल मीडिया पर विशेष निगरानी के लिए एक अलग डेस्क स्थापित करने का 15 पन्नों का निर्देश जारी किया था।

इसमें कहा गया था कि किसी भी अखबार, रेडियो, टीवी चैनल, सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म पर यदि नियम विरुद्ध कुछ भी प्रकाशित या प्रसारित होता है कि तत्काल गिरफ्तारी कर मुकदमा चलाया जाए।गृह मंत्रालय के इस निर्देश की कॉपी मीडिया में लीक होते ही आलोचना शुरू हो गई।

मीडिया ने प्रधानमंत्री प्रचण्ड और गृहमंत्री रवि लामिछाने की जमकर आलोचना की। नेपाल पत्रकार महासंघ सहित अनेक संस्थाओं ने इस कदम का विरोध किया गया। इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार पर हमला बताया। देशव्यापी विरोध होने के बाद गृह मंत्रालय ने अपने निर्दे को वापस ले लिया।

अमेरिका में राम मंदिर रथयात्रा 25 मार्च से, शिकागो से आगाज, हनुमान जयंती पर होगा समापन

वाशिंगटन। विश्व हिंदू परिषद ऑफ अमेरिका (वीएचपीए) के नेतृत्व में शिकागो से 25 मार्च को राम मंदिर रथयात्रा शुरू होगी। यह यात्रा 60 दिन में 8,000 से भी अधिक मील की दूरी तय करते हुए 48 राज्यों के 851 मंदिरों तक जाएगी। वीएचपीए के महासचिव

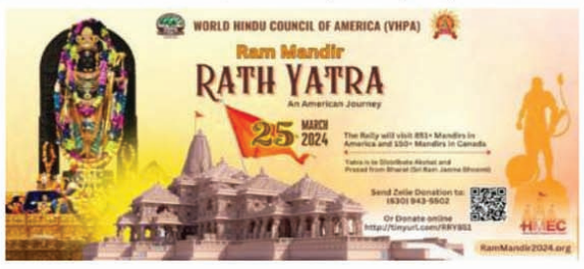

अमिताभ मित्तल ने बताया कि टोयोटा सिएना वैन के ऊपर बने रथ में भगवान राम, देवी सीता, लक्ष्मण और हनुमानजी की मूर्तियां होंगी। उनके साथ अयोध्या के राम मंदिर से विशेष प्रसाद और प्राण प्रतिष्ठा पूजित अक्षत का कलश ले जाया जाएगा।

उन्होंने बताया कि कनाडा में रथ यात्रा निकाली जाएगी। इसका आयोजन विश्व हिंदू परिषद ऑफ कनाडा ने किया है। हिंदू मंदिर सशक्तिकरण परिषद (एचएमईसी) की तेजल शाह का कहना है कि इसका प्रमुख उद्देश्य लोगों को हिंदू धर्म के बारे में जागरूक और शिक्षित करते हुए सशक्त बनाना है। विश्व हिंदू परिषद ऑफ अमेरिका के महासचिव मित्तल ने बताया कि यात्रा का समापन 23 अप्रैल को हनुमान जयंती के अवसर पर होगा।

भारत की सहायता से नेपाल में 400 साल पुराने बौद्ध गुम्बा का पुनर्निर्माण शुरू

काठमांडू । सिन्धुपालचोक जिले में नेपाल-चीन सीमा पर स्थित 400 वर्ष पुराने जीर्ण-शीर्ण बौद्ध गुम्बा के पुर्ननिर्माण के लिए भारत सरकार ने 10 करोड़ रुपये मुहैया कराए हैं। साल 2015 में आए भूकम्प में यह ध्वस्त हो गया था। गुरुवार को काठमांडू स्थित भारतीय दूतावास के अधिकारी की उपस्थिति में इसका शिलान्यास किया गया।

इस पर स्थानीय लोगों ने खुशी जताई है। भोटेकोशी गांव पालिका के अध्यक्ष पासांग नोर्बु शेरपा गांव के तरफ से भारत सरकार और भारतीय दूतावास के प्रति आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि इसके दो साल के भीतर बन जाने की उम्मीद है। इस गुम्बा के प्रमुख बौद्ध धर्मावलम्बियों के अगुवा दोर्जे लामा का कहना है कि 2013 में स्थानीय लोगों से एकत्र दो करोड़ चंदा से इसकी मरम्मत कराई गई थी। 2015 के विनाशकारी भूकम्प में यह ध्वस्त हो गया था। शिलान्यास कार्यक्रम भोटेकोशी गांव पालिका के लिस्ती में हुआ है। वार्ड अध्यक्ष राजू लामा का कहना है कि गांव में 90 प्रतिशत लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं।

दुनिया में पहली बार सूअर की किडनी से हुआ ट्रांसप्लांट, चिकित्सकों को मरीज के जल्द ठीक होने की उम्मीद

वाशिंगटन। बोस्टन में डॉक्टरों ने सूअर की आनुवंशिक रूप से संशोधित किडनी 62 वर्षीय एक मरीज में प्रत्यारोपित की। डॉक्टरों ने कहा कि वेमाउथ (मैसाचुसेट्स) के रहने वाले मरीज रिचर्ड रिक स्लेमैन ठीक हो रहे हैं और उन्हें जल्द ही छुट्टी मिलने की उम्मीद है। मैसाचुसेट्स जनरल अस्पताल ने एक बयान में कहा कि यह पहली बार है।

प्रधानमंत्री मोदी पहुंचे भूटान, पारो हवाई अड्डे पर जोरदार स्वागत

थिम्फू। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भूटान की दो दिवसीय राजकीय यात्रा पर आज यहां पहुंच गए। पारो हवाई अड्डे पर भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग टोबगे ने अपने भारतीय समकक्ष नरेन्द्र मोदी को गले लगाकर उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। प्रधानमंत्री मोदी 22 से 23 मार्च तक पड़ोसी देश में रहेंगे। इससे पहले पारो हवाई अड्डे पर खराब मौसम के कारण भारतीय प्रधानमंत्री मोदी की भूटान यात्रा 21 मार्च को स्थगित कर दी गई थी। भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज सुबह करीब सात बजे नई दिल्ली से भूटान के लिए रवाना हुए। भूटान यात्रा के संबंध में आज सुबह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक्स पोस्ट में लिखा,' मैं भारत-भूटान साझेदारी को और मजबूत करने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लूंगा। मैं भूटान के महामहिम राजा, महामहिम चतुर्थ ड्रुक ग्यालपो और

प्रधानमंत्री के साथ बातचीत के लिए उत्सुक हूं।'

इससे पहले भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग टोबगे पिछले सप्ताह गुरुवार से भारत की पांच दिवसीय यात्रा पर थे। जनवरी में प्रधानमंत्री का पदभार संभालने के बाद यह उनकी पहली विदेश यात्रा थी। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की थी।

फ्रांस के राष्ट्रपति की मुक्केबाजी की तस्वीरें वायरल, यूजर्स बोले- यह रूस के खिलाफ मैक्रों का कड़ा रुख

थिम्फू। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों की मुक्केबाजी करते हुए तस्वीरे सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही है। दरअसल, मैक्रों के फोटोग्राफर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर उनकी ये तस्वीर शेयर की थी। एक तस्वीर में फ्रांस के राष्ट्रपति को अपने दांत पीसते दिखे, जबकि, दूसरी तस्वीर में वह अपने दाहिने हाथ से पंचिंग बैग को मारते हुए दिखे।

सोशल मीडिया पर शेयर हुई मैक्रों की तस्वीरें

सोशल मीडिया पर तस्वीर के वायरल होते ही कुछ लोगों ने इसे मॉस्को के खिलाफ मैक्रों के बढ़ते कड़े रूख के साथ जोड़ा। जबकि, कुछ लोगों ने उनकी तुलना रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से की। बता दें कि पुतिन जूडो का अभ्यास करते हुए और घोड़े की सवारी करते हुए अपनी तस्वीरें शेयर करते रहते हैं। मैक्रों के फोटोग्राफर ने दो दिन पहले इंस्टाग्राम पर तस्वीरें शेयर की थी।

यूजर्स ने दी प्रतिक्रिया

पोस्ट किए जाने के बाद से ही इस तस्वीर को 12,000 से अधिक लाइक मिल चुका है। यूजर्स ने इन तस्वीरों पर प्रतिक्रिया भी दी है। एक यूजर ने कहा, 'शॉट्स, मैसेज और इम्पैक्ट के लिए ये दो तस्वीरें हमें बहुत पसंद आईं। अद्भूत।' एक दूसरे यूजर ने कहा, 'मिस्टर प्रेसिडेंट क्लब में आपका

स्वागत है। यह सबसे अच्छा खेल है।' एक अन्य यूजर ने कहा, 'साहस और दृढ़ संकल्प, एक सच्चा योद्धा। खूबसूरत शॉट्स।' वहीं, दूसरे अन्य यूजर ने कहा, 'इन खूबसूरत तस्वीरों के लिए धन्यवाद, ये विरोधियों के साथ-साथ कुछ पत्रकारों और उन सभी नफरत करने वालों को नाराज करेगी, जिनमें जान नहीं है। मैं समझता हूं कि राष्ट्रपति को इन पंचिंग बैगों को उतारने की जरूरत है, क्योंकि जिम्मेदारियों का सारा भार भी उन्हीं पर है। आपकी ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीरें शानदार हैं।'

ब्रिटिश राजकुमारी केट मिडलटन के मेडिकल रिकॉर्ड लीक होने पर हंगामा, अस्पताल कर्मियों से पूछताछ शुरू

लंदन। ब्रिटेन में नागरिकों की निजता की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार इंफोर्मेशन कमिश्नर ऑफिस (आईसीओ) ने ब्रिटिश राजघराने की बहू केट मिडलटन के मेडिकल रिकॉर्ड के कथित लीक मामले में जांच शुरू कर दी है। इस बीच एक पुरानी जांच रिपोर्ट की ब्रिटेन में चर्चा चल रही है, जिसमें कहा गया कि मरीज के मेडिकल रिकॉर्ड मेडिकल स्टाफ को आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। यह रिपोर्ट केयर क्वालिटी कमीशन ने साल 2021 में जारी की थी।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, पुरानी रिपोर्ट में दावा किया गया कि बड़े अस्पतालों में मरीजों के रिकॉर्ड सुरक्षित रखे जाते हैं, लेकिन वे मेडिकल कर्मियों को आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। केट मिडलटन की बीती जनवरी

में सर्जरी हुई थी। यह सर्जरी लंदन के एक अस्पताल में हुई। दो हफ्ते अस्पताल में रहने के बाद केट अस्पताल से डिस्चार्ज हो गई थी। हाल ही में आरोप लगे कि अस्पताल में केट के मेडिकल रिकॉर्ड लीक हुए। इस मामले में तीन कर्मचारियों से पूछताछ हो चुकी है। वहीं केट मिडलटन सर्जरी के बाद से ही सार्वजनिक तौर पर नहीं दिखाई दी हैं। जिसके चलते उनकी सेहत को लेकर सोशल मीडिया पर चर्चाओं का दौर चल रहा है।

अस्पताल के सीईओ ने बयान जारी कर बताया कि हमारे अस्पताल में उन लोगों के लिए कोई जगह नहीं है, जो जानबूझकर मरीजों के विश्वास का उल्लंघन करते हैं। हमारे यहां मरीजों के दस्तावेजों की समीक्षा की बेहतर व्यवस्था है और अगर इसका उल्लंघन हुआ है तो दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। बता दें कि ब्रिटेन में मरीजों के मेडिकल दस्तावेज बिना मरीज की मंजूरी के देखना अपराध है।

पाकिस्तान में ग्वादर बंदरगाह प्राधिकरण परिसर में बलूच उग्रवादियों का हमला, सुरक्षा बलों ने सात हमलावरों ढेर किया

कराची। पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत स्थित ग्वादर बंदरगाह प्राधिकरण परिसर में सुरक्षा बलों ने हथियारों से लैस बलूच उग्रवादियों के हमले को नाकाम करते हुए सात उग्रवादियों को ढेर कर दिया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अलगाववादी बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) बलूचिस्तान में चीन के निवेश का विरोध करता है, और चीन एवं पाकिस्तान पर संसाधन संपन्न प्रांत के शोषण का आरोप लगाता है। ग्वादर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जोहैब मोहसिन ने मीडिया को बताया कि ''सात हमलावर मारे गए।''मकरान डिवीजन के आयुक्त सईद अहमद उमरानी ने हमले की पुष्टि करते हुए कहा कि हमलावर ग्वादर बंदरगाह प्राधिकरण की इमारत में घुसने का प्रयास कर रहे थे। इससे पहले, स्थानीय मीडिया की खबरों में कहा गया कि सुरक्षा बलों के अभियान में आठ उग्रवादी मारे गये। अभी तक किसी सुरक्षाकर्मी या आम नागरिक के हताहत होने की सूचना नहीं मिली है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा एवं संरक्षा विभाग ने एक बयान में कहा कि ग्वादर स्थित संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों के सात कर्मी ''सुरक्षित'' हैं। प्रतिबंधित बीएलए के माजिद ब्रिगेड ने हमले की जिम्मेदारी ली है। यह बीएलए का आत्मघाती दस्ता है जो मुख्यतः सुरक्षा बलों और चीनी प्रतिष्ठानों को निशाना बनाता है। ईरान और अफगानिस्तान की सीमा से लगे बलूचिस्तान में लंबे समय से हिंसा छिड़ी है। पूर्व में बलूच विद्रोही समूहों ने 60 अरब अमेरिकी डॉलर की चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) परियोजनाओं को निशाना बनाते हुए कई हमले किए हैं।

डीपफेक वीडियो का शिकार हुईं इटली की प्रधानमंत्री मेलोनी, एक लाख यूरो का मुआवजा मांगा

रोम। इटली की पीएम जॉर्जिया मेलोनी डीपफेक का शिकार हो गई हैं। उन्होंने डीपफेक अश्लील वीडियो बनाने और उसे ऑनलाइन डालने के आरोपी से एक लाख यूरो का हर्जाना मांगा है। भारतीय मुद्रा में यह करीब 90 लाख रुपए के बराबर है। दावा है कि दो लोगों ने मेलोनी का चेहरा वयस्क फिल्म स्टार के चेहरे पर लगाया और उसे अमेरिकी पोर्न वेबसाइट पर अपलोड कर दिया।

आरोपियों में पिता-पुत्र शामिल है। बेटे की उम्र 40 साल और उसके पिता की उम्र 73 साल है। दोनों ने मिलकर मेलोनी का अश्लील वीडियो बनाया। दोनों आरोपियों पर मेलोनी ने मानहानि का मुकदमा दायर किया है। दोनों गिरफ्तार कर लिए गए हैं। पुलिस ने कहा, उसने मोबाइल डिवाइस को ट्रैक करके आरोपी को ढूंढा। इसका इस्तेमाल उन्होंने वीडियो को ऑनलाइन पोस्ट करने के लिए किया था। डीपफेक वीडियो 2022 में उनके देश के पीएम बनने से पहले का है। इस वीडियो को तब से लाखों बार देखा जा चुका है। मेलोनी ससारी कोर्ट में 2 जुलाई को गवाही देंगी।

मुआवजे की राशि दान करेंगी मेलोनी

पीएम मेलोनी की कानूनी टीम ने कहा, हर्जाने की मांग करना एक प्रतीकात्मक कार्रवाई है। मेलोनी मुआवजे की पूरी राशि हिंसा की शिकार महिलाओं

की सहायता के लिए दान करेंगी। मेलोनी की वकील मारिया गिउलिया मारोंगिउ ने कहा कि मुआवजे की मांग उन महिलाओं के लिए एक संदेश है, जो इस तरह की हिंसा की शिकार हैं। मेलोनी का कहना है कि हिंसा की शिकार महिलाएं आवाज उठाने से न डरें।

एआई पर संयुक्त राष्ट्र में प्रस्ताव पर मतदान, सुरक्षा के लिए अमेरिका ने मांगा सभी देशों का समर्थन

वाशिंगटन। संयुक्त राष्ट्र महासभा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) पर मतदान के लिए तैयार है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि शक्तिशाली नई तकनीक सभी देशों को लाभान्वित करे, मानवाधिकारों का सम्मान करे और सुरक्षित, संरक्षित व भरोसेमंद साबित हो। इस प्रस्ताव का प्रायोजक अमेरिका है। उसने कहा, उम्मीद है कि विश्व निकाय इसे आम सहमति से अपनाएगा और यूएन के सभी 193 देश इसका समर्थन करेंगे। अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) जेक सुलिवन ने कहा कि यदि प्रस्ताव अपनाया गया तो यह एआई के सुरक्षित उपयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम होगा। उन्होंने कहा, यह संकल्प एआई के विकास-इस्तेमाल में सिद्धांतों के आधारभूत सेट के लिए वैश्विक समर्थन का प्रतिनिधित्व करेगा। यह जोखिमों का प्रबंधन करते हुए एआई सिस्टम का लाभ उठाने का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। मसौदा प्रस्ताव का उद्देश्य अमीर विकसित देशों और गरीब विकासशील देशों के बीच डिजिटल विभाजन को खत्म करना है और यह सुनिश्चित करना है कि एआई पर चर्चा में वे सभी शामिल हों। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना भी है कि विकासशील देशों के पास एआई का लाभ उठाने के लिए तकनीक और क्षमताएं हों, ताकि बीमारियों का पता लगाना, बाढ़ की भविष्यवाणी करना, किसानों व श्रमिकों की मदद आसान हो सके।अमेरिका द्वारा संयुक्त राष्ट्र में लाया जाने वाला प्रस्ताव एआई विकास व उपयोग में तेजी को मान्यता देता है। साथ ही सुरक्षित और भरोसेमंद एआई प्रणालियों पर वैश्विक सहमति की तात्कालिकता पर जोर देता है। यह मानता है कि एआई प्रणालियों का शासन एक उभरता हुआ क्षेत्र है जिसके लिए संभावित शासन दृष्टिकोण पर और चर्चा की आवश्यकता है। मसौदे में एआई को विनियमित करने की जरूरत का समर्थन किया है।

यूरोपीय संघ के सांसदों ने 13 मार्च को दुनिया के पहले व्यापक एआई नियमों को अंतिम मंजूरी दे दी है, जो कुछ अंतिम औपचारिकताओं के बाद मई या या जून तक प्रभावी हो जाएंगी।

एयर इंडिया पर डीजीसीए ने 80 लाख रुपये का लगाया जुमार्ना

नई दिल्ली। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने टाटा समूह की अगुवाई वाली एयरलाइन एयर इंडिया पर 80 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया है। डीजीसीए ने उड़ान के वक्त नियमों का उल्लंघन करने पर यह कार्रवाई की है। विमान नियामक डीजीसीए ने शुक्रवार को जारी एक बयान में कहा कि एयर

इंडिया पर 80 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया गया है। यह जुमार्ना उड़ान सेवा अवधि सीमित करने और चालक दल के लिए थकान प्रबंधन प्रणाली से संबंधित मानदंडों का उल्लंघन करने के लिए लगाया गया। एयरलाइन पर यह कार्रवाई जनवरी के ऑडिट में हुए कई खुलासों के बाद की गई है।विमानन नियामक डीजीसीए ने जनवरी में एयर इंडिया का स्पॉट ऑडिट किए थे जिसकी चालक दल के लिए अल्ट्रा-लंबी दूरी की उड़ानों से पहले और बाद में जरूरी आराम न देने, लेओवर के दौरान जरूरी आराम न देने का मामला सामने आया था। रिपोर्टों और सबूतों के विश्लेषण से पता चला कि एयर इंडिया ने कुछ मामलों में 60 साल से अधिक उम्र के दोनों चालक दल के सदस्यों के साथ उड़ान भरी थी।डीजीसीए के मुताबिक एयरलाइन ने चालक दल को पर्याप्त साप्ताहिक आराम तथा लंबी उड़ानों से पहले और बाद में पर्याप्त आराम देने में कोताही बरती। इसके बाद नियामक ने एक मार्च को एयरलाइन के उल्लंघनों के संबंध में एयर इंडिया को कारण बताओ नोटिस जारी किया था। विमान नियामक ने इस नोटिस पर एयरलाइन के जवाब को संतोषजनक नहीं पाया।

उल्लेखनीय है कि इससे पहले डीजीसीए ने एयर इंडिया पर 30 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया था। उस दौरान एयरलाइंस को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था। दरअसल 12 फरवरी को एयर इंडिया से यात्रा करने वाले 80 वर्षीय बुजुर्ग यात्री को व्हीलचेयर नहीं दी गई थी, जिससे उस बुजुर्ग यात्री की मृत्यु हो गई थी।

होली के पहले बाजार में तेजी, निवेशकों ने 1 दिन में ही की 2.39 लाख करोड़ की कमाई

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार ने आज शुरूआती कमजोरी का सामना करने के बाद जबरदस्त मजबूती का प्रदर्शन किया। होली के पहले के आखिरी कारोबारी दिन बाजार में तेजी के कारण निवेशकों ने भी जम कर मुनाफा कमाया। आज कारोबार की शुरूआत गिरावट के साथ हुई थी लेकिन पहले घंटे के कारोबार में ही तेजड़ियों ने बाजार पर कब्जा जमा लिया। इसके कारण सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांक जोरदार तेजी दिखाने में सफल रहे। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.26 प्रतिशत और निफ्टी 0.39 प्रतिशत की तेजी के साथ बंद हुए।

आज के कारोबार में आईटी को छोड़ कर सभी सेक्टोरल इंडेक्स बढ़त के साथ बंद होने में सफल रहे। ऑटोमोबाइल, रियल्टी और फार्मास्यूटिकल सेक्टर के शेयरों में जम कर खरीदारी होती रही। आईटी सेक्टर के शेयरों में बिकवाली का दबाव बना रहा। ब्रॉडर मार्केट में भी आज लगातार खरीदारी होती रही, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.38 प्रतिशत की तेजी के साथ बंद होने में सफल रहा। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 1.06 प्रतिशत की बढ़त के साथ आज के कारोबार का अंत किया।आज बाजार आई तेजी के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में सवा दो लाख करोड़ रुपये से अधिक का इजाफा हो गया। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 382.24 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया।

देशभर में होली के त्योहार पर 50 हजार करोड़ रुपये के कारोबार का अनुमान

नई दिल्ली। कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने पिछले साल के मुकाबले इस वर्ष होली के त्योहारी सीजन में देशभर के व्यापार में करीब 50 फीसदी की वृद्धि का अनुमान जताया है। इससे देशभर में 50 हजार करोड़ से अधिक का व्यापार का अनुमान है। अकेले दिल्ली में ही 5 हजार करोड़ रुपये के व्यापार होने की संभावना है।

कैट के राष्ट्रीय महामंत्री एवं चांदनी चौक लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार प्रवीन खंडेलवाल ने शुक्रवार को कहा कि इस बार होली की त्यौहारी बिक्री में चीन के बने सामान का व्यापारियों एवं ग्राहकों ने पूर्ण बहिष्कार किया है। उन्होंने बताया कि होली से जुड़े सामान का देश में आयात लगभग 10 हजार करोड़ रुपये का होता है, जो इस बार बिल्कुल नगण्य रहा। खंडेलवाल ने कहा कि इस बार केवल भारत में ही निर्मित हर्बल रंग गुलाल, पिचकारी, गुब्बारे, चंदन, पूजा सामग्री, परिधान सहित अन्य सामानों की बिक्री हो रही है। इसके आलावा मिठाइयां, ड्राई फ्रूट, गिफ्ट आइटम्स, फूल एवं फल, कपड़े, फर्निशिंग फैब्रिक, किराना, एफएमसीजी प्रोडक्ट, कंज्यूमर ड्युरेबल्स सहित अन्य अनेकों

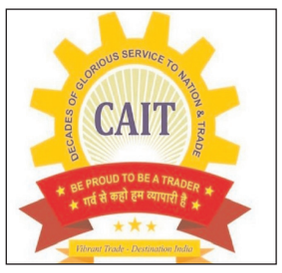

उत्पादों की भी इस बार जबरदस्त मांग बाजारों में दिखाई दे रही है।

खंडेलवाल ने बताया कि इस वर्ष दिल्ली सहित देशभर में बड़े पैमाने पर होली समारोहों का आयोजन हो रहा है, जिसके चलते बैंक्वेट हाल, फार्म हाउस, होटलों, रेस्टोरेंट एवं सार्वजनिक पार्कों में होली समारोहों आयोजनों का तांता लगा हुआ है। उन्होंने कहा कि इस सेक्टर ने दो वर्ष के बाद अच्छा व्यापार के दिन देखे हैं। अकेले दिल्ली में छोटे बड़े मिलाकर 3 हजार से ज्यादा होली मिलन समारोह आयोजित हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि सभी कार्यक्रमों में शामिल लोगों को चेहरों पर एक नई खुशी तथा उत्साह का वातावरण देखने को मिल रहा है।

कैट महामंत्री ने कहा कि होली का पर्व नजदीक आते ही दिल्ली के सभी थोक एवं खुदरा बाजार पूरी तरह सजे हुए हैं। सभी बाजारों में दुकानों पर गुलाल और पिचकारी के साथ होली के अन्य सामानों की खरीदारी के लिए भीड़ लगी है। मिठाई की दुकानों पर खास तौर से होली पर बनने वाली गुझिया आदि की बड़े स्तर पर बिक्री हो रही है।

खंडेलवाल ने कहा कि दिल्ली में 24 मार्च को होलिका दहन होगा, जबकि रंगों का पर्व 25 मार्च को मनाया जाएगा। होली के रंग में बाजार भी रंगे हुए नजर आने लगे हैं। बाजार में रंग बिरंगे गुलाल और पिचकारी के अलावा गुजिया के हार और मेवा से दुकानें सजी हुई है।

खंडेलवाल ने कहा कि बाजार में होली के पहले खरीददारी के लिए लोगों की प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। उन्होंने बताया कि होली पर रिश्तेदारों के यहां हार और मिठाई के साथ में मेवे की माला ले जाने की परंपरा के चलते खरीदारी के लिए लोगों की भीड़ दुकानों पर देखने को मिल रही है। इसके चलते देश के अधिकांश बजारों में चहल-पहल बनी हुई है। केमिकल युक्त गुलाल, रंग की बजाय हर्बल रंग, अबीर और गुलाल की सर्वाधिक मांग बाजारों में है।

उन्होंने कहा कि शनिवार और अगले दिन रविवार को व्यापारियों को रिकॉर्ड तोड़ बिक्री होने का अनुमान है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।